मूंडै बोलै रेतड़ली

सरदारअली परिहार

परिहार प्रकाशन
बीदासर बारी के बाहर
बीकानेर

* प्रकाशक :
परिहार प्रकाशन
बीदासर बारी रै बाहर, बीकानेर

* पैलड़ी छपाई : 1992

* पोथी दीठ · पिचेतर रुपिया

* पूठै री सजावट : विजयकुमार श्रीमाळी

* छापाखानो .
साखला प्रिण्टर्स
सुगन निवास, चन्दन सागर
बीकानेर-334 001

MOONDE BOLE RETARLI (Poetry) by
Sardar Ali Parihar Rs. 75/-

समर्पण:

मावड़ रौ हेत
जड़ा जम्या संस्कार
पिछाण मानखै री

अर
मरम बोली रौ
गीतां री रागळयां

अर
सोरम धरती री
आज तांई लगो-लग पा रह्यौ हूं
उण हेत-हेज री बैनड़ नैं अरपूं
अै ओळघा
अै ढाळा
अै बोल

म्हारी मा स्वरूप बैनड़ रहमत नै
घणै मांन सूं

रहमत रहम मोकळी बरसै, भाई मूंडै हासड़ली।
रूं-रूं मांय बस्यौ वीर रै, हेत बैन रो हीवड़ली।

विगत

म्हारी बात

म्हारै अंतस मै गीत-राग री हूंस हिलोळां लेवण ढूकी, जणै हिंवाळै पहाड़ रै 12 हजार फुट ऊंची घाटचां सूं च्यारूं खूटां झरणा कळ-कळ बहवता देख्या। उण ठौड़ कुदरत रै रूं-रू मै झीणै-झीणै संगीत रौ रंगको जणै लेहरा लेवतो। इसड़ो रूप देख'र मनड़ो गावण खातर मच-मचियां खावण ढूको। जिनै ही निजर जावती हरीटांस भोम फूलां लदोडी घाटचां च्यारूंमेरा खुसबू फैलाय री ही। थोड़ोक ऊंचो जायां झीखा ज्यूं बरफ पड़णी सुरू हुई। रूखा री डाळ्या अर पत्ता धोला-धख दीसण लाग्या, चांदी जैड़ी डूंगरियां देख-देख र मन हरखण लाग्यो। भोम अर आभै रो इसो रूप देख्या जीव ठिकाणै नी रहघो, मूंडै सूं बोल निसरग्या—'इण पहाड़ां रै बीच साथी हस-हस चालो रै, बरफ पड़ी अथाग साथी धीरे चालो रै' आज तो इण ओळी मैं घणी कमी दीसै है पण उण टैम जिका सबद निसरचा हा बांनै ही राख्या है।

डूंगर ही बोलै अैड़ी बात नीं है। थळी री रेत, पूनम री चांदणी रात, साफ-सूथरो आभो, टम-टमावता तारा, इमरत बरसातो चांद, नीचै मखमल जैड़ी रेत रै धोरै पर बैठ र सोनल-रूपल बेकळू नै देखण ढूक्यां मिनख देखतो ही जावै। अेक रात म्हनै भी इण माटी पर पाळो चालण रो मोको मिल्यो। म्हारी आंख्यां इसड़ो रूप देख्यां पछै फोरचां ही नी फिरी, बरसां पैली मन मै बस्योड़ो हिंवाळै रो रूप फीको लखावण लाग्यो। कुदरत रो ओ अखूट रूप देख्यां पछै होठां सूं गीत नीं निकळै, आ किया हुवै। दूधा न्हायी चांदणी मै इयांकलो लाग्यो कै रेत रो कण-कण मूंडै सूं बोलै है। ठाह नी किण घडी मूंडै सूं सबद अर धुन निसरी—

> चांदड़लै री रात चांदणी, तारां छायी रातड़ली।
> धोरलिया रै गांवां बीचां, रळ-मिळ बैठै सायड़ली॥

आ 'रळ-मिळ बैठै सायड़ली' सूं ही जीव मै आयी कै थळी रै लोगां मै जितरो हेत निजर आवै वो अपणै-आप मैं अनूटो है। रैत-हेत री रैलो थळी रै घर-घर मे दीसै है। थळी रै चितरांम पर लिखण री बात हिवड़ै मै हिलोळा लेवण लागी। इमै मनड़ो इण मुजब आगो-पाछो भाजण ढूक्यो। पोथीखाना रा चक्कर लगाया पन जीव नी धाप्यो, बूढै-बडेरां सूं बातां-चीतां की पण मन नीं मान्यो। छैकड़ गांवां मै, खेतां मै अर अवेड़ मैं जा'र रहघा ही मनड़ै नै ठावस आयो। ठौड़-ठौड़ पर जाय'र

ठाह लाग्यो कै थळी रा चितरांम इतरा है कि लिखताईज जावो कोई छेड़ो ही कोनीं। गांव मै जायां पछै किसोक लाग्यो इण री चिन्हिक बातां आपरै सामनै राखूं।

जालोर रै गावां मै अेवाड़ियां सूं ठाह लाग्यो कै भेड़ा मै जणै छूत री बीमारी फैल जावै तो अेक भेड (जिकी रोगली नीं हुवै) रो काळजो छुरी सूं छून'र टुकड़ा नै भेड़ा रै कांना नै छेद र घाल्यां मै रोगलिया नी हुवै। अठै रा लोग कोकड़ी नै घणै चाव सूं चूसै है, दिसावर मै भी साथै राखै है। बम्बई मै आ बात देखण नै मनै मिली है। सेखावाटी छेत्र मै जीवण माता वास्तै कहिजै है कै मां री मिंदर तोड़ण नै फौज आयी तो सहद माख्यां रा छत्ता रा छत्ता उड़ र फौज पर पड़चा जिकै सूं फौज भाज छूटी। बाडमेर जिलै मै तिलवडा गांव मै मलीनाथ जी री किरपा तणा मेळै माथै थोड़ीक खाडो खोदयां मीठो पाणी निसरण ढूकै है। जैसलमेर अर बाड़मेर रै गांवां मै कठै-कठै ही सफेद फूलां रा आक मिळै है। इण रा फूल चमेली जैड़ा धोळा-धख है। गांव रा लोग मानै है कै इण मै सिवजी रो वासो है। सगळो गांव इण री पूजा करै है। मोहा गांव रो धोरो भल-भल गिगना ऊचो है। इण रै ऊपर सूं नीचै उतरता पाण धसक-धसक उतरणो आज भी याद आवै है। जैसलमेर री भोम तो चितरांम री खाण हीज है। जोधाणो, नागाणो अर बीकाणो धीर-बीरा री भोम है। इण री बातां लिखण मै जोधपुर रो पुस्तक प्रकासक, बीकानेर रो राजस्थान अभिलेखागार, नागौर रो पोथीखानो देख्यां ही लिखण रो कांम पूरो होयो है।

काळी-कळायण कागलिया न्हाखती जणै इण भोम पर आवै है तो थळी री माटी रो रूप देखण जोग हुवै है। मोरां री मीठी-मीठी बोली रै बीचां हळियो चालतो देख मनड़ो आपो-आप नाचण ढूकै है। चिन्हा-चिन्हा पानड़ा खेतां में दिखण लागै है जद खेत धणी रात मैं डूंचों बणाय खेत मै ही सोणो सुरू करदै है। डूंचै पर अेक रात हूं भी काटी है। जिकी लाखीणी नींद डूंचै पर आयी बा हूं आज भी नी भूल्यो हूं। दिन निकलघा डूंचै नीचै देख्यो तो सापां रै चालण रा निसाण मंडोड़ा पड़चा हा। काती रै महीणै मै आसै-पासै रै खेतां रा लोग रात मै अेक ठोड़ पर भेळा हो'र धूणी माथै तपता दीसै। थोड़ै-थोड़ै टेम पछै अेक जणो उठ र खेत रो फेरो दे आवै। फेरो देती टेम मूंडै सूं जोर-जोर सूं बोलै 'गोधो-गोधो'। अंधारी रात मै खेत मै कोई जिनावर है तो भाग जावै। आपस मै बैठ्या आमै कानी किरत्यां, हिरण्यां देख'र टेम बतावै। जणै किरत्या आमै रै बीचो-बीच दीसी तो फट बोल्या 12 बजगी है। म्हारी घडी देखी तो 12 ही बजी ही। जीव मै आयो तारां सूं टेम जाणणो कितरो चोखो है। खेत मै भणत बोलणो, खळो काढणो अर धान घरा लावणो अेक दूजै री मदद बिना नी हुवै। भाई-चारै रो रूप गावां मै घणो सातरो है।

थळी रा मिंदर; दरगा जिको जीव नै सुख दीनो है बो म्हारै काळजै री कोर है। आज भी आख मूंद दयामै रमू हूं तो रमतो ही जावूं हूं। गावां रै लोगां

साचो धरम अंगेज्यो है कै बै जीव मारणो तो दूर रहचो रूंख बाढणो भी पाप समझै है। किण मुजब रूंखां री रूखाळी धरम नैं जोड़ किया करता हा आ समझण जोग बात है। धरम-धीर, हेत रा धणी मिनख तो काई जिनावरां सूं इतरो हेत राखै है कै अेवड मै रहवतो-रहवतो भेडां सातर घर-बार, टाबर-टीकर मा-बाप अर लुगाई नैं छोड नै भेडां बीचाळै जा पूगै है। अैं मिनख जिको बांरै धरम रो नी हो वीनै मार दै ? मानखै नैं हाण पूगावै, म्हारै गळै नी उतरै है।

ओळधां वणणी सुरू हुई तो बणती ही गई। च्यार सो अेक छद बण्यां पछै जी मै आई कै जिको लिखियो है वो ठीक है कै नी तो राजस्थानी रा बिद्वान डा. मनोहर शर्मा नैं दिखाया। धीरज रा धणी, घणै चाव सूं छंदा नैं सुण्यां अर पढिया। बांरै मारग दिखावण पाछै ही गाडो की आगै बधियो। इण रै थोड़ैक टेम पछै जोधपुर जावण रो काम पड्यो। अठै जहूरखा जी महर रै आगै छंद राख्या। बा जितरो इण छदा सूं हेत दिखायो भूलावण जोग नी है। मावड भाषा नैं हिवड़ै मै बसावड़ो मोदिलो ज्यूं लिखै त्यूं ही बोलै है अर ज्यूं बोलै त्यूं ही लिखै है। इतिहास रो लिखारो मावड़ भाषा री व्याकरण पर जिकी पकड राखै है उणरो जवाब नी। जहूरखां जी सूं मावड भाषा रो की ज्ञान लेनै गाड़ै नैं आगै खींच्यो। खेलां सूं जुड़ोड़ो जीव जणै कलम सूं जुड़ण ढूक्यो तो अबखो लागणो नुई बात नी ही। इण मोकै पर म्हारै हेताळू महेशस्वरूप भटनागर रै टेम-टेम पर हिम्मत वधावण सू ही काम आगै बध्यो है। आखरा रो भण्डार म्हारी वहवड़ (भंवरी) टेम-टेम पर सहयोग नीं देवती तो काव्य पूरो होवणो घणो अबखो हुवतो। जणै-जणै कलम रुकी तो सबद कोस री ठोड़ मरवण ही कांम पूरो कीनो।

थळी रै अगुणै पासै सेखाणो, आयुणै पासै जेसाणो, धोराऊ पासै बीकाणो अर लकाऊ पासै जोधाणो आवै है। इण छेत्र में आज रा जिला—सीकर, झूंझनू, चूरू, श्रीगंगानगर, जैसलमेर, बाड़मेर, सिरोही, जालोर, पाली, जोधपुर अर नागोर है। अठै रो खाणो-पीणो, ब्यांव-मायरा, तीज-तिवार, मेळा-ठेळा, गीत-राग, होळी-दियाळी, रीत-रिवाज, सयोग-वियोग, धीर-वीर, सिणगार-विरह, पढ़णो-लिखणो, लू-लपटां, काळ-दुकाळ, ठंडी-ठघारी, मेह-छांट, सैट-साहूकार, जात-पात मिंदर-दरगा, धरम-करम, जीव-जिनावर, गैणा-गाभा, मेळ-दमाला आदि रो वरणण इण काव्य मै कीनो है।

पहलड़ै छद मै ही 'साथड़ली-रावड़ली' रै दम नै बीड़ इकड़ो आयो कै इण जाळ मांय सू निसरनो उणरै बस मै नी रहयो। साच बात काळजै रै टूट मांय जा र बैठै है। ऊन क्रिया मै जिकी अपणायत है वा दूजी ठोड़ नीं दिखै है। जिको स्वाद अनहुंति कहवण मै आवै है वो झमका कहवण मै नीं आवै है। पछै भगवान सूं नेड़ो कोई नी है बांनै भी आपां तू कह परा ही पुकारां हां—'हे भगवान तू ही रखवाळो है।'

रा इतरा आखर सोध'र लावणो अबखो लागण ढूक्यो तो नूवें सबदां नैं बणावण रो काम सुरू कीनो तो कलम माठी होगी, टस सूं मस ही नी होवैं। इण अबखै टेम मैं कलम नैं टोरणआळो 'उमरदान ग्रंथावली' आगै आई अर मारग बतावण सारू—रेहड़ली, खेहडली, वेहडली, देहडली, अेहडली, छेहडली, नेहडली, केहड़ली अर मेहड़ली सबदां नैं राख्या। हूं इण महान कवि रो सदा आभारी रहसूं। इण आखरां नैं देख्यां पछै ही हिम्मत बधी कै इण मुजब लिख्यो जा सकै है। छंद रै दोनूं ओळयां रै आखर मैं स्त्रीलिंग रै सबदा नैं कांम लिया है पण दो ठौड़ पर फरक आयो है। गाव सूं गांवडली इण मुजब कीनो कै जयपुर जिलै मैं अेक गांव रो नाम ही गांवड़ी है, हाथ सूं हाथडली इण मुजब कीनो कै हथेली नैं हाथ मान्यो है।

इण पोथी रै बणण मैं म्हारा हेताळू श्री जयचंद जी शर्मा, श्री सांवर दैया, श्री रामनरेशजी सोनी, श्री इब्राहीम खां समेजा, श्री निजाम खां तंवर, श्री मुरारीजी शर्मा, श्री भंवरलाल रतावा, डॉ. घनश्याम देवड़ा, डॉ. शक्तिपूर्णा, श्री लक्ष्मण श्रीमाली, श्रीसागीलाल सागड़िया, श्रीविजय कुमार रै अलावा इण पोथी री लिखाई सू छपाई तांई री जात्रा मै जिकै-जिकै संगी-साथियां री मदद मिळी बा रो ई आभारी हूं।

बीकानेर रै राजस्थान अभिलेखागार, राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी, अर भारतीय विद्या मंदिर शोध प्रतिष्ठान सूं भांत-भांत री पोथ्यां संदर्भ सारू देखण-बाचण खातर मिळी, इण खातर उणारो ही आभारी हूं।

थळी रै चितरांम री खाण इतरी राती-माती है कै इण मांय सूं कितरो ही निकाळो खाली हुवै ही कोनी। बांचणिया नैं म्हारी बात आछी लागी तो इण मुजब फेरू लिखण री मन मैं है। बांचणियां सूं म्हारी अरदास है कि इण काव्य मैं जिकी कम्या रही है बानै बता'र म्हनैं रस्तो दिखाय'र म्हा पर किरपा करोला।

बीदासर बारी के बाहर
बीकानेर

सरदारअली परिहार

लू-लपटां

आंधी चालै आंख्यां फूटै, धुळजा पांणी रेतड़ली ।
बळती चालै खीरा[1] उछळै, बळ-बळ जावै चामड़ली । 1 ।

ऊंचा धोरा[2] रेत उड़ावै, ऊभी सूकी खेजड़ली ।
सिल-लोढो अर लूण-मिरचड़ी, चटणी बांटै मावड़ली । 2 ।

ताल-तलैया पेट दिखावै[3], पांणी दिखै न बूंदड़ली ।
खेळी खाली डांगर देखै, आंसू न्हाखै आंखड़ली । 3 ।

लूवां चाल्यां थूक सूकजा, आंटा खावै जीभड़ली[4] ।
कागलियौ[5] कंठां मै चिपियौ, मूंडै अटको बातड़ली । 4 ।

होठां ऊपर फैफयां[6] आई, बळती चालै लूवड़ली ।
बिन पांणी तिरवाळा[7] आवै, दिन मै देखै रातड़ली । 5 ।

धूळ वतूळा घेरा घालै, आंख्यां फिरगी रातड़ली ।
पून चालती दै सूंसाड़ा[8], सीटयां बाजै रोहिड़ली[9] । 6 ।

जद तावड़ियौ आंख्यां काढै, डांगर देखै मौतड़ली ।
चक्कर खांतौ पड़ै मानखौ, खाय भुंवाळी टाटड़ली[10] । 7 ।

जेठ असाढा जोबन झलकै, मदमस्ती मै लूवड़ली ।
बळती-झळती पून चालियां, चड़का लागै चामड़ली । 8 ।

पगां उभाणौ आजै-भाजै, रूंख दिखै नीं छांवड़ली ।
सूकै होठां फिरै जीभड़ौ, आंख्यां जोवै नाडड़ली[11] । 9 ।

---

1. अगारे 2. रेत के स्तूप 3. खालीपन 4. जीभ 5. काकुल
6. होठों पर परत जमना 7. आंखों के सामने अंधेरा छाना
8. हवा की जोरदार आवाज 9. जंगल 10. टाट 11. छोटा तालाब

तावड़िये मैं गंडक[1] सिसकै, लांबी लटकै जीभड़ली ।
कांन फड़फड़ी देतौ बैठ्यो, मूंडै दीसै दांतड़ली । 10 ।

कागलियां री चूंचां खुलजा, भूपां लुकजा चिड़कड़ली ।
कीड़ा-कीड़ी मरै तावड़ै, बळती बाळू घरतड़ली । 11 ।

लू-लपटां सू पासौ राखण, टावर वड़जा झूपड़ली ।
बूढा-बडेरा मांय दुबकजा[2], बैठै ऊंडी ओरड़ली । 12 ।

जद साफलियो घरां भूलजा, तपै तावड़ौ धाकड़ली ।
कंनपटियां पर दे झपटारा, बळती-झळती लूवड़ली । 13 ।

बिछू-कांटा मरता दीसै बिल मैं बड़जा सांपणली ।
तीतर-हीरण दिखै सिसकता, जेठ आसाढा रोहिड़ली । 14 ।

दोफारां मे सूरज तापै, दिखै पसीनौ खाखड़ली[3] ।
रंग-रूप स्सैं लियौ तावड़ौ, काळी पड़गी चामड़ली । 15 ।

भरी दुपारी ऊजड़[4] चालै. खाली होजा दीवड़ली[5] ।
गेलौ[6] भूल्यौ भटका खावै, छांव दिखै नीं खेजड़ली । 16 ।

माथै ऊपर तपै तावड़ौ, नीचै तापै घरतड़ली ।
लू-लपटां मैं करै कांमडौ, ऊभौ बीचां रोहिड़ली । 17 ।

लूंग ऊंटियां खाय खुटोयौ, अेवड़ चरग्यौ पानड़ली[7] ।
सूकै कांटा रही झाड़क्यां, उजड़ो दीसै टीबड़ली[8] । 18 ।

फूल-पांखड़ी बळी पड़ी है, धाकड़ चाल्यां लूवड़ली ।
रूंख-बांठका[9] सूका दीसै, ऊभा ऊंची टीबड़ली । 19 ।

पांन आकड़ा पीळा पड़ग्या, लूवां चाल्यां घरतड़ली ।
हरिया-हरिया कैर दिखै है, पीजू पाक्या धाकड़ली । 20 ।

---

1. कुत्ता 2. अन्दर बैठना 3. बगल 4. बगैर रास्ते के 5. केतली
6. रास्ता 7. पत्ते 8. बाळू रेत का छोटा स्तूप 9. झाडियां

लूवां चाल्यां बळै पगथळ्यां, सूत्यौ ऊपर मांचड़ली ।
पांणी छिड़क्यां जी-सोरौ है, लेतौ दीसै नींदड़ली । 21 ।

चकर खाता उठै भतूळा, भूतां लांबी चोटड़ली ।
ऊंचो ऊभी दिसै गगन मैं, धोळी धुंधली जेवड़ली । 22 ।

करड़ा[1]-करड़ा कोस[2] भाइड़ा, गांव आंतरा[3] रेतड़ली ।
बळती बाळू लूवां चाल्यां, अवखी[4] लागै डांडड़ली[5] । 23 ।

लूवां-धूवां लो ऊठै है, रूं-रूं बाळै चामड़ली ।
सांस आंख मैं अटकी दीसै, वात करै है मौतड़ली । 24 ।

जगतौ गोळौ सूरज निकळ्यौ, लाय पलीता आगड़ली ।
डाकण लूवां जीव गटकलै, तपता तावड़ टीबड़ली । 25 ।

हाथ आंगळ्यां बळतां झलतां, रातो[6] दीसै नाकड़ली ।
धीमो-धीमो आंच देवती, खून चूसलै लूवड़ली । 26 ।

तळौ तळावां फाट्यौ दीसै, दिखै पापड़्यां धरतड़ली ।
तप्यां तावड़ो लूवां चालै, भोम उधड़जा चामड़ली । 27 ।

बळतो रेतां चिणा भूंजिजै, भटयारण री चूलड़ली ।
अकरी आंचां लूवां भूंजै, मिनख-डांगरा गांवड़ली । 28 ।

आक खावतौ मिरगौ भटकै, बळती बाळू धरतड़ली ।
लूवां पीवा[7] मूंडौ खोल्यौ, भखतौ[8] दीसै पूनड़ली । 29 ।

हिरण वाखोट[9] दिखै भुळसता, लूवां चाल्यां धाकड़ली ।
नाड़[10] न्हाखियां हिरणी ऊभी, आंसू बहवै धारड़ली । 30 ।

बिन पांणी बिन छांवड़ली रै, हिरणी देखै मौतड़ली ।
बाखोटां री दै भोळावण, जीव छोड़ द्यौ मावड़ली । 31 ।

---

1. कठिन 2. मील 3. दूर 4. अनखनी 5. पगडंडी 6. लाल
7. पीने के लिए 8. खाना 9. हिरण के बच्चे 10. गर्दन

काळो मिरगो घणो चमकणो, भूल्यो भरणी चोकड़ली ।
हियो न्हाखियां[1] पड़घो दिखे है, कैर आक री ओटड़ली । 32 ।

लूवां झाड़ा इसड़ा दीना, जीव भूलग्यो रोहिड़ली ।
जोड़ा[2] पाळा हिरण ऊभिया, भूल्यां बिसरचा गांवड़ली । 33 ।

जेठ असाढा तीसो मरगो, आजै-भाजै रेतड़ली ।
सूखै तालां पांणी चिलकै, पूग देखलै मौतड़ली । 34 ।

कादो-कीचड़ वीछू कांटा, पड़चा दिखै है कूंडड़ली ।
गमछै मांया आंणै-छांणै, भरतो दीसै दीवड़ली । 35 ।

गदलीज्योड़ो पांणी दीसै, लथ-पथ कादो नाडड़ली ।
कीचा मैं ओढणियो न्हाख्यो, भरे नीचोय मटकड़ली । 36 ।

होळी-दियाळी न्हावै-धोवै, पाणो भेळो कूंडड़ली ।
जीव-जिनावर पीता दोसै, ऊभा घर री बाखळड़ी[3] । 37 ।

गांव-गोठ सूं आय बटावू[4], पांणी मांगै लोटड़ली ।
दूध-दही तो दिखै मोकळो, खाली दीसै मटकड़ली । 38 ।

आंधी चाल्यां रेत उडै है, धोरा बदळै डांडड़ली ।
ऊंचा चढ़ता दिखै धोरिया, लांघ[5] घरां री भीतड़ली । 39 ।

जेठ आसाढा मिरगो[6] चालै, बरसै रातूं रेतड़ली ।
सूरज ऊग्यां झाड़ै झड़कै, धूळ भरोड़ी गूदड़ली । 40 ।

काळी-पीळी आंधी आवै, चालै दिन अर रातड़ली ।
तेरह दिन तक दिखै चालती, देती झपटा पूनड़ली । 41 ।

ऊभी कांमण पांणी छिड़कै, गांवां चाल्यां आंधड़ली ।
मांचै ओटै[7] चूलै बैठी, दीखै सेकती रोटड़ली । 42 ।

---

1. निराश 2. तालाव 3. घर और फलसे के बीच का स्थान
4. राहगीर 5. पार करना 6. तेज आंधी का लगातार चलना 7. ओट

पाटचां[1] पाड़ै मैण लगावै, मींढचां चेपै कांमणली ।
बारै दिनां रै आंतरा[2] सूं, दीखै न्हावती गोरड़ली । 43 ।

दस कोसां सूं गांव आवतां, आंख्या देखै खेजड़ली ।
पांणी लूणी पूग्यां पीवै, बैठ्यौ घर री झूपड़ली । 44 ।

मनड़ौ-तनड़ौ बुझ्यौ पड़चौ है, खाय फदीड़ा[3] लूवड़ली ।
काम-काज मैं मन नीं लागै, बैठ उडीकै[4] रातड़ली । 45 ।

कचै टापरां[5] मोख्यां[6] राखै, घर-घर भींतां गांवड़ली ।
दोफारा मैं सूता दीसै, बचता बळती पूनड़ली । 46 ।

बळती भूंजै भखै तावड़ौ, जीव-जीनावर रेतड़ली ।
सूरज लूवां राज देखियां, छांवां ढूंढै छांवड़ली । 47 ।

गावड़वयां रौ दूध सूकग्यौ, सिसकै ऊभी भैंसड़ली ।
लूवां बाथां भरी खड़ी है, भींच दिखावै मौतड़ली । 48 ।

नागी लूवां दिखै नाचती, ऊंचै धोरां टीबड़ली ।
वेरचां[7] सूनी देख गोरड़ी, ऊभी फोड़ै मटकड़ली । 49 ।

ऊभी किरणां आंख्यां काढै, बळती चालै पूनड़ली ।
सोनलियै हिरणां रौ रंगड़ौ, बिदरंग कर द्यौ लूवड़ली । 50 ।

जे टावरिया भूल्या-भटक्या, दूर निकळजा गांवड़ली ।
बावल मावड़ सोधण[8] चाल्या, मिलियां देखै ल्हासड़ली । 51 ।

धोरलियै लहरां मैं फंसियौ, गांवां भूल्यौ डांडड़ली ।
खाली लोटौ होठां लागी, आती दीसै मौतड़ली । 52 ।

बिन पांणी रै मरचौ पड़चौ है, धोरलियां री धरत्तड़ली ।
रेतड़ली नैं ओढचां सूत्यौ, लांबी लेतौ नीदड़ली । 53 ।

---

1. केशों को चिपकाना 2. अन्तराल 3. झापट
4. इन्तजार करना 5. मकान 6. छेद
7. तालाब के तले में गहरी दरारें 8. ढूंढने

काळ-दुकाळ

ऊनाळौ-सीयाळौ मिलकर, दिखै तोड़ता दांतड़ली।
चोमासौ ऊभौ तरसावै, धोरा धरती रीतड़ली। 54।

आधी रातां काग करूकै[1], अदरां[2] चाळै पूनड़ली।
डाकी काळ आवतौ दीसै, सुणलै भाया बातड़ली। 55।

गांव गंडकड़ा रातू कूकै, गादड़[3] कूकै रोहिड़ली।
घरां-घरां में बातां चालै, काळां मरसी गावड़ली। 56।

कुरज कुरळाय उड़कर जावै, मुड़ नीं आवै नाडड़ली।
मेह गयौ घरां आपरै सुण, काळ पड़ेलौ धाकड़ली। 57।

दाणा पाणी आंख दिखै नीं, नीं ऊगै है घासड़ली।
त्रिकाळ[4] आय मिनख नै मारै, डागर देखै मौतड़ली। 58।

काळ गांव मे पड़ै मोकळा, तीजै कुरियौ[5] धरतड़ली।
बरस आठवै आय आघोरी[6], जीमै बैठयौ ल्हासड़ली। 59।

बारै बरसां काळ पड़्यां सू, रिणी उजड़गी गांवड़ली।
जमुना बीचां मरबा चाल्या, नदियां थमगी धारड़ली। 60।

सइयां-भइयां काळ पड़्यां सूं, दिखै फाटती आंखड़ली।
भूखौ मिनख मिनख नैं खावै, दांतां चावै हाडड़ली। 61।

सेजड़लै रा छोडा छांग्या, पांणी सीजै हांडड़ली।
घास-पात सगळा नै चाब्या, भूखा मरती गोरड़ली। 62।

---

1. बोलना 2. नक्षत्र 3. सियार 4. धान, पाणी और घास तीनों के अभाव वाला अकाल 5. आधा अकाल 6. अधिक खाने वाला

मूंडे लाळां पड़ती दीसै, आंसू नाखै गावड़ली।
तावड़ियै मैं भटका खाती, जीव छोड दै भैंसड़ली। 63।

भूखो तीसो धूळ भरोड़ो, कांम करै दिन रातड़ली।
टाबरिया नै घरां छोड़ द्या, रोतां डुसका हिचकड़ली। 64।

टाबरिया गरळावै[1] भूखा, मांस चाटलै आंतड़ली।
रोतां-रोतां हिचक्यां बंधगी, आंसू सूक्या आंखड़ली। 65।

गोद्यां मैं टाबरिया बिलखै, मावड़ बिलखै रोटड़ली।
बाबल गुम-सुम[2] बण ऊभो है, ना निसरै है बोलड़ली। 66।

फाटी कुड़ती हाथ कटोरो, लीरम-लीरा[3] चूंदड़ली।
सुध-बुध भूली घर-घर मांगै, हाथ फैलाय मरवणली। 67।

पेट भूख है लूवां चालै, आंख्यां फिरगी रातड़ली।
तनड़ो सूक्यो मनड़ो बुझियो, हाड्यां चिपगी चामड़ली। 68।

कुटम-कबीलो मूंडो मोड़ै, भगदड़ मचजा गांवड़ली।
पकड़ काळजो सांसर[4] ऊभा, हेला देवै मौतड़ली। 69।

भूखां मरता आजै भाजै, टकरां खावै भीतड़ली।
तिरवाळा आंख्यां मैं आवै चक्कर खावै साथड़ली। 70।

घर मैं सूत्या टाबर छोड्या, रात बिरातां गोरड़ली।
भूखां मरती कांकड़[5] छोडै, बाबल साथै मावड़ली। 71।

आंण-बांण नै छोड्यां छिटक्यां, मंगतो मांगै रोटड़ली।
भूखां मरतो दिनड़ो काटै, रोवै आखी रातड़ली। 72।

हाथ पगां सूं दिखै अडोळी[6], काजळ सूनी आंखड़ली।
आंसूड़ा रा बाळा बहवै, डुसकै रोवै कांमणली। 73।

---

1. हृदय विदारक रोना 2. चुप-चाप 3. तार-तार 4. जानवर
5. गांव की अन्तिम सीमा 6. शृंगार-आभूषण विहीन

घर धणियाणन[1] घर नैं छोड्यो, मंगती बणगी गोरड़ली ।
गळी-गळी मैं फिरै मांगती, लिलड्यां[2] गाती कांमणली । 74 ।

जद टाबरिया रोटी मांगै, जांमण सोधै हांडड़ली ।
खाली ठीकर देख घरा मैं, छाती कूटै मावड़ली । 75 ।

रोही डाकण बण बैठी है, दिखै गटकती घासड़ली ।
ठूंठौ[3] बण खेजड़लो ऊभौ, छांव दिखै नीं धरतड़ली । 76 ।

पग-पग ठोकर खातौ भटकै, भूखौ तीसौ टीबड़ली ।
होळै-होळै नेड़ी आती, जीव देखलै मौतड़ली । 77 ।

काळ पड़्यां सूं राम निकळजा, निसरै सुरली[4] मरवणली ।
टाबरियां नैं दिखै बेचती, दो रिपियां मैं मावड़ली । 78 ।

ल्हासां इखरी-बिखरी दीसै, मौजां गीधां कागड़ली[5] ।
दिन दोफारां काळी रातां, कूकै कुत्ता-कुत्तड़ली । 79 ।

मरता टाबर आंख्यां देखै, गांव-गांव मैं मावड़ली ।
मौतड़ली रौ नाच हुवै है, घर-घर गूंजै चीखड़ली । 80 ।

दांणौ-पांणी रसै कीं खूट्यौ[6], खाली घर मैं हांडड़ली[7] ।
भूखौ-तीसौ मरै मानखौ, पड़्यां काळ री छांवड़ली । 81 ।

काळ थपेड़ा[8] इसड़ा[9] दीना, सांसण[10] बणगी मरवणली ।
सोनल-रूपल बणी डोकरी, भूखां मरती गोरड़ली । 82 ।

छपनी काळ काळां रौ राजा, आंतां फाटी धरतड़ली ।
करलाटो गांवां मैं फूट्यो, नागी नाचै मौतड़ली । 83 ।

बिरमो राकस दिखै आवतो, धूळ भतूळा आंधड़ली ।
खोल जवाड़ा गिटतो दीसै, जीव-जिनावर खेजड़ली । 84 ।

---

1. घर की मालकिन 2. करुणामय 3. वह पेड़ जिसकी पत्तियां व डालियां काटी हुई हों 4. अबल 5. कौवे 6. समाप्त 7. हांडी 8. झटके 9. ऐसा 10. भिखारिन (जाति विशेष भी)

पेट आंतड़चां पींदै बैठी, सामै दीसै हाडड़ली।
पांख-पंखेरू मरचा डांगरा, सूनी दीसै झूपड़ली। 85।

सूकी हाडचां दिखै पींजरौ, खाडा धसगी आंखड़ली।
गेला-गूंगा बणिया दीसै, मिनख डांगरा गांवड़ली। 86।

काळ धाड़वो दिखै लूटतौ, लोही मांस चामड़ली।
सूकी हाडचां दिखै बेचतौ, सूनी गळियां गांवड़ली। 87।

काळ खूनड़ौ पीतौ दीसै, धोळी पड़गी गोरड़ली।
हाडचां भारी उखण्यां चाली, समसांणा नै डोकरड़ी। 88।

मुड़दा बिखरचा च्यारूं कूंटां, रूळै भोडका रेतड़ली।
इखरी-बिखरी पड़ी हाडक्यां, जीव जिनावर रोहिड़ली। 89।

काळ फंफेड़ै मिनख-डांगरा, ऊभौ डाकी टीबड़ली।
राकस घांटो दिखै मोसतौ, गबरू टाबर डोकरड़ी। 90।

ल्हासां सड़ती पड़ी गांव मैं, भभका मारै पूनड़ली।
आंख्यां नासां फाटी दीसै, मूंडै दीसै दांतड़ली। 91।

काळ-दुकाळ अकलड़ी काढै, समझ रहो नी होवड़ली।
रात अंधारी चोरी करता, पीडी झालै कुत्तड़ली। 92।

सोनौ चांदी रह्यौ गांव मैं, भूखौ लीनी मौतड़ली[1]।
बरतन भांड़ा घर मैं रह्ग्या, जेबां रह्गी रोकड़ली। 93।

काळ पड़चां सूं छीयां पड़गी, मूंडै चिगदा कांमणली।
आंख्यां गीड़ां भरी दिखै है, घर-घर टाबर-टींगरली। 94।

काळ पड़चां सूं दूध सूकग्यौ, सूनी दीसै छातड़ली।
टाबर नै बिलमावण खातिर, हांचळ देवै मावड़ली। 95।

---

1. छपने के अकाळ में लोगों के घरों में सोना चांदी एवं जेबों में रुपये होते हुए भी उन्हें धान नहीं मिला था।

भूखां मरता पेट चिप्यो है, कमर लागग्यो कांमणली ।
कंठ बैठोड़ी मूंडे निसरै, फुस-फुस करती बातड़ली । 96 ।

बिन गाभा रै दिखै बापड़ा, टाबर-टिक्कर डोकरड़ी ।
दिनड़ो भूखां मरता काटै, डांफी गटकै रातड़ली । 97 ।

काळ आवतो कड़ तोड़ै है, गबरू डोकर गोरड़ली ।
कमर झुकोड़ी गोड़ां लागी, हिलती दीसै टांगड़ली । 98 ।

काळ रोगड़ो इसड़ो लाग्यो, झाल्यां बैठो मांचड़ली ।
घीस्यां घाल्यां दिखै धसकतो, चांचां पड़गी चामड़ली । 99 ।

तनड़ो दिवलो बुझतो दीसै, सांस अटकगी आंखड़ली ।
मांचै सूती मौत उडिकै, पल-पल गिणतो डोकरड़ो ।100।

बांडो काळ बीकांणै आय, ब्यांव रचावै रेतड़ली ।
जोधांणै में धाकड़ नाच्यो, देखी मिनखां मौतड़ली ।101।

बळती रमतां धाकड़ घालै, काळ पड़चां सूं घरतड़ली ।
छोटै-छोटै टाबरियां रो, करै सिरावण लूवड़ली ।102।

काळ पड़चां सूं डांफी डाकण, धमचक घालै रातड़ली ।
भूखै पेटां, बिन गाभां रै, मौत देखलै साथड़ली ।103।

मालवै नै दीसै जावती, भूख मिटावण गोरड़ली ।
डरूं-फरूं मावड़ली देखै, जद छूटै है गांवड़ली ।104।

कांमण सूती सुपनो देखै, हरी-भरी है खेतड़ली ।
आंख खुल्यां सूं रोती दीखै, डुसका खाती मरवणली ।105।

दूर-दिसावर चाल्यो भाई, पूरां लादी गाडड़ली ।
तनड़ो-मनड़ो दोनूं बेच्या, साथै लायो सांसड़ली ।106।

घरां दाणियो अेक दिखै नीं, ठाकर देवै धमकड़ली ।
ऊंट डांगरा ठांणा खोलै, रोती दीसै गोरड़ली ।107।

करसौ संचै जुलमी लेवै, काळां काळी रातड़ली ।
खेत मजूरी करै बापड़ौ[1], लुच्चा लेलै पूंजड़ली ।।108।

तीन रूप काळ रा देख्या, पांणी धान घासड़ली ।
चोथौ काळ साच रौ देख्यौ, ठगां बणी है मौजड़ली ।।109।

च्यारूंमेरां दिखै लूटता, वण सचवादा[2] गांवड़ली ।
मिनख मारता हया-दया[3] नीं, घर-घर देखैं साथड़ली ।।110।

चौड़ै धाड़ै रिपिया जीमैं, काळ पड़यां सूं धरतड़ली ।
बीच-बिचोला मूंठ्यां भर लै, गिरज-कागला गोठड़ली ।।111।

चोर-उच्चका लुच्चा-लफंगा, लूंटै कांमण लाजड़ली ।
लूट-पाट नै सहती-सहती, छेकड़ लेवै मौतड़ली ।।112।

भोळा-ढाळा नै बिलमावै, डाकण कहती बातड़ली ।
मौकौ देख्यां झट गटकावै, मिनखा थांरी रोकड़ली ।।113।

मरियोड़ा नै फेरूं मारै, काळां उलटी रीतड़ली ।
लूंठां[4] आगै बणै बापड़ौ, दाब्यां टांग्यां पूंछड़ली ।।114।

राज-काज रौ ध्यान मोकळौ, सूंप दिखावै[5] रोकड़ली ।
रिपियौ घिस-घिस पैसौ बणग्यौ, बो भी दूजी जेबड़ली ।।115।

धरती थारी थूं धरती री, सुणलै भाया बातड़ली ।
मावड़ दूधां लाज राखदी, हंसती लेली मौतड़ली ।।116।

राज-काज हाथ मैं थारै, क्यों बिलखै है मावड़ली ।
चेत्यां जीव जीवसी भाई, फेर हियै मैं कांगसड़ी[6] ।।117।

हीयै पाट नै खोल साथिड़ा, धरमा राखी बातड़ली ।
किरकै[7] साथै जीव जीवड़ा, पाप मेटदै धरतड़ली ।।118।

---

1. बेचारा 2. सच्चाई के देवता 3. थोड़ी भी दया नही
4. बलशाली 5. देना 6. कंघा 7. मनोबल, हिम्मत

ठंडी-ठ्यारी

सियाळै मैं सी पड़ै भाई, सूनी होजा नाकड़ली।
डांफर[1] चालै दांत बाजै, दोनूं धूजै टांगड़ली।।119।

हाथ पगां मैं ठयारी लागै, ब्याई फाटै अेडड़ली।
तेल लगावै, चोपा देवै, लीरचां बांधै मावड़ली।।120।

भूपड़ली तींणा सूं आवै, ठंडी तीखो पूनड़ली।
गोडा बोचां माथौ लीनौ, खांचै-तांणै कामळड़ी[2]।।121।

राम नाम नै जपतौ-जपतौ, धोवै मूंडौ हाथड़ली।
भजन गावतौ करै कांमड़ी, कड़-कड़ वाजै दांतड़ली।।122।

आधी रातां आंख्यां खुलजा, चढै धूजणी[3] बहूवड़ली[4]।
घटी घमड़का देती-देती, आखी काटै रातड़ली।।123।

रूंख-बांठका[5] स्सै मुरझाया, डांफर चाल्यां रातड़ली।
घड़िया-माटा पाणी जमग्यौ, पाळौ[6] पड़तां गावड़ली।।124।

धंवर[7] पड़्‌चां सूं हुवै अंधारौ, दिन मैं दीसै रातड़ली।
सी-सी करतौ तपै वासती, बैठचौ आगै चूलड़ली।।125।

फाटचा जूना[8] गाभा लीना, बैठी सीवै[9] गूदडली।
ठयारी आयां दिखै ओढता, घर-घर टावर टीगरलो।।126।

डांफर चालै मेहो बरसै, टूटचां[10] पड़जा आंगळड़ी।
कांम-काजड़ौ छोड़चा बैठी, खीरा तापै गोरड़ली।।127।

---

1. शीत लहर 2. कम्बल 3. कंपकंपी 4. बहू 5. कैर आदि काटेंदार झाड़ियां 6. बरफ जमना 7. कोहरा 8. पुराने 9. सिलाई करना 10. हाथों की उंगलियों में पड़नेवाला मोड़

पूर-पलां[1] री कमी दिखै है, सीयां मरजा सायड़ली ।
तारा गिणती रात काढलै, पलकां थाम्यां आंखड़ली ।।128।

कमर झुकोड़ी डोकर[2] बैठी, ओटी लीयां भींतड़ली[3] ।
तावड़ियै[4] मैं बैठी-बैठी, करै पाधरी[5] टांगड़ली ।।129।

रूं-रूं खड़यो दीसै चामड़ी, डांफर चाल्यां गांवड़ली ।
काळजियै मैं सी वड़ जावै, दिखै धूजती कामणली ।।130।

पोह[6] खालड़ी[7] खोह कहीजै, मेहो न्हाख्यां छांटड़ली ।
ठाली-भूली[8] ठ्यारी आई, मूंडै बोलै डोकरडी ।।131।

ठंडो-ठंडो पांणी पीयां, रीळां[9] चालै दांतड़ली ।
नीला-नीला होट दिखै है, घर-घर गांवां गोरडली ।।132।

टाबरियां नै ठ्यारी लाग्यां, घासी देवै मावड़ली ।
रातूं टाबर ईणकै-रिणकै, सूता जामण गोदडली ।।133।

ठ्यारी खायां नाक झरै है, टप-टप टपकै बूंदड़ली ।
मार रगड़का ओंछै-पोंछै, राती दीसै नाकड़ली ।।134।

दिन निकळचां सूं तपै बासती, कांमण बैठी चूलड़ली ।
उठ-उठ घर रौ कांम करै है, ओढ्यां माथै कामळड़ी ।।135।

रोही रूंखां हियो नाखग्यो, डांफर चाल्यां धाकड़ली ।
खींप, फोगली, कैर, आकड़ौ, पीळी होजा खेजड़ली ।।136।

धोराऊ[10] सूं लपका करती, डांफर आवै रातड़ली ।
गांव घरां मैं धमचक घालै, बड़ती छेत्यां झूंपड़ली ।।137।

गोरौ मूंडौ लालबंब है, छींकां खावै गोरड़ली ।
डांफर चीरै मनड़ौ-तनड़ौ, तरवारां री धारड़ली ।।138।

---

1. कपड़े 2. बुढ़िया 3. दीवार 4. धूप 5. सीधी 6. दिसम्बर माह
7. चमड़ी को जलानेवाला 8. सबसे बुरी 9. चीस 10. उत्तर दिशा

डांफर फदीड़ इसड़ा दीनां, गालां कांनां नाकड़ली ।
सूनी होयी फिरै भाइड़ी, वाळू घोरा घरतड़ली ।139।

पोह माह् मैं जोवन भरियौ, राफड़[1] घालै धाकड़ली ।
डांफी डाकण बैठी जीमैं, टाबरियां री ल्हासड़ली ।140।

वोदै[2] रूंखां वै.र[3] घणो है, डांफर तीखी पूनड़ली ।
बाळ-बाळ कर राख करै है, जड़ां मूळ सूं खेजड़ली ।141।

मांझल[4] रातां ठ्यारी आवै, पोह माह् मैं गांवड़ली ।
हळवा-हळवा बैठ काळजे, डांफर देवै मौतड़ली ।142।

घीव जम्योड़ौ भाटौ[5] वणग्यौ, पिघळै ताप्यां[6] आगड़ली ।
वरफ जम्योड़ी दिखै गांव मैं, धोळी धक है चांदड़ली ।143।

ठ्यारी ठरका करती आवै, पड़तां पांणी छांटड़ली ।
सूंसाड़ा सूं डांफर चाल्यां, मरजा डांगर डोकड़ली ।144।

सकराता मैं डांकी थारौ, जोवन दीसै धाकड़ली ।
हाडक्यां नै दीसै गाळती, वड़ती छेत्यां भूपड़ली ।145।

डरता-डरता दिखै रूंखड़ा, डांफी गाडचां[7] आंखड़ली ।
रस-कस डाकण दिखै चूसती, डाळ-डाळ अर पांखड़ली ।146।

रिंधरोही गादड़िया कूकै, गांवां कूकै कुत्तड़ली ।
जणै रात मैं दावौ[8] पड़जा, हिरणां खिरजा पूंछड़ली ।147।

तावड़ियै री बाटां जोवै, किरणां ढवजा[9] बादळड़ी[10] ।
झिर-मिर झिर-मिर मेहौ बरसै, मूंडै बाजै दांतड़ली ।148।

अळका-सळका मो'रां[11] चालै, डांफर चाल्यां गांवड़ली ।
चिलम तंबाकू पीता-पीता, बैठचा काटै रातड़ली ।149।

---

1. धमचक 2. पुराना 3. दुश्मनी 4. आधी 5. पत्थर 6. तपाने से
7. गाड़ना 8. पाला पड़ना 9. छिप जाना 10. बदली 11. पीठ

हाथ-पगलिया सूना होजा, चढयां धूजणी[1] डोकड़ली ।
गोड़ा भेळा करियां बैठी, हाथां दाब्यां छातड़ली ।।150।

हाथ टांगड़ी करै कीरतन, डांफर चाल्यां गांवड़ली ।
आगो-पाछो करै कांमड़ी, नेड़ी राखै चूलड़ली ।151।

ठंडी पून काळजियो वींधै, मांचो ढाळयो झूपड़ली ।
सिरख-पथरना बीचां सूत्यो, ढकियां मूंडो नाकड़ली ।।152।

नाक ढक्यां सूं ठ्यारी आधी, ऊली[2] लागै सांसड़ली[3] ।
कांना माथै गमछो बांध्यां, चालै बीचां रोहिड़ली ।।153।

घरां-घरां सूं भेळा होजा, हुवै हथायां चौतरड़ी[4] ।
रळ-मिळ बैठ्या धूंणी तापै, जगै बीच मे आगड़ली ।154।

भरै सियाळै दिनड़ा छोटा, लाम्बी होजा रातड़ली ।
माचलियै पसवाड़ा फोरै, खोलै-मींचै आंखड़ली ।155।

पोह माह मे खेह[5] छायजा, जोरां चाल्यां आंधड़ली ।
तावड़ियै मे ताप दिखै नी, ठंडी चालै पूनड़ली ।।156।

ठ्यारी लाग्यां ताव तपां सूं, बळतां-झळतां चामड़ली ।
ओढ रजाई घर मे सूत्यो, लै ऊकाळी बाटकड़ी[6] ।157।

मूंडे सांस छोडता दीसै, भाप उडै है धाकड़ली ।
टाबरिया नै रम्मत लाधजा, मूंडै हाका हाकड़ली ।158।

आंख तावड़ो सूरज दिखै न, बादळ नाखै छांटड़ली ।
टाबर-टीकर सी-सी करता, मांगै झुगलो टोपड़ली[7] ।159।

च्यारूंमेरां टाबर बैठ्या, तपै बासती[8] चूलड़ली ।
ताती-ताती[9] रोट्यां सेकै, बैठ रसोई मावड़ली ।160।

---

1. कंपकंपी 2. गर्म 3. सास 4. चौकी 5. खेह 6. कटोरी
7. टोपी 8. आग 9. गर्म-गर्म

तावड़ियै मैं रमता दीसै, घर-घर टाबर टींगरली।
सियाळै री सिंझ्या पड़्यां सूं, वदता दीसै झूंपड़ली ।161।

घर-घर धूजै है टाबरिया, चिपजा जामण छातड़ली।
जूना गूदड़ा[1] लिरयां लटकै, अपर्ट-दपटे मावड़ली[2] ।162।

डांफर चाल्यां डफाचूक[3] है, मिनख-लुगाई गांवड़ली।
फिरणो टुरणो[4] रसैं की भूल्या, ओढ़यां बैठ्या कामळड़ी ।163।

डेडरिया डरडाता फिरता, चोमासै री रातड़ली।
ठ्यारी कट्क्या[5] ली समाधी, सूनी दीसै नाडड़ली ।164।

चांदी मेख्यां दिख़ै रोपती, डांफर चाल्यां रातड़ली।
ओस पडी पथरीजै[6] भाई, मोती बिखरया धरतड़ली ।165।

वीर चढघोड़ी डाकण भाजै, धमचक करती टीवड़ली।
डांफी वख[7] मैं जीव आवतां, पटक दिखावै मौतड़ली ।166।

फागणिया सी चोगणिया है, जोरां चाल्यां पूनड़ली।
घर-घर साथी दिखै धूजता, सी-सी करता गांवड़ली ।167।

रात-विरातां भूल्यी-भटक्यी, रहजा भाई रोहिड़ली।
भरै सियाळै वाळू ठंडी, भीच्यां बैठ्यी दांतड़ली ।168।

लीरम-लीरा ओढ गूदड़ी, डोकर फिरलै टीबड़ली।
खांच-तांण हिवड़ै लिपटावै, घर-घर करती बातड़ली ।169।

हाडां चुभती सूळां लागै, डांफर चाल्यां रेतड़ली।
बिन तावडियै दबै न डांफी, वाळू धोरा धरतड़ली ।170।

डांफर चाल्यां पथरीजै है, ताल तलाई नाडड़ली।
बरफ जमोड़ी घर-घर दीसै, टाबर कड़कै दांतड़ली ।171।

---

1. पुराने कपड़े 2. मां 3. विवेकहीन 4. चलना-फिरना 5. जोरदार ठंड का आना 6. बरफ बन जाना 7. दांव पेच में आना।

होळी

होळी माथै सुगन मनावै, स्सै री देखै आंखड़ली[1]।
झाळां लपटां सीधी जायां, धान भरेली धरतड़ली ।172।

फागण महिणै गिंदड़ घालै, ढोल बाजता धाकड़ली।
हाथ डांडिया लड़ता दीसै, मधरी लागै तानड़ली ।173।

गवरू रळ-मिळ गावै धमाळां, मीठी वाजै चंगड़ली।
फागण महिणै गीत सुहावै, रस भीजी है कांमणली ।174।

भांत-भांत रा सांग रचाया, नाचै कूदै धाकड़ली।
मरवण ऊभी ढोलो निरखै, पलकां थाम्या आंखड़ली ।176।

सांझ पड्यां सूं भेळा होजा, चंग बजावै हाथड़ली।
मधरा-मधरा गाता दीसै, ऊंना ऊपर टीबड़ली ।175।

चंगां माथै गीत गावता, गवरू करदै बातड़ली।
गजबण हेलो सैनी लखलै, बैठ ऊंडिके नैनड़ली ।177।

छाळोड़ी नै छैल छबीला, रंग उछाळै हाथड़ली।
ऊंच नीच नै भूल्यो विसर्यो, मधरो गावै गीतड़ली ।178।

घरां-घरां सूं टुरग्या गैरिया, घूमै टूलां गांवड़ली।
होळी रंग में दिसै रंगीज्या, गवरू टाबर गोरड़ली ।179।

दूर गांव सूं आय सादिड़ा, नाच दिखावै धाकड़ली।
मूंडो नाक घुंघटियै ढकियां, देखै अकल आंखड़ली ।180।

---

1. होलिका मंगलाते समय गांव के लोग आग की लपटों की तरफ को देखते हैं, यदि वह सीधी है तो सभी तरह अच्छा होगा।

गांव लुगायां भेळी होजा, ऊभ्यां दीसै छातड़ली।
मोकौ देख्यां रंग रेड़दै, हंसती-हंसती कांमणली।181।

भर पिचकारी देवर मारी, भीजी चोळी भावजड़ी।
हरख-किलोळां करती-करती, होळी खैलै गोरड़ली।182।

देवरियौ मोकै नै सोधै, भावज लुकजा ओरड़ली।
जै भाभी जी हाथ आयजा, रंगदै मूंडौ नाकड़ली।183।

भरी जवानी होळी आयी, घुंघरू बांध्या टांगड़ली।
लटका झटका नाच दिखावै, निरखै ऊभी कांमणली।184।

गळी-गळी मै हुड़दंग करता, टावर हाका हाकड़ली।
बूढा-ठेरा रळका देता, नाचै बीचां गांवड़ली।185।

सिझ्यां पड़चा सूं आय गैरिया, बैठै ऊंची टीबड़ली।
दूध भांग नै पीतां-पीतां, मीठी लेवै नींदड़ली।186।

होळी लूरां घणी सुहावै, वैठी गावै बींदणली।
छोटै-छोटै गीतां बीचै, मनड़ौ मोवै साथड़ली।187।

बेटी होयां सुगन मनावै, गांव घरां री रीतड़ली।[1]
होळी माथै ढूंढ पीटदै, ऊभा घर री बाखळड़ी।188।

होळी रामा-सामा माथै, गांवां हरखा कोडड़ली।
अेक दुजै रै पगै लागता, घर-घर दीसै गांवड़ली।189।

नुवां गाभा पहर भाईड़ा, मिळलै भर गळ-बाथड़ली।
अेक दुजै रै जाय सासरै, जीमै मीठी लाफसड़ी।190।

जात-पांत रसैं भेळी दीसै, होळी माथै गांवड़ली।
अेक दुजै रो मूंडौ रंगदै, हस-हस करता बातड़ली।191।

---

1. पहला बच्चा होने पर होली के त्योहार पर ढूंढ़ पीटने का रिवाज है। बच्चे के ऊपर एक लकड़ी को दोनों तरफ से पकड़ ली जाती है तथा अन्य लोग उस पर डंडे बरसाते हैं।

बादळ बरसै

पंछी पांख पसारयां बैठ्या, चूचां भखलै पूनड़ली।
तीतर गूंगा वंणिया बैठ्या, आभै कांनी आंखड़ली।192।

छाळी[1] मूंडी कियाँ पूनड़ी, डेडर चढजा वाड़ड़ली[2]।
विसधर[3] वड़ पर चढ़तो दीसै, मेह् वरससी धाकड़ली।193।

कीड़ी कंण असाढा लीनौ, लाय न्हाखदै डेळकड़ी[4]।
करसौ कहवै सुणलै गजवण, मेहो आसी रातड़ली।194।

ढळती रात मोरिया वोलै, वैठ्या ऊपर खेजड़ली।
घटा-टोप वादळिया छाया, भरसी नाडा नाडड़ली।195।

तीतर भरकी दिखै वादळी, आभै छायी धाकड़ली।
घरां-घरां मैं वात हुवै है, आज पड़ेली छांटड़ली।196।

भाख पाटतां[5] गोधो दड़कै, धाना भरसी धरतड़ली।
घर-घर सुगन मनाता दीसै, डोकर कहता वातड़ली।197।

मोठ वाजरी चूले सीजै गुळ सूं मीठी गूंगड़ली[6]।
झिरमिरझिरमिर मेहो वरसै, कांमण गाता गीतड़ली।198।

खेजड़लै री डाळां मायै, हींड मांडली गोरड़ली।
सावण आया दिखै हीडल्यां, नंणदल भावज साथड़ली।199।

ऊभी कांमण हींडा हीडै, मचका देती टांगड़ली।
हीडो चढतो दिखै गगन मैं, रुळ-रुळ जावै जेवड़ली।200।

---

1. बकरी 2. बाड़ 3. सांप 4. सफेद दाणा 5. प्रातःकाल
6. घूगरी (उबाला हुआ अनाज)

काग-कबूतर दै उडारा, ऊंची दीसै चिलखड़ली।
पांख पंखेरू ओटो लेवै पड़तां मोटी छांटड़ली।201।

काळि-कळायण दिखै उमड़ती, बरसै बादळ धाकड़ली।
मोटी-मोटी छांटचां न्हाखै, हरसै धोरा धरतड़ली। 202।

घरां-घरां सूं भेळी होजा गीत उगेरै[1] सायड़ली।
सावण महिणै रात पड़चां सूं, मधरी गूंजै तानड़ली[2]।203।

बादळ छाया मेह बरसावै, सांवणियै री रातड़ली।
ठंडी-ठंडी पून सूवावै, पलकां छाई नींदड़ली।204।

सावणियै रा लोर[3] आवतां, घर-घर दीसै हरखड़ली।
मांचा-डेला हाथां लीना, धरै मायनै झूंपड़ली।205।

टापरियो[4] पांणी सूं चूवै[5], झूंपड़ उड़जा आंधड़ली।
टाबरियां नै साथै लीयां, धोरै ढाळी मांचड़ली।206।

उमड़-घुमड़ बादळिया आवै, मोरां मीठी बोलड़ली।
पीव-पीव बोली रै बीचै, दिखै बरसती बादळड़ी।207।

गुडका खाता बादळ दीसै, आभै चमकै बीजड़ली।
काळा पीळा बादळ बरस्यां, भरजा नाडा नाडड़ली।208।

जणै बादळी बरसण लागै, नाचै टाबर–टींगरली।
घरां-घरां मै हरख छायग्यो, स्सै रै मूंडै हांसड़ली।209।

आभो[6] गाजै धरती धूजै, ऋबका मारै मेखड़ली[7]।
सांप सळेटा डरता भाजै, बीज[8] पड़चां सूं टीवड़ली।210।

सावण महिणो घणो सवावै, धोरलियां री धरतड़ली।
तनड़ो मनड़ो[9] ठंडो करदै, पड़चां फुवारा रेतड़ली।211।

---

1. शुरू करना 2. तान 3. तेजी से आते बादल 4. मकान
5. टपकना 6. आकाश 7. बिजली 8. बिजली 9. तन और मन

काळी बदळी धाकड़ बरसै, धोरा फाटै धरतड़ली ।
गिला धोरिया मन हरसावै, सोणी[1] लागै माटड़ली ।212।

सावण महिणै बादळ आवै, पांणी बरसै धारड़ली ।
अेक घड़ी मैं रेलां-पेलां, ठंडी चालै पूनड़ली ।213।

पांणी खळकै च्यारूंमेरां, नाळा बहवै धाकड़ली ।
गोडां-गोडां पाणी चालै, घास भरी है जोडड़ली[2] ।214।

बादळ गाजै बीजळ चमकै, बिल में बड़जा सांपणली[3] ।
जीव जिनावर ओटौ लेवै, कैर आकड़ै खेजड़ली ।215।

खाय गुळांच्या बादळ आवै, साथै लीयां आंधड़ली ।
दिन दोफारां हुयौ अंधारौ, धोरा उडतां रेतड़ली ।216।

काळै नागां, कांसी थाळां, वैरण दीसै बीजड़ली ।
अड़क-कड़क कर पड़ती दीसै, देती दीसै मौतड़ली ।217।

तीन दिनां री झड़ी लागियां, पड़जा कच्ची टापड़ली ।
टप-टप टोपा पड़ता दीसै, छेत्यां मायां झूंपड़ली ।218।

बादळ गाज्यां कुंभ्यां निसरै, साग बणावै भावजड़ी ।
चूलै बैठी सोगर सेकै, जाडी-जाडी रोटड़ली ।219।

कदै छांवलौ कदै तावड़ौ, पड़तौ दीसै टोबड़ली ।
आपसरी मैं रमता दीसै, घर-घर टाबर टोगरली ।220।

च्यारूंमेरां खड़्या रूंखड़ा[4], बीचै दीसै नाडड़ली ।
जीव जिनावर पांणी पीवै, मटकी भरलै गोरड़ली ।221।

सांवण महिणै रळ-मिळ बैठे, घरां घरां री कांमणली ।
मधरा-मधरा गीत गावती, भंवर चितारै[5] आथड़ली ।222।

---

1. मन भाने वाली 2. जोड़ (घास का रक्षित मैदान) 3. सांप
4. पेड़ 5. याद करना

बादळियां सूं आभौ छायौ, झीरां[1] बरसै बूंदड़ली ।
सळां पड़ोड़ी माटी दीसै, हरी भरी है सेजड़ली ।223।

हरयौ पोमचौ ओढयां बैठी, मरूधरा री टीबड़ली ।
झीणै घूंघट माटी मुळकै, ठंडी करदै आंसड़ली ।224।

सावण माता पूजन करलै जद जावै पर लूवड़ली[2] ।
ठोक-पींज हळियै नै सांभै, फेरौ दे आ सेतड़ली ।225।

कोड मनातौ करसौ चाल्यौ, बीज बीजवा[3] घरतड़ली ।
मतवाळी भतवार दिखै है, भातौ लीयां हाथड़ली ।226।

पहलौ मेहौ हळियौ चालै, दूजै दीसै घासड़ली ।
तीजै मेहै धान खड़यौ है, भरसी सांठो छाटड़ली ।227।

खेतां बूझा घणा दिखै है, कसियौ थाम्यौ हाथड़ली ।
छोटा-मोटा रळमिळ वाढै[4], सिणिया, झाड़यां घासड़ली ।228।

सिखरां सूरज तपतौ दीसै, कांम करै है धाकड़ली ।
तेज तावड़ौ आंख्यां काठै, कांधै वळजा चामड़ली ।229।

कांधै ऊपर हळियौ धरियौ, माथै ऊपर पागड़ली ।
छोटा मोटा खेता चाल्यां, फाटयै कुड़तै धोतड़ली ।230।

खेत बिचाळै करसौ ऊभौ, मो'री खींचै सांढड़ली ।
कोछा मारयां तेजौ गावै, हळियौ चालै धरतड़ली ।231।

चोमासै मैं अेरू कांटौ[5], पगां लिपटजा सांपणली ।
काळौ नाग फुफारा मारै, खेत-खेत मैं बांडड़ली[6] ।232।

सांप सलेटा परड़ां मिलकर, रमतां घालै रोहिड़ली ।
डूंचै[7] माथै करसौ सूत्यौ, सबड़क लेवै नींदड़ली ।233।

---

1. पानी की बहुत ही छोटी बूंदें 2. लू 3. बोना 4. काटना
5. साप बिच्छू 6. बाडी (छोटा सांप) 7. खेत में बना हुआ मचान जिस पर रात्रि में सोते हैं ।

रातूं खेत किसारी करकै, बाघल चरकै खेजड़ली ।
दिनड़ो ढळतां डेडर डरड़ै, दोफारां में टीटड़ली ।234।

खेत निदाणां बूजा कटजा,[1] ढेरयां लागी घासड़ली ।
घरां डांगरा चरता दीसैं, लादयां लावै गाडड़ली ।235।

हरियाळी धरती पर छाई, खेतां मांडी भूंपड़ली ।
दिन में ऊभी खेत रुखाळै, सांसर[2] घेरै रातड़ली ।236।

धरती माथै वेलां फैली, आंख दिखै नीं डांडड़ली[3] ।
मार फदाकां[4] वेल बचावै, पूगै दूजी खेतड़ली ।237।

रास पिरांणी[5] वेलां रळगी, लूंवां लड़ियां मोठड़ली ।
ज्वार सुरंगी दिखै मोकळी[6], बाजर ऊंची सीटड़ली ।238।

खेतां बीचै जगै वासती, तापै बैठ्या हाथड़ली ।
डांगरियां नै घेरण चाल्यो, हाथां थाम्यां डांगड़ली[7] ।239।

आघी रातां गोधौ बड़जा, हेला सुणलै खेतड़ली ।
हेला हेली सुणतौ-सुणतो, दिखै छोड़तौ सींवड़ली[8] ।240।

गोफणियौ जद भाटौ फेंकै, उड़ै पंखेरू खेतड़ली ।
खेतां बीचै अड़वौ दीस्यां, डरतो भाजै लूंकड़ली ।241।

बूंटै-बूंटै लट लटकै है, ऊन्दर कुतरै पानड़ली[9] ।
झोलो बहतो दिखै खेत में, कांणी होजा काकड़ली ।242।

तिलां-तेलियौ दिखै चूसतौ, करवौ चूसै बाजड़ली ।
जणै कातरौ दिखै लागतो, पीदै[10] बैठे खेतड़ली ।243।

पीळे रंग रौ आभौ दीसै, दळ-बळ आवै टिड्डड़ली ।
जद फाकलियौ आन पडै है, सूनी करदे खेतड़ली ।244।

---

1. खेत में अनुपयोगी घास, झाड़ी आदि 2. जानवर 3. रास्ता
4. कूदना 5. बेलों को हांकने की लकड़ी की दण्डिका 6. बहुत
7. लकड़ी 8. खेत की सीमा 9. पान-पत्ता 10. उजड़ जाना

मोर पांखड़ी हाथां खींचै, धाकड़ वाजै भूंकड़ली[1] ।
डरता-डरता सांसर नाठै[2], ऊंची करियां पूंछड़ली ।245।

ऊंचै डूंचै टाबर ऊभो, दै फटकारा जेवड़ली ।
चिड़ी कमेड़ी उडती दीसै, जद वाजै है ताटड़ली ।246।

आखी रातां फिरै भाजतो, सांसर घेरण खेतड़ली ।
रातड़ली आंख्यां मे काटै, दिन मे लेवै नींदड़ली ।247।

खेतां बीचां थाळी वाजै, उड़ती दीसै चिड़कड़ली ।
हाका करता टाबर भाजै, दांणा रहजा सीटड़ली ।248।

आल मतीरा खुण्या[3] फोड़लै, खुपरी लोनी हाथड़ली ।
खेजड़लै री छाया बैठी, दिखै जोमती गोरड़ली ।249।

काकड़िया बंधारै कांमण, खेलर सूकै छातड़ली ।
काचरियां नै छोल सुकायां, वणती दीसै काचड़ली ।250।

चूला चाकी खेता लोना, टीबै मांडी झूंपड़ली ।
बाजरलै री रोटचां सेकै, फळचां छमकलै हांडड़ली ।251।

सिटा-मोरतो खेतां बैठ्यो, तांतू उडजा पूनड़ली ।
मीठा-मीठा गुटका लेवै, दांणा चाब्यां दांतड़ली ।252।

सिणिया माथो जोड़चा ऊभा, आक खड़चा है टीबड़ली ।
हरी टांस हरियाळी दीसै, पग-पग ऊभी खींपड़ली ।253।

कांटो बेकर पग मे चुभजा, तिणखै चुभजा आंखड़ली ।
भूरटियै रो कांटो लाग्यां, बैठ काढलै गोरड़ली ।254।

हाथ आगळचां लीरचां बांधो, मोठ पाड़लै बहवड़ली ।
कमर झुकोड़ी गजबण दीसै, चूड़चां भणकै हाथड़ली ।255।

---

1. मूकण (किसी बरतन के मुख पर खाल मंढ कर बीच में मोर पंख को डालकर खींचने पर आवाज होती है) 2. दौड़ना 3. कुहनी

भणत

ल्हास[1] बोलवा चाल्या भाई, घर-घर गबरू गांवड़ली ।
भरी दुपारी हाथ रुकै नीं, कांम करै है धाकड़ली ।256।

दोफारा मै जीमण जीमद्या, गैळ छायजा आंखड़ली ।
ल्हासियां नै चैतन[2] राखण, भणतां ऊंची गीतड़ली ।257।

जात पांत स्सै भेळी होजा, ल्हास बोलियां खेतड़ली ।
साथै-साथै भणतां बोलै, साथै जीमै रोटड़ली ।258।

अगवौ[3] बंणियौ मधरौ गावै, घूघर बाजै हाथड़ली ।
सगळा मिलकर टेरां[4] देवै, गूंजै खेतां गीतड़ली ।259।

लटका करतौ भणतां बोलै, निरखै घर री गोरड़ली ।
मीठौ-मीठौ बोल भाइड़ा, बीचां चालै बोलड़ली[5] ।260।

गोडी ढाळ[6] तोड़ै मोठिया, पटती दीसै हाथड़ली ।
सूनौ-सूनौ खेत दीखै है, हुई अडोळी रोहिड़ली ।261।

खेतां माथै टूट ल्हासिया, कांम करै है धाकड़ली ।
मोठां मूंगां नेणा ऊंचा, ढेरचां लागी घरतड़ली ।262।

गांव ठाकरां ल्हास बोलियां, सगळा खोदै नाडड़ली ।
आप-आप री पांत्यां बांटचा, खोदै न्हाखै माटड़ली ।263।

धूंणी माथै भेळा होजा, पूछै डोकर बातड़ली ।
किण-किण भाई कांम करचौ है, मूंडै बोलौ साचड़ली[7] ।264।

---

1. खेत काटना 2. सचेत 3. सबसे आगे 4. गाने में ऊँचा स्वर 5. बोली 6. घुटना झुकाकर जमीन से लगाना 7. सच-सच

ढांणी सामै ढेरचां लागी, दिखै सूकती पानड़ली।
ऊंडै खाडै ऊपर राखै, तिल झड़कावण सीटड़ली।265।

बाजरियै सीटां नै राखण, खेतां दीसै करडुली।
कीड़ा–कीड़ी ऊन्दर फिरलै, नीचै बाळू धरतड़ली।266।

हाथ छाजलो लीयां ऊभो, धान उफाणै वहवड़ली।
धान फळगटी न्यारी-न्यारी, ढेरचां लागी खेतड़ली।267।

धीमी पून धान नी उफणै, बैठ्यौ भाई रोहिड़ली* ।
काळा पड़ता दिखै दांणिया, बादळ नांख्यां छांटड़ली।268।

खेत खळा पर झाड़ू दीनौ, धान बचै नीं घासड़ली।
गाड्यां लादचां घर मैं लावै, भर–भर टोकी छाटड़ली।269।

धान नैणकी टोकी लागी, ऊभौ कूटै डांगड़ली।
गुणौ मोठिया न्यारा-न्यारा, भरतौ दीसै बोरड़ली।270।

धान राखवा ठांव बणावै, पायां ऊंचो कोठड़ली।
ऊन्दर नीचै रमतां घालै, बिल दीसै नीं छेतड़ली।271।

घरां धान रूखालण सारू. बोरचां चिणदै झूंपड़ली।
पून तावड़ौ दोनूं लागै, घुण मारै है राखड़ली।272।

कोठा भरिया धान दिखै है, सुख सूं लेवै नींदड़ली।
घर-घर बैठचा करै हथायां, पीतां चिलम तंबाकूड़ी।273।

खेत लाट जद घरां आयजा, धावै धापै गोरड़ली।
तीज तिंवारा धूम मचावै, घूघर घमकै घाकड़ली।274।

भाईड़ा स्सैं साथै रहवै, सम्पत दीसै गांवड़ली।
अेक दुजै रौ कांम कियां विन, ना लाटीजै खेतड़ली।275।

---

* धीरे-धीरे हवा चलने से अनाज व चारा अलग-अलग नहीं होता है। इस समय वर्षा की बूंदें गिर जाती हैं तो अनाज काला पड़ जाता है।

घास-पात

ठोड़-ठोड़ पर ऊभौ दीसै धोंमण घास रोहिड़ली ।
राता माता दिखै डांगरा, दूधा भरदै चाडड़ली ।276।

सिरकनियां[1] हैं दीसै मोकळी, धरती फैली साटड़ली ।
भेड़ां बकरयां चरती दीसै, कंवळी-कंवळी पानड़ली ।277।

धकड़ी धाकड़ रोही फैली, पग-पग दीसै सोनड़ली ।
दूधोली नै चरै डांगरा, ऊभा ऊपर टीबड़ली ।278।

बेसूदा धरती पर छायी, बेकर चरलै सांढड़ली ।
गायां भैंसा रळ मिळ चरलै, ऊंची ऊभी सेवणली ।279।

बूर घास लहरावै खेतां, ऊंची धोळी सीटड़ली ।
आंगणियै मैं झाड़ू देवैं, गांव घरां मैं बहुवड़ली ।280।

हरै घास नै दिखै तोड़ती, भारी लावै गोरड़ली ।
दुचाबड़ी नैं चरती दीसै, घर-घर बकरयां गांवड़ली ।281।

बोरड़ली[2] रा पत्ता झाड़यां, पालो न्हाखै ओरड़ली ।
ठांणा[3] माथै चरती दीसै, घर-घर गांयां भैंसड़ली ।282।

पग-पग भूरट ऊभौ दीसै, चोमासै मैं धरतड़ली ।
सासरियां रै मोजां बणगी, चरती दीसै गावड़ली ।283।

कूतर करतौ दिखै झाड़बढ़[4], कड़बी सेवण घासड़ली ।
डांगरां नै दिखै नीरतौ[5] गांव घरां री बाखळड़ी । 284।

---

1. मूंज 2. कांटेदार झाड़ी 3. गाय-भैंस के चरने का स्थान
4. जवार बाजरे के सीटे के नीचले भाग तथा सेवण घास को काट कर गायों के चरने योग्य बनाने का औजार 5. डालना

तळ-तळाव

सांझ पड्यां पांणी भरबा नैं, हिळ-मिळ चालै कांमणली ।
घड़ियौ माथै छम-छम चालै, गीत उगेरै[1] साथड़ली ।285।

साठ पुरस रौ कुवौ खोदियौ, दूर नाखदी माटड़ली ।
ऊंडै तळ[2] मैं पांणी दीसै, पीवै सगळी गांवड़ली । 286।

ऊंट बळधिया बारी खींचै, पांणी बेवै चाठड़ली ।
खाली घड़िया भरै घड़ोई, भरती दीसै कूंडड़ली ।287।

सुणता पांण कीलियौ हेलौ, पड़ती दीसै लावड़ली[3] ।
गरणाटै पर चढ्यौ भूंणियौ, सारण उड़जा रेतड़ली ।288।

खाल भैंसरा साळू भेळा, लाव गूंथलै साथड़ली ।
भरयौ बारियौ खीच्यां लावै, हळवै हळवै सांढड़ली ।289।

लाव टूटियां बारी पड़जा, टकरां खातौ भींतड़ली ।
गीत गावतौ तळ मैं उतरै, झाल्यां बैठयौ जेवड़ली ।290।

मटकी माथै हाथ बालटी, कूवै पूगी गोरड़ली ।
होळै-होळै दिखै खींचती, थाम जेवड़ी हाथड़ली ।291।

सारण-ढाळ दिखै कूवै पर, सोरी चालै टोडड़ली ।
पी लेवतौ[4] दिखै भाईड़ौ, रोकड़ रिपिया धोतड़ली ।292।

कूवै छतड़्यां[5] दिखै गगन मैं, घड़ती दीसै हाथड़ली ।
दोफारां में बैठ्या दीसै, जीव जिनावर छांवड़ली[6] ।293।

---

1. शुरू करना 2. कुआं 3. लाव 4. कुएं से पानी निकालने वाला कर जो लेता है उसे पी लेना कहते हैं। 5. शेखावटी क्षेत्र में सभी कुओं पर छतरियां दिखाई देती है। 6. छाया

भरियौ घड़ियौ दिखै लावती, माथै ऊपर गोरड़ली ।
गजगामणिया[1] दिखै चालती, हंस चाल सूं कांमणली ।294।

दिन भर घुटती गजवण बैठी, कंथ घरां नी गांवड़ली ।
सिखरां सूरज कणै ढळेलौ, कांमण जोवै बाटड़ली ।295।

सांझ पड़्या पांणी नै चाली, जी बिलमावण मरवणली ।
घड़्यौ साभ्यां घर सूं निकळी, हेला देती साथड़ली ।296।

कूवै पाणी भरवा आई, घरां-घरां री बींदणली[2] ।
परदेसां मैं सायव बैठ्या, करत्यां दीसै बातड़ली ।297।

गांव किनारै तळ दीसै है, पांणी दीसै कूंडड़ली ।
मटकी ऊंच्यां वहवड़ चाली, हस-हस करती बातड़ली ।298।

मिळणी-जुळणौ कूवां माथै, करै हथायां साथड़ली ।
व्यांव सगाई ओसर मौसर करती दीसै बातड़ली ।299।

जीव जिनावर पांणी पीवै गांव तळावां घाटड़ली ।
साफ सूथरौ पालर पांणी, भरती दीसै मटकड़ली ।300।

भगवन ध्याता भजन गावता, तळ खादै है धरतड़ली ।
मीठौ पांणी दिखै निकळतौ, स्सैं रै मूंडै हांसड़ली ।301।

ताल तळायां दिखै खोदता, बार न्हाखदै माटड़ली ।
चोमासै मैं मेहौ वरस्यां, भरती दीसै नाडड़ली ।302।

आगोरां सूं पाणी खळकै भरती दीसै झीलड़ली ।
पांख पखेरू उड़ता आवै, पांणी पीवै चांचड़ली ।303।

गधिया ढांचा लादयां लावै, भर-भर पांणी मटकड़ली ।
चोधड़ लातौ दिखै साथिड़ौ, धरियां ऊपर सांढड़ली ।304।

---

1. हथनी की चाल से (हाथी-हथनी पंजों पर चलते हैं जिससे जब वे चलते हैं तो सारा शरीर झूमता हुआ लगता है।) 2. कुआ गांव की औरतों के क्लब का काम करता है ।

आसोज

हरचा खेतड़ा मन बिलमावै, ज्यूं सूवै री पांखड़ली ।
साफ सूथरै आभै मांयै, ओस पड़ै है धाकड़ली ।305।

भूख भागणौ तीस बुझाणौ, दिखै मतीरौ खेतड़ली ।
अथरी पथरी बहती दीखै, पाणी पीयां आलड़ली ।306।

खेत कांमड़ौ अंग-चंग लाग्यौ, सुख सूं लेवै नींदड़ली ।
जीव अधारां खेती म्हारी, अन-धन भरसी चाडड़ली ।307।

खेत लावणी करती बेळां, अेकौ दीसै गांवड़ली ।
थारी म्हारी बात रही नीं, घर री समझै खेतड़ली ।308।

भाईड़ा स्सैं रळ-मिळ बैठे, रोटी पुरसै मावड़ली ।
दूध दही रा जीमण जीमै, बैठ्या सबड़ै राबड़ली । 309।

काकड़-मतीरा[1] दिखै मोकळा[2], तुम्बा पग-पग टीबड़ली ।
मिनख लुगाई दोनूं जीमै, डांगर वणगी मौजड़ली[3] ।310।

हरचौ-साग है दिखै मोकळौ, ग्वार-फळी अर मोठड़ली ।
बाजरलै री रोटचां चूरै, बैठचौ खेतां भूंपड़ली ।311।

दिनड़ौ ढळतां घरां आयजा, हांडी सीजै खीचड़ली ।
मिरियां-मिरियां[4] घीव घालती, पुरसै मावड़ गांवड़ली ।312।

लाल वोरिया मीठा लागै, पग-पग ऊभी बोरड़ली ।
दै धंधूणी[5] दिखै झाड़तौ, ऊभौ बीचां रोहिड़ली[6] ।313।

---

1. ककड़ी, मतीरे 2. अधिक 3. आनन्द 4. बड़ा चम्मच
5. जोर से हिलाना 6. जंगल

रात बिरातां खेत रुखाळै, बैठ्यौ ऊपर टीबड़ली ।
हिरण्यां-किरत्यां[1] दिखै गगन मैं, टेम देखलै आंखड़ली ।314।

कैर सांगरी साग मोकळौ, दिखै तोड़ती गोरड़ली ।
बिखरयां खोखा बकरी चरलै, ऊभी नीचै खेजड़ली ।315।

भूरट कांटौ पग-पग बिखर्‌यौ, लड़िया लूंबा धोतड़ली ।
हीरा-मोती जड़ी दिखै है, गोरड़ली री चूंदड़ली ।316।

ठमकी मारयां ठम-ठम बोलै, पाकी दीसै आलड़ली ।
गुंद खिरोड़ौ पड़यौ मतीरौ, तांतू बळियां बेलड़ली ।317।

गोधलियौ खेतां मैं वड़जा, गवरू पकड़ै पूंछड़ली ।
दे फटकारौ हेठे न्हाखै, दिखै चाटती रेतड़ली ।318।

हरियै-हरियै खेतां दीसै, बाजर ऊंची सीटड़ली ।
काचर घणा टींडसी दीसै, फळयां भरोड़ी मोठड़ली ।319।

आसोजा मैं मोती निपजै बादळ नाख्यां छांटड़ली ।
हरियाळी खेतां मैं दीसै, धान हुवेलौ धाकड़ली ।320।

हाथ पगां मैं बळतां भळतां भूरट लाग्या कांटड़ली ।
हाथां सूं कांटलिया चुगलै, सिळियां चुगलै चींपड़ली ।321।

बिन बरस्यां सूं सावण जावै, डबकी पड़जा जीवड़ली ।
देवि-देवता ध्याता दीसै मिनख लुगाई गांवड़ली ।322।

जणै हिरणियौ डावै आवै, सुगना माड़ी बातड़ली ।
ऊणा-टूणा करती दीसै, गांव घरां मैं सायड़ली ।323।

काचर-बोर मतीरा मीठा, हुयां दियाळी गांवड़ली ।
दीया दीठ्यां धान पकै है, घर-घर सुणलै बातड़ली ।324।

---

1. तारो के नाम(तीन तारे लगातार दिखाई देते हैं उसे हिरण्यां कहते हैं। छः तारों के झूमके को किरत्यां कहते हैं।)

दियाळी

अेरू कांटी ओटी लेवै, देख दियाळी गांवड़ली।
डरता-डरता बिल मैं बड़जा, सूनी दीसै रोहिड़ली।325।

दिया दियाळी जगता दीस्यां, दिखै तोड़ता मोठड़ली।
खेत लाट कर घर मैं आवै, धान लादियां गाडड़ली।326।

घर आंगणियो झाड़े-झड़कै, लीपै पोतै गोरड़ली।
वही चोपड़ा पूजा करता, परखै[1] हाथां रोकड़ली[2]।327।

धनतेरस नै बरतन लेबा, गजवण पूगै हाटड़ली।
ठोड-ठोड़ पर सजी दुकानां, थाळी लेवै कांमणली।328।

म्हैल माळिया लिया मंखाणा, फूल्यां बांधी गांठड़ली।
गांव घरां नै नाठी[3] जावै, कांधै लीयां पोटड़ली।329।

तेल बाती दीसै भीजती, सज्या दीवटा भींतड़ली।
तूळी लाग्यां जगता दीसै, घरां-घरां री छातड़ली।330।

झिलमिल झिलमिल करै दीवटा, धीमी चालै पूनड़ली।
सोनल[4] धोरा दिखै चानणै[5], दमकै-चमकै रेतड़ली।331।

गैणां गाभा पहरी ऊभी, दिखै गवरजा मूमलड़ी।
चणक-मणक[6] अंग-अंग मैं दीसै, झणकै चूड़चां हाथड़ली।332।

लिछमी पूजन लिछमी चाली, लियां आरती गोरड़ली।
धन्न धान सूं माटा भरिया, परखै नगदी रोकड़ली।333।

---

1. देखना 2. धनरासी 3. दौड़ता 4. सुनहरे रंग के
5. उजाला 6. चंचलता

ास खेलता घर-घर दीसै, बैठचा ऊपर जाजमड़ी ।
हार जीत नै भूल्या विसरचा, सुगन मनावै सायड़ली ।334।

रातड़ली मैं छुटै अनारां, फूल झड़ै है टीवड़ली ।
च्यारू मेरां दिखै विखरता, हीरा मोती रेतड़ली ।335।

तूळी लाग्यां तीर छूटजा, दिखै गिगन मे आगड़ली ।
भूल्यौ भटक्यौ घर पर पड़जा, जगती दीसै भूंपड़ली ।336।

आंटा खातौ सांप वणै है, फंण फैल्यौ है धाकड़ली ।
हंसता-हंसता टावर देखै, ऊभा साथै मावड़ली ।337।

अेक बरस सूं आइ दियाळी, घर-घर छायी हरखड़ली ।
पुरख लुगाई पूजा करता, मांगे सोनौ चांदड़ली ।338।

जगती लड़नै दिखै न्हाखता, खाली लीयां मटकड़ली ।
पट्टाकां री पड़-पड़ चाले, देखै टावर आंखड़ली ।339।

पूजा-पाठ सूं निपट साथी, पूगै ऊंची टीवड़ली ।
धम्माकां रा उठै धमोड़ा, घूजै बाळू धरतड़ली ।340।

छूटयां सोर मरै कीटाणू, सुख सूं लेवै सांसड़ली ।
साफ सूथरी पून चालियां, रोग दिखै नीं गांवड़ली ।341।

अमावस री रात अंधारी, तारा गिणलै आंखड़ली ।
सीयाळै री झलक देखलै, सूती माचै गोरडली ।342।

घर-घर जीमण होतौ दीसै, दिखै सीजती लाफसड़ी ।
गैणा गाभा पहर कांमणी, बांटै घर-घर सायड़ली ।343।

दीयाळी रौ उछब मोकळौ, बंटै मिठाई गांवड़ली ।
मिलता बोलै रामा-सामा, रसै रै मूंडै हांसड़ली ।344।

---

1. पटाके छोड़ने पर धुआ उठता है, उससे वायु-मण्डल मे रोग फैलाने वाले कीटाणु मर जाते हैं ।

ब्यांव-सावा

मौरत निकळ्यां ब्यांव हुवै है, घर-घर गावां गीतड़ली ।
इणती-गिणती आवै कोनो, दिन्न गिणावै गैडड़ली[1] ।345।

ब्यांव तिथी नै मुकर करयां सूं, दिखै बांधता गांठड़ली ।
हळदी गांठियो मोळी वांध्यो, माळा टांगी भींतड़ली ।346।

विघन विनायक आय विराजै, ब्यांव रचावै साथड़ली ।
विन गणेसजी कांम सरै नीं, गीत लडावै मावड़ली ।347।

ब्यांव टांकलै गीत गायवा, घर सूं आवै वहुवड़ली ।
मधरा-मधरा गीत गावती, घर-घर दीसै गोरड़ली ।348।

हरिया मूंग बिखेरण रीतां, ब्यांव मंड्यां सूं गांवड़ली ।
मोठ मूंग नै चुगती-चुगती, गीत उगेरै बहुवड़ली ।349।

ब्यांव घरां रौ ठा पड़जावै, मीठी बाज्यां ढोलकड़ी ।
मधरी-मधरी डूमंण गावै, ऊंची खीचै तानड़ली ।350।

बुढा-वडेरा बातां पक्की, पोथी जोसी हाथड़ली ।
घर- घर पीळा चावळ बंटजा, कुटम कबीलै हरखड़ली ।351।

बांन वैठियो बनड़ो दीसै, वांधी पीळी पागड़ली ।
चमकी भालां दिखै चमकती, हाथां लीनी गैडड़ली ।352।

हाथ कांम लेता रै साथै, पीठी मसळै साथड़ली ।
मूंडै ऊपर लाली छायी, गोरी दीसै चामड़ली ।353।

---

1. पुराने समय में गांव के लोगो को पूरी गिनती नही आती थी, दूल्हा-दूल्हन छड़ियां को उठा कर एक कोने से दूसरे कोने में रख कर दिनों की गिनती करते थे ।

भात-भरै

ब्यांव टांकलै भाई नेतण, पीवर पूगै बैनड़ली ।
बिनां भात रै ब्यांव अधूरौ, बैनड आंसू आंखड़ली ।354।

गांव घरां सूं चाल्यौ भाई, ओढ़ण लादी गाडड़ली ।
बुढा-बडेरा भाई-बंधू, भात भरै स्सै गांवड़ली ।355।

गाडचां माथै बैठ लुगाया, बोरा लादचा साढड़ली ।
वीर मायरौ धाकड़ लायौ, बैनड़ मूंडै हासड़ली ।356।

ओरण बीचैं आय बिराजै, भाई बैनड़ मावड़ली ।
थाळ सजाया हाथां लीनां, पूगै आंगण धीवड़ली ।357।

दादा काका नाना मामा, माथै बांधी पागड़ली ।
गाजां बाजां भरै मायरौ, हाथां लीयां चूंदड़ली ।358।

कुटम कबीलौ भेळौ होजा, बैठै ऊपर जाजमड़ी ।
बैनड़ ऊभी भाई टीकै, नंणदल गावै गीतड़ली ।359।

बोझां मरती बैनड़ ऊभी माथै गुळ री भेलड़ली ।
गीतां हेलौ बैन सुणावै, वीरौ समझै बातड़ली ।360।

भात भरचां सूं रिपिया बरसै, दिखै मोकळी रोकड़ली ।
गांव लुगायां दिखै गावती, मधरी मधरी गीतड़ली ।361।

जै भाई रौ भात चूकजा, सासू मारै तानड़ली ।
औ कलंक धोया नीं धूपै, भाई समझै बातड़ली ।362।

बैन घरां सूं हुवै विदाई, लादी भायां गाडड़ली ।
घरां आंगणै ऊभा-ऊभा, फेरै माथै हाथड़ली ।363।

वनड़ै रै माथै नै धोवै, मामौ लीयां छाछड़ली ।
पाटै माथै बैठ्यौ न्हावै, भावज गावै गीतड़ली ।364।

बींद वणावै ऊभी भावज, काजळ घालै आंखड़ली ।
निजर बचावण खातर मांडै, मूंडै काळी टीकड़ली ।365।

बींद राज वण ठण नै बैठ्या, माथै बांध्यां पागड़ली ।
हीरा कंठी पळका मारै, लांबी पहरी अचकणली ।366।

फीडी[1] जूती वनड़ै पहरी, सलमा तारा डोरड़ली ।
बींद पगलिया धरतौ चालै, होळै होळै टांगड़ली ।367।

फूल-गुलाबी दिखै कमरबंध, झीणी मलमल ओढणली ।
मांय घाल नारेल बांध दै, घर-घर गांवां भावजड़ी ।368।

बनड़ौ घोड़ै चढियौ चालै बाजा वाजै धाकड़ली ।
गीत गावतां धूम मचावै, मावड़ भावज बैनड़ली ।369।

छैल छबीला जांना जावै, घर मै रहजा बहुवड़ली ।
अेक दुजै सूं व्यांव रचावै, रमै टूंटियौ[2] साथड़ली ।370।

सामी जांन चढ़ै भाईड़ा, करचां सवारी सांढड़ली ।
जांन्यां साथै आता दीखै, पड़ जांनी भी गांवड़ली ।371।

वार गांव सूं आया जांनी, बैठै ऊपर जाजमडी ।
होका चिलमां गोट उठै है, अमल गळै है धाकड़ली ।372।

मांढी पगां तंणा खड़्या, है, हस-हस करता बातड़ली ।
आव भगत मै कमी दिखै नीं, चरती दीसै सांढड़ली ।373।

चंदन लकड़ी तौरण दीसै, वांध्यौ ऊंची भीतड़ली ।
जग मोत्यां रौ थाळ सजायां, सासू लीनौ हाथड़ली ।374।

---

1. बगैर एडी के 2. बारात जाने के पश्चात दूल्हे के घर पर औरतों द्वारा आपस में रचा जाने वाला नकली विवाह ।

तोरण ढूक्यां कांमण फेंकै, भर-भर दांणां मूठड़ली ।
बींद साथिड़ा गमछौ तांणै, ऊभा ऊंची धरतड़ली ।375।

तोरण आयां हुवै आरतौ, दिया सजाया गोरड़ली ।
सासू ऊभी नापै-जोखै, हाथा थाम्यां डोरड़ली ।376।

टीकौ काढ़ै ऊभी सासू, *थाळी लीयां हाथड़ली ।*
झिलमिलझिलमिल करै आरतौ, कांमणगारी भावजड़ी ।377।

कंवर-कलेवौ जणै हुवै है, घर मैं गावै गीतड़ली ।
बीच थाळ रै कवौ उठावै, बैठ्यौ बनड़ी जाजमड़ी ।378।

तानां देती दिखै लुगायां, मधरी गाती गीतड़ली ।
भूंडा जांनी लायौ लाडल, मूंडै कहती बातड़ली ।379।

काणा जांनी लायौ लाडल, किस विद करसी बातड़ली ।
आंधा जांनी लायौ लाडल, चुपकै बैठौ जाजमड़ी ।380।

खोड़ा जांनी लायौ लाडल, किस विद करसी बातड़ली ।
लूला जांनी लायौ लाडल, चुपकै बैठौ जाजमड़ी ।381।

ठिगणा जांनी लायौ लाडल, किस विद-करसी बातड़ली ।
बूढा जांनी लायौ लाडल, चुपकै *बैठौ जाजमड़ी ।382।*

पहलौ जीमण घीव खीचड़ी, ऊपर रेड़ी साकरड़ी[1] ।
हाथ सबड़का देती जीमै, बैठ्यौ ऊपर जाजमड़ी ।383।

थाळ परूस्या जीमण बैठै, गजवण गावै गीतड़ली ।
गीत गावती जांन बांध दै, जांन्यां रोकी हाथड़ली ।384।

ऊभौ भाई जांन छुड़ावै, साळ्यां बोलै धाकड़ली ।
ऊक-चूक मूंडै पर आतां, कवौ देयदै लाफसड़ी ।385।

---

1. गांवों में शादी पर पहला जीमण खीचड़ी का दिया जाता था। देसी घी से थाळी भरदी जाती थी फिर खीचड़ी को मिला कर अधिक से अधिक घी खिलाया जाता था ।

आपसरी मैं कवा देवता, हस-हस करलै वातड़ली ।
मनवारां सूं जीमण जीमै, सगा गनायत गांवड़ली ।386।

व्यांव रचावण आया जांनी, वैठ्या मार्च वासळड़ी ।
चार दिनां तक जीमण जीमै, जूनी गावां रीतड़ली ।387।

चंवरी मैं फेरलिया खावै, बींद बींदणी रातड़ली ।
आसै-पासै भीड़ मोकळी, दिखै लुगायां धाकड़ली ।388।

हथळेवै हाथ मैं मेंहदी, फेरा खावै बींदणली ।
टाबरियां रा व्यांव हुवै है, देखै चावल मावड़ली ।389।

अगनी सामैं सोगंन खावै, कदै न छोडू साथड़ली ।
मरणी जीणो साथ साथणी, दिखै थामतौ हाथड़ली ।390।

बनड़ी बनड़ी जूवौ खेलै, बींटी गुमजा छाछड़ली ।
लाडल बींटी झट जो लेवै, साळ्यां मूंडै हांसड़ली ।391।

जांनीवासै पूग साथिडा, वैठै ऊपर जाजमड़ी ।
मधरी-मधरी डूमण गावै, रिपिया बरसै धाकड़ली ।392।

जांनी-वासै गीत गावती, धूम मचावै गोरड़ली ।
पान-सुपारी बंटै मोकळी, खारक बटजा मूठड़ली ।393।

सगा-सोई नै सीख देवतां, मिळै गळा भर बाथड़ली ।
मूठ्यां भर-भर उडै गुलालां, रंगां रंगीजै हाथड़ली ।394।

जांन विदाई करवा खातिर, ऊभा साथी साथड़ली ।
टाबर टीगर रेलां-पेलां, मधरी बाजै ढोलकड़ी ।395।

ऊंटां पडची धरता दीसै, कस्यां पलाणा सांढड़ली ।
अेक-दुजै सूं विदा होवतां, हस-हस करलै बातड़ली ।396।

ऊंट कतारां दिखै जावंती, ऊंचै धोरै टीवड़ली ।
मधरी-मधरौ ढौली गावै, वैठचौ ऊपर सांढड़ली ।397।

हुवै विदाई

दूर देस मे भयो सासरो, वेटी छोड़ै गांवड़ली ।
बावल माथै हाथ फेरतां, आंसू ढळकै आंखड़ली ।398।

काका मामा दियौ दिलासौ, मूंडै आधी बातड़ली ।
आंसूड़ा गालां पर छाया, भाई भींची दांतड़ली ।399।

भोळी चिड़कल गूंगी वणगी, ना निसरै है बातड़ली ।
खांणौ-पीणौ स्सो बिसरायौ, गुम-सुम बैठी सोनड़ली ।400।

आंसूड़ा रो मेहौ बरसै, मूंडै डुसका हिचकड़ली ।
मधरा-मधरा पगल्यां धरती, फळसौ लांघै कोयलड़ी ।401।

गळबाथड़ली घाल्यां चाली, फळसै तांई साथड़ली ।
साथणयां री साथ छूटग्यो, याद आवसी बैनड़ली ।402।

जामण री काळजियौ फाटै, आंगण छोड़्यां धीवड़ली ।
आंसूड़ां रा वाळा बहवै, भीजी कुड़ती चूंदड़ली ।403।

गांव लुगायां भेळी होजा, मधरी गावै ओळूंड़ी ।
चिड़कल मुड़-मुड़ घरनै देखै, घुड़लो घेरै सांढड़ली ।404।

गांव घरां पर दिखै उदासी, विदा हुवै जद वैटड़ली ।
छोटा-मोटा स्सै रोवै है, घर मै ढीकै बाछड़ली ।405।

भाई बहन री ध्यान राखी, नीरो म्हारी गावड़ली ।
धोरलियां री सोन चिड़कली, दै भोळावण मावड़ली ।406।

आखिर देख्यौ घरां गांव नै, टुरी सासरै कोयलड़ी ।
रूंख वांठका लारै छूट्या, घर मै छूटी मावड़ली ।407।

ब्यांव रचाय'र आया जांनी, गांव घरां मैं हुरखड़ली ।
बींद-बींदणी कांकड़ बैठ्या, हेटैं गादी जाजमड़ी ।408।

घरां-घरां सूं निरखण आयी, गांव घरां री बहुवड़ली ।
घूंघट सूं घूघटियो रळियो, देखैं आंख्यां नाकड़ली ।409।

ब्यांवां रीतां पूरी होगी, घरां पूगजा बींदणली ।
आरतियै री थाळ सजायां, फळसैं ऊभी मावड़ली ।410।

बनड़ो-बनड़ी घर मैं वडतां, फळसो रोकै बैनड़ली ।
नेक-चाक बावलजी देवैं, मावड़ मूंडै हांसड़ली ।411।

गंठजोड़ैं सूं वड़ता घर मैं, बींद बिखेरै थाळकड़ी ।
इखरचा-बिखरचा बरतन दीसैं, भेळा करलै लाडड़ली ।412।

नुई नवेलण घरां पूगगी, न्यातड़ भेळी बाखळड़ी ।
मूंह दिखाई पगा लगाई, देवैं रिपिया रोकड़ली ।413।

ब्यांव हुवण पर रातीजोगो, घर-घर दीसै गांवड़ली ।
घरां लुगायां मधरी गावैं, बैठी आखी रातड़ली ।414।

लाड जवांई घरां आवतां, सासू गावै आंखड़ली ।
छोटचां साळ्यां करै मसकरचा, पावै पान सुपारड़ली ।415।

लाडै-कोडै दिखै जीमतो, आय पांवणो गांवड़ली ।
रात पड़्यां सूं गीत उगेरै, रळ-मिळ बैठी साथड़ली ।416।

हसी-मजाकां करत्यां-करत्यां, साळ्यां बैठी झूंपड़ली ।
मधरी-मधरी बातां बीचै, बीतै आखी रातड़ली ।417।

सजी धजी बहुवड़ली दीसै, चुड़लो पहरचां हाथड़ली ।
ओळूं गाती दिखै लुगायां, विदा हुवै है बैटड़ली ।418।

ढोलै साथै मरवण टुरगी, बैठ्यां ऊपर सांढड़ली ।
लूमां-झूमां करै गोरबंद, गेणो झणकै टांगड़ली ।419।

टाबर

पूरा पेट बींदणी वैठया, कोड मनावै नंणदड़ली ।
सासू मोटी आस लगाई, वेटो जणसी बहुवड़ली ।420।

जणै बींदणी दिखै पेट सूं, जोरां फेरै पट्टड़ली ।
घणै कांम सूं टावर सोरो, होतो दीसै गोरड़ली ।421।

पहलो जापो पीहर करसी, गांव घरां री रीतड़ली ।
वैनड़ लेवण भाई आयो, धरां उडीकै मावड़ली ।422।

वुढयां वडेरयां भेळी होजा, सोचो समभी वातड़ली ।
झट दाई नै हेलो देवै, करै चांदणो झूंपड़ली ।423।

पहलो जापो खाय-बठोटा, मूंडै चिपजा दांतड़ली ।
दोरो-सोरो टावर जणदै, मावड़ मूंडै हांसड़ली ।424।

नाळो काटै, आंवळ बूरै, दाई पूरी वातड़ली ।
सवा-महिणै नांईण आवै, कांम करै दिन रातड़ली ।425।

नंणदोली हांचळ खोलावै[1], दूधो पावै मावड़ली ।
नेक-चाक बावल जी देवै, हाथा रिपिया रोकड़ली ।426।

घरां-धरां सूं आय लुगायां, चढती दीसै छातड़ली ।
वेटो होयां थाळ वजावै, वेलण लीयां हाथड़ली ।427।

उछब मोकळो दिखै घरां मैं, डूमण गावै गीतड़ली ।
भाई बन्धू, सगा परसंगी, जीमण जीमै न्यातड़ली ।428।

---

1. बच्चा जन्म लेने के पश्चात बच्चे की मां बच्चे को स्तन पान तभी कराती है जब ननद आकर बच्चे के मुंह में स्तन देती है। इस पर उसे रुपये, गहने, कपड़े आदि प्राप्त होते हैं।

घर में टावर जाणयां सूता, जच्चा खावै सूठड़ली।
अजवांणा रा सीरा जीमैं, बैठी ऊपर मांचड़ली।429।

घीव सहद मूंडै मैं देवै, जलम्यां टाबर बहुवड़ली।
जात करम सस्कारां पूरा, घर-घर दीसै गांवड़ली।430।

गूंद गिरी रा लाडू बांध्या, घाल विदाम साकरड़ली।
खाणौ-पीणौ रचलै पचलै, मूंडौ चमकै धाकड़ली।431।

तेल-पीठी दीसै मसळती, माथौ धोवै गोरड़ली।
चिकणी चुपड़ी दिखै कांमणी, मखमल जैड़ी चामड़ली।432।

न्हावै धोवै केस संवारै, पीळौ ओढै बहुवड़ली।
नंणदोली रै हाथां थाळी, बींदण बांटै लाफसड़ी।433।

जापै सूं जद उठै सवागण, आंगण बाजै ढोलकड़ी।
घरां लुगायां भेळी होजा, मधरी गावै गीतड़ली।434।

करवौ पूजण बहुवड़ चाली, ओढ्यां तारां लूगड़ली।
बेटौ जणियौ है गोरड़ली, करै लुगायां बातड़ली।435।

पूजन कर जद दोघड़ ऊंच्यौ, पांणी लावै बींदणली।
चूलौ चोकौ कांमण सांभै, दिखै रांधती लाफसड़ी।436।

सग्यां सगारै घरां पूगजा, धमचक घालै धाकड़ली।
मधरी-मधरी गाळ्यां गावै, घणी सुहावै बातड़ली।437।

टाबरियां रै नामकरण पर, रांधै मीठी लाफसड़ी।
मिरिया-मिरिया घीव लेवता, जीमैं बैठ्या जाजमड़ी।438।

भोळा ढाळा टाबर रमतां, थुथकौ घालै डोकड़ली।
निजर बचावण मांवड़ मांडै, मूंडै काजळ टीकड़ली।439।

चुटकी देतां टाबर हंसदै, बोखौ दीसै बेटड़ली।
जद किल-कोळ्यां भरै लाडलौ, मावड़ मूंडै हांसड़ली।440।

नैंना टाबर दिखै गांव मैं, बैठै मावड़ गोदड़ली ।
लाड लडावै बैठी जामण, हंसती दीसै बैटड़ली ।441।

झाडूलौ टाबरियां उतरै, बाजा बाजै गांवड़ली ।
देवि-देवता केस चढाता, जातां पूरी बातड़ली ।442।

पैरी ओढी दिखै बींदणी, पगल्यां लागै डोकड़ली ।
दूधा न्हावौ पूत फळौ थै, सासू बोलै वोलड़ली ।443।

पोतड़िया नैं बांध्यौ सूतौ, टाबर लेवै नींदड़ली ।
ईलौ गीलौ की नीं दीसै, सुख सूं सोवै मावड़ली ।444।

सजी-धजी बहूवड़ली दीसै, गीगौ लीयां गोदड़ली ।
बेटौ दादौ दादी सूंपै, आय सासरै गोरड़ली ।445।

पकड़ आंगळी टाबर चालै, मूंडै दादी हांसड़ली ।
ठमका करतौ आगै भाजै, घुंघरू बाजै टांगड़ली ।446।

पालणियै मैं टाबर हींडै, लोरी देवै मावड़ली ।
हींडा लेतौ सूतौ दीसै, मीठी लेतौ नींदड़ली ।447।

दादी लाड लडाती दीसै, टाबर बैठ्यौ गोदड़ली ।
टट-पट टट-पट बातां करतौ, तोती बोलै बोलड़ली ।448।

छः महिणा रौ होतां-होतां, बैठै टाबर गोदड़ली ।
आती जाती दै डिचकारी, घरां-घरां मैं बहूवड़ली ।449।

टाबरियै रै जलम लेवतां, जात बोलदै मावड़ली ।
बडौ होवतां जाती दीसै, देवि-देवता साथड़ली ।450।

घर-घर टाबर रमता दीसै, गळियां गावां रेतड़ली ।
हाका हाकी करता-करता, रुळधुळ घालै धाकड़ली ।451।

हरख कोड घर-घर मैं दीसै, टाबर होयां गांवड़ली ।
बिना टाबरां सूनी दीसै, गांव घरां री धरतड़ली ।452।

रीतां

ब्यांव-मायरै खरच मोकळो, खाली होजा आंटड़ली।
फिरको लीयां जिवै जीवड़ो, सारो देवै हिम्मतड़ी[1] ।453।

गंठजोड़ै री बात निराळी, बांधै घर-घर गांवड़ली।
ई बंधन रै सारै जीलै, गांव घरां री गोरड़ली ।454।

हियो हेत सूं गांठां घुळजा, कांकण डोरा हाथड़ली।
पुरख लुगाई इसड़ा घुळिया, ज्यूं पांणी मैं साकरड़ी ।455।

कांमणिया रै गीत बिनां सूं, ब्यांव अधूरी बातड़ली।
रळ-मिळ गाती दिखै लुगायां, ब्यांव टांकलै गांवड़ली ।456।

बाबल मावड़ मनतां मानै, सुख सूं रहवै बैटड़ली।
दूध घीव री नदियां बहवै, बेटो रमलै गोदड़ली ।457।

ऊनाळै मैं ब्यांव हुयां सूं, आवै काळी आंधड़ली।
घर-घर गांवां बात हुवै है, बनड़ै चाटी हांडड़ली ।458।

गांव सगाई लांबी चालै, घरां-घरां री रीतड़ली।
अेक-दुजै नै अरखचां-परखचां, ब्यांव मंडै है साथड़ली ।459।

सासरियै मैं सासू दोरी, ताना देवै नंणदड़ली।
जेठांणी रो कांम छूटग्यो, काम करूं दिन रातड़ली ।460।

सासू म्हारी बुरी घणी है, घर-घर बातां बींदणली।
सासू बिन सासरियो सूनो, कांमण मूंड़ै बातड़ली ।461।

---

1. शादी-मायरे पर गांव के लोग खुलकर खर्च करते है।
इस मनोबल के साथ जीते है कि कर्ज शीघ्र ही उतार देंगे।

बात सगाई लांबी होजा, पंचां पड़जा बातड़ली ।
बेटी घर मैं मावै कोनी, ब्यांव रचादै मावड़ली ।462।

धीवड सोळा साल होवतां, बावल उड़जा नींदड़ली ।
मावड़ देवि-देवता ध्यावै, दिखै जोड़ती हाथड़ली ।463।

मधरा-मधरा गीत सुणीजै ब्यांव टांकलै गांवड़ली ।
मांड राग धोरलियां गूंज्यां, थमै बटावू डांडड़ली ।464।

खुसी पड़ै तो करी भाइड़ा, ब्यांव सगाई चाकरड़ी ।
बिन राजीपै अेक हुवै नीं, घर-घर वातां गांवड़ली ।465।

कांकण-डोरा हाथ पगां मैं, नीचै लटकै कोडड़ली ।
मुरचै माथै मोळी बांधी, लाल मेहंदी हाथड़ली ।466।

टावरियां रा ब्यांव रचावै, दीसै गुड्डा गुड्डड़ली ।
गोदयां ऊंच्यां फेरा खावै, बावल साथै मावड़ली ।467।

जेठ असाढां ब्यांव हुवै है, आंधी चालै धाकड़ली ।
लू लपटां नै भूल्यौ विसरयौ, जीमै बैठयौ लाफसड़ी ।468।

तेरह बरसां हुई लाडली, वर देखै है डोकरड़ी ।
बूढा-ठाढा नै परणावै, रिपिया लोभण मावड़ली ।469।

बावल रीत लेवतो दीसै, बेचै घर री धीवड़ली ।
बिन रिपिया, बिन गैणै भाई, ब्यांव हुवै नीं गांवड़ली ।470।

ब्यांव सगाई आणै माथै, उछब छायजा गांवड़ली ।
रंग-रंगीला घर दीसै है, राती दीसै भींतड़ली ।471।

राग-रंग धोरलिया वसिया, कण-कण गावै रेतड़ली ।
भणत बोलता, भजन गावता, ब्यांव तिवारां गीतड़ली ।472।

---

1. मरुप्रदेश में राग-रंग प्रतिदिन होते रहते हैं। खेतों में भजन-वाणी तथा ब्यांव-त्योहारों पर गीतों की मीठी गूंज कानों में पड़ती रहती है।

अखरो नखरो

गाल गुलावी नैण रसीला, नाक सुवै री चांचड़ली।
मदमातै जोवनियै माथै, होट फूल री पांखड़ली।473।

ऊंची-ऊंची दिखै कांचळी, रतन कचोळौ सूंडड़ली।
पतळी पेट पीपळ रौ पत्तौ, कमर सांकड़ी मूठड़ली।474।

लांबी वांह चपेरी डाळी, रसळा फळियां[1] आंगळड़ी।
पान पीक रा गिटतां दीसै, गोरी पतळी चांमड़ली।475।

झिणै घुंघटियै मूंडौ दीसै, पलकां प्याला आंखड़ली।
नवल बनै रा नैण मिल्यां सूं, डसती लागै सांपणली।476।

गुलगुलियै गालां नै लीयां, फिरै भाजती गोरड़ली।
पतळै-पतळै होटां वीचां, मोती जैड़ी दांतड़ली।477।

राती-राती दिखै चामडी, चमकै मूंडौ सोनड़ली।
होटां लाली लाल सुरख है, सुरंग सुपारी अेडड़ली।478।

तीखी भोवां खीच कवांणा, तिरछी लांबी रेखड़ली।
वट खावोड़ी पलकां दीसै, खंजण जैड़ी आंखड़ली[2]।479।

केस अणी पर मोती चमकै, जद न्हावै है गोरड़ली।
कंचन काया माथै ढलकै, पूगै ऊंडी सूंडड़ली।480।

भरियौ-तरियौ हिवड़ौ दीसै, ऊसा[3] भारी गोरड़ली।
हंसला रळ-मिळ सूता दीसै हिवड़ै माथै कांमणली।481।

---

1. पेड़ का नाम जिस की फलियां पतली और लम्बी होती है।
2. खंजण पक्षी की आंख की तरह सुन्दर आंख। 3. मादा पशुओं के थन तथा थनों के ऊपर की थैली जिसमें दूध रहता है।

लांबा-लांबा केस दिखै है, विछिया ऊपर धरतड़ली।
फूल वनी री वनड़ौ सूतौ, मीठी लेतौ नींदड़ली।482।

रूप डळां री गजबण ऊभी, गंठ गंठोली गोरडली।
नख लाग्यां सूं लोही झलकै, गोरी-गोरी चामड़ली।483।

काळी लटां वटां खायौडी, पूगी कांमण ठोडड़ली।
गाला माथै भंवरा गुडकै, मघरी चाल्यां पूनड़ली।484।

उभरयौ हिवड़ौ ऊंचौ दीसै, दिखै कबूतर चाचड़ली।
सरवर तिरता हंस दिखै है, ठम-ठम चाल्यां गोरड़ली।485।

तीन सळा री पेड्यां दीसै, पेडू ऊपर कांमणली[1]।
रूवां डांडी वणी दिखै है, सूंडी ऊपर गोरडली।486।

घटी पाट ज्यूं ढगर[2] गोरड़ी, कसियौ घाघर डोरडली।
ऊंचा नीचा होता दीसै, पांणी लातां सोनडली।487।

नख अंगूठां उभरचा दीसै, धोरा धरती वैटड़ली।
सीस सरूप नारेल कांमणी, देवळ थाना जांघड़ली।488।

हिंगळू रंग री कंचन काया, घर-घर दीसै वींदणली।
धोळा दांत वतीसी चमकै, वासग नागा चोटड़ली।489।

वजती वीणा कांन सुणै है, जद बोलै है कांमणली।
हस-हस वातां जदै करै है, फूल झड़ै है पांखड़ली।490।

सीतळ पातळ धीमी चालां, बाळू धरती वहवड़ली।
कांणै घूंघट मिनख देखलै, हिवड़ै वसगी लाजड़ली।491।

हाडल-गुडल डील रै माथै, लांवी नस है गोरड़ली।
डीगी-डीगी दिखै लुगायां, घर-घर धोरा धरतडली।492।

---

1. नाभी के नीचे तीन सळ पड़ते दिखाई देते हैं। नाभी के ऊपर रुओं से बनी पगडंडी जो वक्षस्थल तक होती है। 2. नितम्ब।

केस संवारै पाट्यां पाड़ै, रूप निखारै मरवणली ।
गैणां गाभा पहरयां ऊभी, परी दिखै है सोनड़ली ।493।

दो पलकां रै वीच गोरड़ी, खींचै काजळ रेखड़ली[1] ।
आभौ धरती मिळघा वीच मे, पळकां मारै मेखड़ली ।494।

मकराणै री दिखै मूरती, दूधां न्हायी गोरड़ली ।
मरुधरां रूपां री भारी, घर-घर मूमल मरवणली ।495।

अेंड़ी-बेंड़ी[2] निजर न आवै, इण धरती री धीवड़ली ।
धोरलियां रौ रूप लियौ है, सोनल रूपल सायड़ली ।496।

जेसाणै रा पीळा भाटा, पीळी हुळकां कांमणली ।
सोनलियै रूपा नै लीयां, गजबण ऊभी टीबड़ली ।497।

कमर दूलडी कांमण नाचै, दै फटकारा लूंबड़ली ।
तीज तिवारां घूमर घालै, लटका देती हाथड़ली ।498।

घर-घर चांद पुनमरौ निकलै, बण-ठण चाल्यां सोनड़ली ।
हिरणी जिसड़ी दिखै चालती, लांबी पतली टांगड़ली ।499।

लांबौ-चोड़ौ सीनौ लीयां, ढोलौ पोढघौ[3] सैजड़ली ।
हाथ फेरती गजबण निरखै[4], केस भरोड़ी छातड़ली ।500।

नई नवेलण[5] बण-ठण बैठी, ढळतां आधी रातड़ली ।
राता डोरा डोळां छाया, काजळ घुळग्यौ आंखड़ली ।501।

इंदर लोक सूं उतर अपसरा, बसगी धोरा धरतड़ली ।
इमरत-न्हाखै रस बरसावै, ऊभी ऊपर टीबड़ली[6] ।502।

आभै चांद पुनमरौ निसरचौ, मूमल ऊभी छातड़ली ।
सरमा मरतौ ओटौ[7] लीनौ, घूंघट काढचां बादळड़ी ।503।

---

1. रेखा 2. कुरूप 3. सोना 4. देखना 5. हाल ही में शादी हुई हो । 6. ऊंचे टीले 7. आड़ में छुपना

हथणी जिसड़ी दिखै चालती, मरूधरा री गोरड़ली ।
घेर घुमेरां पहर घाघरौ, गजबण पूगै सैजड़ली ।513।

झींणा गाभा कांमण पहरचा, पीव मिलण री रातड़ली ।
चांद पुनमरी रातड़ली मैं, झांकै अंग-अंग गोरड़ली ।514।

दिनड़ौ ऊग्यां पूछै ताछै, घरां लुगायां बातड़ली[1] ।
सरम लाजड़ी घणी सतावै, माथौ टेक्यौ गोडड़ली ।515।

साथी थारी बातड़ली मैं, किण विद रीझी भावजड़ी ।
मुळक-मुळक भाईड़ी कहवै, राता बीती बातड़ली[2] ।516।

रातड़ली री बातडली मैं, मनड़ौ उळझै गोरड़ली ।
नाचै कूदै हसी-खुसी मैं, करै मस्करी साथड़ली ।517।

हेतालू सैजा पर सूतौ, कांमण चांपै टांगड़ली ।
कंवळै-कंवळै हाथां माथै, पीव उडावै मोजड़ली ।518।

बादळ लोरां पांणी वरसै, मरवण ऊभी छातड़ली ।
केस बिखेरचा हसती दौड़ै, ढोलौ पकड़ै हाथड़ली ।519।

बीच झरोखां गजवण ऊभी, सैनी देवै आंखड़ली ।
हाथ कामनै छोडै छिटकै, ढोलौ पूगै सैजड़ली ।520।

गोरी धण सूं नैण मिल्यां सूं उडी सायवै नींदड़ली ।
खांणो पीणौ स्सै विसरायौ, वैठौ काटै रातड़ली ।521।

धीमा हेला करै इसारा, हुयां चांदणी रातड़ली ।
पीव सैन नै कांमण समझै, जीवा हल-चल साथड़ली ।522।

ऊंठ बैठतां गजबण दळकी, छैलै थामी हाथड़ली ।
सिणगारां सूं सजी गवरजा, ढोलौ निरखै मरवणली ।523।

---

1. सुहागरात के दूसरे दिन घर की औरतें दुल्हन से रात की बातें पूछती हैं। शर्म के मारे अपना माथा गोडों के बीच में ले लेती है।
2. दूल्हा अपने साथियों को रात्रि की बातें बता देता है।

सायबजी सूं मिलवा खातिर, टुरी घरां सूं गोरड़ली ।
कांटलियां री पीड़ा भूली, भाजी जावै मूमलडी ।524।

घटाटोप बादळिया छाया, गुप्प अंधारी रातड़ली ।
पीव मिलण री मारग सोधै, आभै खीयां बीजड़ली ।525।

ढोलो ऊभो हेलो देवै, भणक पड़ै जद मरवणली ।
सरम लाजडी भूली विसरी, चढै पीव री सांढड़ली ।526।

कांमण पीवर जाय वैठजा, पीव जीव नीं चैनड़ली ।
सासरियै मै पूग अचपळी, मनरी करलै वातड़ली ।527।

विन बोल्यां सूं वात हुवै है, आंख्यां मिलियां आंखड़ली[1] ।
ढोलो मरवण दोनू समझ्या, अेक-दुजै री बातड़ली ।528।

सिझ्यां पड़चा सूं घर मैं दीसै, गबरू सूतो सैंजड़ली ।
साथीड़ां री साथ छोड़दचो, आछो लागै वहवड़लो ।529।

दिन मैं कांम हियै सू लागै, कांमण रातां सैजड़ली ।
भरै सियाळै रळ-मळ वैठै, लांबी चालै वातड़ली ।530।

ताका तोली करती दीसै, पीव बुलायां कांमणली ।
हिचका खाती[3] पगल्या[4] धरती, चढती दीसै छातड़ली ।531।

सावण महिणो घणो सुहावै, हेला सैनी वहवड़लो ।
हरी भरी गोरड़ली दीसै, टावर रमसी गोदड़ली ।532।

बुढै-बडेरां लाज घणी है, घूंघट काढै बींदणली ।
मांझल[5] रातां बींद पगलिया, पूगै गजबण सैंजड़ली ।533।

नोका भोंको दिन मै होलै, झगड़ा झगड़ो रातड़ली ।
ढळता आंसू वालम पूछै, रीझै धीजै गोरड़ली ।534।

---

1. आख से आंख मिलते ही इशारों में बात हो जाती है । 2. नई-नई शादी होने पर अपने मित्रो को भूल कर दुल्हन के पास रहता है ।
3. झटका खा-खाके 4. पांव 5. आधी रात

अगलै आसण मारू बैठ्या, लारै बैठी मरवणली ।
रिंधरोई रै बीचां निरखै, ढोलै री गळ मूंछड़ली[1] ।535।

झींणै घूंघट मनड़ौ मोहै, थळवट पिणघट बहूवड़ली ।
काम बांण नैणां सूं छोडै, काजळ सारयां आंखड़ली ।536।

मेळां ठेळां डेरा नाख्या, बैठै नीचै गाडड़ली ।
अेकल बहूवड़ देख सायबौ, सूंपै पान सुपारड़ली[2] ।537।

रात होयां सूं सोवण टुरगी, घर मैं जागै डोकरड़ी ।
सासू पगल्या चांप्यां सोवै, गोरी पूगै सैंजड़ली ।538।

कोछा मारयां करै कांमड़ौ, गजबण साथै खेतड़ली ।
पलटा खावै मुड़-मुड देखै, ताका झांकी आंखड़ली ।539।

दोफारां मैं खेतां बैठ्यौ, भातौ लावै बहूवड़ली ।
भूख तीस नैं भूल्यौ बिसरयौ, सायब देखै कांमणली ।540।

मिरगानैणी सायब निरखै, ढोलौ छांगै खेजड़ली ।
कुवाड़ियौ लूंखां मैं उळझ्यौ, मनडौ उळझ्यौ गोरड़ली ।541।

रात चांदणी खेत रुखाळै, घर मैं सूती सोनड़ली ।
कांम काज विसरायां बैठ्यौ, आंख्यां उडगी नींदड़ली ।542।

झिरमिर झिरमिर मेहौ बरसै, मधरी चालै पूनड़ली ।
गजबण ऊभी हेला देवै, पोढौ ढोला सैंजड़ली ।543।

आंख फरूकै भुजा फरूकै, जणै फरूकै सूंडड़ली ।
आज कंत नैं आयां सरसी, सुणलै साथण बातड़ली ।544।

गवरू करार मान घणौ है, हठ्ठ घणौ है गोरड़ली ।
अक-दुजै री बातां माथै, जी लै साथी साथड़ली ।545।

---

1. ऐसी मूंछे जो जुल्फों के साथ मिली हो 2. मेले में गाडी की छाया बैठकर खाना पीना किया जाता है ऐसे समय जब दुल्हन अकेली दिखती है तो दूल्हा पान सुपारी देता है।

ऊजळी

सियाळै री रात अंधारी, वादळ वरसै धाकड़ली।
चेतौ भूल्यौ कुंवर पड्यौ है, मो'रां माथै घोड़कड़ी।546।

ऊंचै धोरै जगै दीवटौ, घोड़ी देखै आंखड़ली।
धीमा-धीमा पगल्या धरती, पूगै फळसै झूंपड़ली।547।

ठंडौ पड्यौ कुंवर दिखै है, पथरीजी है आंखड़ली।
अमरौ चारण सांभ उतारै, लाय सूवावै मांचड़ली।548।

लकड़्या तिणखा स्सैं की बाळ्या, बाळी घर री गूदड़ली।
इण जतना सूं कांम सरै नीं, कुंवर टळै नीं मौतड़ली।549।

बूढौ चारण आजै-भाजै, समझ न आवै बातड़ली।
सुवक्यां खातौ कुंवर पड्यौ है, पल-पल गिणतौ सांसड़ली।550।

सरणागत री मौत हुवै ली, जीवां आकड़-वाकड़ली।
वेटी आगै वावल रोवै, आंसू चालै धारड़ली।551।

इण जलम मैं कदै नीं देख्या, आंसू वावल आंखड़ली।
मूंह उतारयां ऊजळ ऊभी, पूछै ताछै वातड़ली।552।

वावळ बोल्यौ सुणलै लाडल, धरया राखी साखड़ली।
पावणै री ज्यांन बचाई, भूल्यां विसरयां लाजड़ली।553।

मूंडै सूं मूंडौ चिपकायां, कुंवर टळेली मौतड़ली।
वावल वातां सुणी ऊजळी, सरमा मरगी धीवड़ली।554।

जालौर के घूमली ढीकाने का राजकुमार सर्दी में शिकार खेलते हुए बेहोश हो जाता है। घोड़ी उसे अमरे चारण की झोंपड़ी के सामने ले जाती है। अमरा ऊजळी को आग जलाने हेतु कहता है परन्तु इस आग

गाभा नाख्या टुरी ऊजळी, छोडी छिटकी लाजड़ली ।
वीद पगलिया भरती चाली, पूगी कुंवरा मांचड़ली ।555।

गळबाथड़ली भरी ऊजळी, होटां पावै पूनड़ली ।
चंदण रूंखा नागण लिपटी, मद मस्ती में गोरड़ली ।556।

लाय पलीता लपटां उठगी, जीव जेठवै आगड़ली ।
धीमो-धीमो लै पसवाड़ो, खोली दोनूं आंखड़ली ।557।

पलटा खाती दिखै ऊजळी, गुड़कै बीचां सैजड़ली ।
सुध-बुध भूली कांमण सूती, पलकां मूंदयां आंखड़ली ।558।

सोनपरी सी ऊजळ दीसै, सूती ऊपर सैजड़ली ।
दूधां न्हायी दिखै कांमणी, ज्यूं पूनम री रातड़ली ।559।

चंदतौ सैजा बीच सज्यौ है, ठंडी करदै आंखड़ली ।
कुवर टंटोळै हवळै-हवळै, कंचन काया गोरड़ली ।560।

जद ढोलै सूं आंख मिळै है, हलचल मचजा जीवड़ली ।
वाथा भरतौ कुंवर दिखै है, सूतौ ऊपर सैजड़ली ।561।

कुवर ऊजळी दोनूं घुलग्या, ज्यूं पांणी में साकरड़ी ।
जीवा सू जद जीव मिल्यौ तौ, गजवण सूंपी पूंजड़ली ।562।

कुंवर किया है कौल ऊजळी, सोगन म्हानै साथड़ली ।
पटरांणी री ठोड़ बैठसी, राज घूमली धरतड़ली ।563।

धोरै ओटै मिलता दीसै, मेह जेठवौ साथड़ली ।
गळबाथड़ली भरता-भरता, गुड़कै ऊपर टीवड़ली ।564।

कुंवरा गोदयां ऊजळ सूती, हस-हस करती बातड़ली ।
मधरी-मधरी वातां बीचां, ढळती दीसै रातड़ली ।565।

से कुंवर की बेहोशी नहीं टूटती है । अमरा ऊजळी को अपने शरीर की गर्मी देने हेतु कहता है बेटी के आनाकानी करने पर कहता है कि मैं तेरी शादी इसके साथ कर दूगा । इस पर ऊजळी ने अपने शरीर की गर्मी

चारण बेटी बैन हुवै है, गांव घरां री रीतड़ली।
लोक लाज सूं डरतौ-डरतौ, कुवर लुकावै आंखड़ली।566।

कोल भूलग्यौ, मुड़ नी आयौ, जुग बीत्या दिन रातड़ली।
ऊजळ वाटां दिखै जोवती, ऊभी ऊंची टीबड़ली।567।

बीती बातां याद करै है, अैकल सूती सैजड़ली।
आंसूड़ां रा बाळा बहवै, डुसका खावै गोरड़ली।568।

तनड़ौ घरां गांव में बसियौ, मना जेठवै यादड़ली।
भूली विसरी दिखै ऊजळी, बात करै जद साथड़ली।569।

होडा-होडी आंसू बहवै, गाला माथै कांमणली।
ठोड़-ठोड़ पर मोती बिखरया, माळा टूटी डोरड़ली।570।

भंवर याद मैं हिवड़ौ उफणै, आंख्यां सोधै कुरजडली।
जेठै नै म्हारौ हाल कहिजै, उड़ती जा थूं बैनड़ली।571।

बीती-बातां भूलौ ऊजळ, ब्याव हुवै नीं साथड़ली।
धन-धान सूं माटा भरलौ, सूंपूं थानै रोकड़ली।572।

जीवा कीमत जीव जांणसी, कुंवर समझलौ बातड़ली।
मरणौ जीणौ साथ पीव रै, प्रीत घरां री रीतड़ली।573।

ऊजळ दियौ सराप कुवर नै, ऊभो ऊपर धरतड़ली।
वळतां झळतां जीवा लागो, तपती दीसै चामड़ली।574।

ल्हास वणियौ पड़यौ जेठवौ, सुणी ऊजळी बातड़ली।
पगां उभाणी भाजी कांमण, जाय कूदगी आगड़ली।575।

मेह जेठवौ ऊजळ दोनूं, कण-कण वसिया रेतड़ली।
धोरा धरती घर-घर गूंजै, प्रीतड़ली री गीतड़ली।576।

देकर कुंवर की जान बचाती है। दोनों में प्रेम सम्बन्ध स्थापित हो जाते हैं। कुंवर ऊजळी को अपनी पटरानी बनाना चाहता है परन्तु चारण बेटीबहन होती है अतः शादी नहीं होती है। ऊजळी कुंवर को श्राप देती है और कुंवर मर जाता है। ऊजळी कुंवर के साथ सती हो जाती है।

गैंणा

झूमर लटकै बिछिया बाजै, दांतां चमकै चूंपड़ली[1]।
कैस बिणां[2] रै माथै ऊपर, मोती लड़ियां चोढड़ली ।577।

हीरा मोती नथली पहरी, लटकै नीचै नाकड़ली ।
ऊंची-नीची होती दीसै, बात करै जद गोरड़ली ।578।

सोनै री गुलमेख[3] जड़ी है, दीसै गजबण दांतड़ली ।
हस-हस कांमण बात करै जद, पळका मारै मेखड़ली ।579।

ढोलै मिलबा मरवण चाली, पग मैं झणकी आयलड़ी ।
हळवा-हळवा पगल्यां धरती, चूड़्यां थामी हाथड़ली ।580।

कड़लां उपर आवळा पात्यां, गैणौ पूग्यौ गोडड़ली ।
ठुमक-ठुमक कर दिखै चालती, मचका[4] देती कांमणली ।581।

हाथा चांदी चूड़ पहरली, पोई लांबी कीलड़ली ।
सासरियै नै कांमण चाली, चढ़ियां ऊपर सांढड़ली ।582।

बाजूबन्द बूक्यां पर बाध्यां, दिखै लटकती लूम्बड़ली ।
आती जाती दै फटकारा, मेळां खेळां बहवड़ली ।583।

झीणै ओढण सामै दीसै, पनड़्चा तोमण सोनड़ली ।
पहरयां ओढयां गजबण ऊभी, घूंघट काढयां चूदड़ली ।584।

हाथ गूजरी अंणकै झणकै, पगल्यां बाजै पायलड़ी ।
आंगणियै मैं ऊभी गजबण, घूमर घालै धाकड़ली ।585।

---

1. दातों में जड़वाया जाने वाला छोटा सा सोने का आभूषण 2. बालों को ललाट तक आगे लाकर चिपकाना 3. सोने की छोटी कील जो दात के बीचोंबीच लगाई जाती है। 4. झटका दे देकर।

कूची-कस घाघरियै टाग्यौ, नाड़ौ कसियौ डोरड़ली ।
घूघरिया झंणकारा देती, घर-घर फिरलै गोरड़ली ।586।

पगा पान पगल्यां पर दीसै, लटकै चांदी लूंबड़ली ।
नखल्यां ऊपर पहर नखलिया, छम-छम चालै कांमणली ।587।

घाघर माथै दिखै कंदोळी, गजबण चाली खेतड़ली ।
ऊंचा नीचा ढगर हुयां सूं, झणकै घूघर धाकड़ली ।588।

टंणका झण-भण दिखै बाजता, ठहरकौ दियां अेडड़ली ।
जोबन भळकै है कांमण रौ, जणै उठै है टांगड़ली ।589।

गळै टेवटौ दमकै-चमकै, बण-ठण चाल्यां गोरड़ली ।
चांदी सोनल हंसली पहरी, ब्यांव तिंवारां सोनड़ली ।590।

चाकरड़ी नै ढोलौ चाल्यौ, मरवण ऊभी छातड़ली ।
हाथ-फूल चांदी रौ झणकै, झाली देतां कांमणली ।591।

कंठी-कंठ पर सजी-धजी है, चमकै हीरा धाकड़ली ।
माथै टीकी भळ-भळ पळकै, तिणखौ चमकै नाकड़ली ।592।

खळ-बच खळ-बच चुड़लौ बाजै, कांम करै जद बहवड़ली ।
विलियां माथै तेल चोपड़्यां, चमकै हाथी दांतड़ली ।593।

फिणी नाक पर जद पहरै है, मूंडौ चमकै गोरड़ली ।
कानां बीचां पहर सुरलिया, गवरल ऊभी टीबड़ली ।594।

मुरचै माठी, चांद चोटड़ी, बांधी रेसम डोरड़ली ।
बोच आंगणियै. बैठी कांमण, मधरी गावै गीतड़ली ।595।

सोनल चांदल तखतचां पहरी- पोयां रेसम डोरड़ली ।
भरियै-तरियै हिवड़ै माथै, ओपै बहवड़ धाकड़ली ।596।

चंदण हारनै पहर कांमणी, बैठी ऊपर सैजड़ली ।
सोनल रूपल किरण निसरियां, मूंडौ चमकै सोनड़ली ।597।

चूड़चां आगै पहर मटरिया, टुरी सासरै बींदणली ।
जणै गोरड़ी घूंघट खीचै दै झणकारा हाथड़ली ।598।

ऊंची वंगड़चां गोळ चकरिया, चमकै दांणां चांदड़ली ।
हाथां रळका देती चालै, मेळां-ठेळां गोरड़ली ।599।

मोहन माळा गोळ मणीका, पोया गजवण डोरड़ली ।
लांबी नस पर दिखै पहरती, दोलड़ करती कांमणली ।600।

इली बोरलौ अळकै-पळकै, भालर लटकै सोनड़ली ।
चांद-पुनम रौ दिखै निकळतौ, घरां-घरां सूं गांवड़ली ।601।

बींटी पहरचां गवरल दीसै, घर-घर सोनल चांदडली ।
मिनख लुगाई दोनूं पहरै, चिठूली री आंगळड़ी ।602।

अळका पळका टडा करै है, पहरचां कांमण हाथड़ली ।
संठवा-संठवा दीसै बूकिया, हाथां थामचां मटकड़ली ।603।

भुजबंध बाध्यां गजबण चाली पांणी लावण नाडड़ली ।
हीरा मोती जड़चा दिखै है, लटकै सोनल सांकळड़ी ।604।

माथै ऊपर टीडी भळकौ, दमकै चमकै बहुवड़ली ।
तीज तिंवारां घूमर घालै, झीणी ओढचां चूंदड़ली ।605।

मंगळ-सूत्र नै पहर कांमणी, ब्यांव रचावै गांवड़ली ।
सांसा वीचां वस्यौ साथणी, धोरलियां री बेटड़ली ।606।

आड पहरियां गांवां आवै, सासरियै मैं वींदणली ।
घरां-घरां सू आय लुगायां, निरखै ऊभी बहुवड़ली ।607।

कांन भरोड़ा दिखै गोरड़ी, बाळघां पहरी चांदड़ली ।
पीवरियै नै जाती दीसै, भाई साथै वैनड़ली ।608।

चमक-चूड़ि चिलकारा मारै, चमकै-दमकै गोरड़ली ।
पगां पोलरो पहर कांमणी, कांम करै दिन रातड़ली ।609।

कड़िया हाथ पगां मे दीसै, टाबर गबरू डोकरड़ी।
भूखा घाया सगळा पहरै पीतळ चांदी सोनड़ली।610।

कुण्यां माथै दीसै कतरिया, राती चुट है चामड़ली।
मुकलावौ कर चाली गजबण, पूगै ढोलै गांवड़ली।611।

केसां माथै बांध दामणी, पनघट चाली बहुवड़ली।
आता जाता रसै देखै है, झीणी ओढयां चूंदड़ली।612।

वेवड़िया चिलकणिया लोना, नुंई बींदणी गांवड़ली।
गैणां गाभा अदळै-बदळै, पांणी जाती गोरड़ली।613।

गोखरू कांनां मै पहरयां, गबरू उभौ टीवड़ली।
छोटा मोटा मुरक्यां पहरै, ऊपर सोनल सांकळड़ी।614।

व्यांव तिंवारां गबरू पहरै, हीरा पन्ना कंठड़ली।
वंध गळै री कोट पहर कर, गूंढयां ढाकी सोनड़ली।615।

पग मै नेवर दै झणकारा, कांम करै जद खेतडली।
कांणै घूंघट गोरी निरखै, सायबजी री टांगड़ली।616।

पालणियै मै टाबर सूत्या, सेनीं समझै बातड़ली।
हाथ पगां मै घूघर बाजै, जद मारै है लातड़ली।617।

कमर तागड़ी बांध्यां दिसै, घर-घर टाबर टींगड़ली।
छम-छम करती पायल बाजै, ठिब्बा खाता टांगरड़ी।618।

छाळी गळ घूघरिया बाजै, टोकर बाजै गावड़ली।
कोड़ल्यां री माळा पहरयां, भैसड़ चाली रोहिड़ली।619।

गैणी पग मै दै झणकारा, मेळां ठेळां साढड़ली।
घोड़ी गळ मै दिखै कंठलौ, लटकै चांदी सोनड़ली।620।

चांदी जोड़ पगां मै पहरी, हरखै कोडै बींदणली।
तीज तिंवारां मेळां ठेळां, पहर दिखावै साथड़ली।621।

चोटी सूं अेड़ी तक सजगी, दिखै गवरजा गोरड़ली ।
फूलां हळकी गजबण दौड़ै, हस हस करती बातड़ली ।622।

आंगण बीचां बैठी दीसै, घूंघट काढ्यां बींदणली ।
गैणां गाभां मोह घणौ है, दिन खोलै नीं रातड़ली ।623।

बिन गैणां रै रूप अधूरौ, धोरा धरती वहवड़ली ।
पहरयां ओढयां मेळै जावै, हस-हस करती बातड़ली ।624।

घर-घर गीत गैण रा गावै, हेला देती गोरड़ली ।
सायब बैठ्यौ बात समझलै, पूगै सोनी हाटड़ली ।625।

हाथ पगां मैं गैणौ झणकै, बैठी गजबण गाडड़ली ।
मेळै गेलां सायब दीस्यां, मधरी गावै गीतड़ली ।626।

बिन गैणां रै ब्यांव हुवै नीं, घरां-घरां मैं रीतड़ली ।
सोनै चांदी टूमां चढतां, पक्की होजा बातड़ली ।627।

भूख तीस नै भूली बिसरी, बैठी सोनी हाटड़ली ।
गैणौ घड़तौ देख कांमणी, मूंडै दीसै हांसड़ली ।628।

जद सासूजी गैणौ सूंपै, बाछा खिलजा बीदणली ।
डोकर माचै सूती दीसै, पगल्या चांपै गोरड़ली ।629।

गीत ढाळ सू मीठा लागै, गैणौ मीठौ नाचड़ली ।
बिन गैणै रै नाच अधूरौ, नीं ऊठै है टांगड़ली ।630।

आधी रातां ढोलौ आवै, गैणौ घाल्यां जेबड़ली ।
रूठी मरवण राजी होजा, परख्यां सोनल हारड़ली ।631।

पाड़ोसण री देख गैणियौ, करै ईसकौ गोरड़ली ।
आकड़-बाकड़ मिटै जीव मै, गैणौ परख्यां हाथड़ली ।632।

घूघरिया घमकावै कांमण, गवरल आगै गोरड़ली
घेर घाघरौ देती-देती, नाचै गजबण धाकड़ली ।633।

जणै गैणियौ गजवण देखै, ठंडी होजा आंखडली।
मनड़ौ तनड़ौ दिखै सूंपती, सूपै जीवा पूजड़ली।634।

गैणी गांठी मान दिरावै, राखै घर री लाजड़ली।
धन्न-धान नै दिखै आंकता, मिनख लुगाई गांवड़ली।635।

धायां रौ सिणगार गैणियौ, भूखौ पावै रोटड़ली।
गैणौ म्हारै जीव जड़ी है, बिन गैणै नीं चैनड़ली।636।

जणै गैंणियौ बिकती दीसै, धण आसूं है आंखड़ली।
गुम-सुम बैठी दिखै आंगणै, मूंह उतारचा गोरड़ली।637।

गैंणौ हिवड़ै दूर करै नीं, बेचै डांगर खेतड़ली।
बिन गैंणै रै जीणौ दोरौ, कांमण मूंडै बातड़ली।638।

चोर डाकुवां वाचण सारू, गैंणौ बूरै धरतड़ली।
मरती-करती ठोड़ बतावै, डोकर कहती बातड़ली।639।

गैणै री है साख मौकळी, झट दिरावै रोकड़ली।
अटक्या लटक्या कांम हुवै है, आ है जग री रीतड़ली।640।

जै कांमण रौ गैंणी गुमजा, छूटै पांणी रोटड़ली।
आंख्यां आंसू धारां चालै, जीव पड़ै नीं चैनड़ली।641।

साचौ साथी गैणौ म्हारौ, कांमण समझै बातड़ली।
जद आफतड़ी आन पड़ै है, दिखै राखतौ लाजड़ली।642।

बिन गैणै मरवण नीं राजी, ढोलौ जाणै बातडली।
मोकां ठोकां देती दीसै, ऊभी कांमण तानड़ली।643।

मरणै परणै गैणौ राखै, गांव घरां री लाजड़ली।
बो'रौ रिपिया झटपट देवै, गैंणौ परख्यां हाथड़ली।645।

चौमासै मैं धौरा धरती, गैणौ फूलां पांखड़ली।
हरियाळी री चूंदड़ ओढयां, मनड़ौ मोवै धरतड़ली।646।

गाभा

रेसम कसणां कसी कांचळी, मायँ ओढी चूंदड़ली ।
असी-कळयां रौ पहर घाघरौ, घूमर घालै गोरड़ली ।647।

सोनल-चांदल जड़ी कनारां, बीचां फूंला पांखड़ली ।
सासरियै नै लाडल चाली, घूंघट काढयां लूगड़ली ।648।

पंवरी ओढयां वैठी दीसै, आंगण बीचां बींदणली ।
झिलमिल झिलमिल दिखै चिलकता तारा ऊपर ओढणली ।649।

रंग-रंगीला गाभा पहरया, कवरी कवरी छींटड़ली ।
हरखै कोडै मेळै चाली, काजळ घाल्यां आंखड़ली ।650।

हाट-हाट पर विकती दीसै, आटी डोरा कांगसड़ी ।
व्यांव तिवारां पहरण सारू, लेती दीसै कांमणली ।651।

नूवां गाभा अंतर लगायौ, मेळै टुरगी गोरड़ली ।
हींडां हींडै आजै भाजै, खिलका करती साथड़ली ।652।

सायवजी रौ नाम लेवतां, कांमण लागै लाजड़ली ।
हाथां ऊपर नाम खुदावै, मेळां ठेळां वहवड़ली ।653।

टुक्यां कांचळी रिपिया घाल्या, पल्लै बांधी रोकड़ली ।
चीज-बुसत लेवण रै खातिर, टुरी चौवटै गोरड़ली ।654।

काच घालिया कोट पहरलै, झीणी ओढी ओढणली ।
आसे पासै चिलका मारै, जद बहवै है कांमणली ।655।

बंडी पहरयां ऊभौ दीसै, करसौ बीचां गांवड़लो ।
ब्यांव टांकलै वागौ पहरै, बेटौ घोरा धरतड़ली ।656।

काळा डोरा वांध्यां सूत्या, पींगै टावर गांवड़ली ।
मावड़ बैठी हींडा देवै, गीगौ लेवै नीदड़ली ।657।

कांमण गोदचां दिखै गीगलौ, पहरचां भुगलौ टोपड़ली ।
पूत तणा ही मान घणौ है, घर-घर गांवां बहवड़ली ।658।

मोत्यां लाला जड़ी इंढांणी, माथै राखी गोरड़ली ।
पांणी घड़िया लाती दीसै, घर-घर कांमण गांवड़ली ।659।

ब्यांव अेढै गांव डावड़वयां, पहरै घाघर कुड़तड़ली ।
माथै ऊपर केस गूंथियां, टिरती दीसै चोटड़ली ।660।

नुई अंगरखी पहरचां ऊभौ, माथै बांधी पागड़ली ।
गांव आंतरा मिलवा चाल्यौ, हाथां लीयां डांगडली ।661।

बुढा-बडेरां ऊंची धोती, गबरू नीची अेडड़ली ।
बुढचां- बडेरया धाबळ पहरै, लेंगौ पहरै वींदणली ।662।

अंतर फवलिया कांनां टांग्या, कांधै लीनी पोटड़ली ।
सासरै नै चाल्या भंवरजी, चड़ चूं बोलै मोजड़ली ।663।

न्हाणौ-धोणौ ताल तळाबां, गाभा सूकै झाड़कड़ी ।
पाळा माथै ऊचौ ऊभौ, मारै लांगां धोतड़ली ।664।

कोट जेब मैं घाल रुमाली, वण ठण ऊभौ टीवड़ली ।
राठोड़ी फेंटै नै बांध्या, बटड़ा देवै मूंछड़ली ।665।

कांधै माथै गमछौ धरियां, सायब ऊभा टीबड़ली ।
साटण गाभा पहर कांमणी, मेळै टूरगी साथड़ली ।666।

सिरख पथरना बणवा खातिर, मखमल लीनी हाटड़ली ।
सीयाळै मैं ओढयां सूत्या, घर-घर साथी साथड़ली ।667।

पिणहारी पांणी नै चाली, धरियां माथै बेवड़ली ।
नांव कोराय सायबजी रौ, पहर रेसमी कुड़तड़ली ।668।

वियोग

हूं विसरावूं जीव न बिसरै मिणधर थारी यादड़ली ।
लाख जतनड़ा कर-कर हारी, जीव पड़ै नीं चैनडली ।669।

गालां माथै आंसू ढळक्यां, काजळ वहग्यौ आंखड़ली ।
रोतां-रोतां नैण सूजग्या, सूनी दीस्यां सैजड़ली ।670।

बीज पळा-पळ[1] दिखै खीवती, बरसै बादळ धाकड़ली ।
बिन ढोलै रै मरवण रोवै, आंसू चालै धारड़ली ।671।

जोवन झोला खातौ दीसै, चोळी टूटी डोरड़ली[2] ।
पळ-पळ करै बिलाप[3] कांमणी, ऐकल सूती सैजड़ली ।672।

लीक[4] वणोड़ी दिखै गांव मैं, बिना भंवर रै गोरड़ली ।
आंसूड़ां नै पीती-पीती, भूली पांणी रोटड़ली ।673।

पीव दिसावर जाय बस्या है, झुर-झुर मरगी कांमणली ।
जोध[5] जवानी रुळै रेत मैं, हांजै पड़गी सोनड़ली ।674।

धोरा माथै मेहौ बरसै, विरहण वरसै आंखड़ली ।
सुवक्यां[6] खा-खा दिखै रोवती, बैठी कांमण झूंपड़ली ।675।

रात विरातां आंख खुल्यां सूं, बट्ट पड़ै नीं आंखड़ली ।
घटी घमड़का देती-देती, दिन ऊगावै गोरड़ली ।676।

---

1. विजली का चमकना 2. डोरी 3. रुदन 4. सूख कर लीक की तरह हो गई है 5. भरपूर 6. हिचकी के साथ रोने की क्रिया ।

रात हाथ छाती पर आयां, कांमण खुलजा आंखड़ली ।
बीती वातां मनड़ै उळझै, रोवै आखी रातड़ली ।677।

आंसू नाखै डुसका[1] खावै, बैठी मूमल टीवड़ली ।
गाभलिया कांटा सूं फाट्या, लीरचां लटकै चूंदड़ली ।678।

मूमल ऊभी बाटां जोवै, भंवर दिखै नीं आंखड़ली ।
मेड़ी चढ-चढ झांका घालै, कर-कर ऊंची अेडड़ली ।679।

मारू गया नीं बावड़्या[2] है, जुग बीत्या दिन रातड़ली ।
किण जलमां री वैर[3] काढियौ, कहता जाता बातड़ली ।680।

रिंधरोही रै बीचां ऊभी, छोडी छिटकी गोरड़ली ।
रूंख बांठका बीचां भटकै, ठोकर खाती मूमलड़ी ।681।

बळता-बळता[4] आंसू पीवै, बिरहण बैठी धरतड़ली ।
काळजियै मैं छाला पड़ग्या, बिन ढोलै रै मरवणली ।682।

गुप्प अंधारी काळी रातां, गिणै तारिया मूमलड़ी ।
लोट-पोट मांचै पर गुड़कै, लै पसवाड़ा[5] ईसड़ली[6] ।683।

सुध-बुध भूली मूमल बैठी, मन सूं करती बातड़ली ।
आंगण बीचां अेकल बैठी, धरियां होटां आंगळड़ी ।684।

प्रेम रोगड़ो घुळग्यौ जीव मैं, ज्यूं घुळ जावै साकरड़ी ।
रात दिनां नैं गिणतां-गिणतां, घिसी हाथ री रेखड़ली ।685।

केस बिखेरयां बण वेरागण, छोडी काजळ टीकड़ली ।
बिन सिणगारां दिखै अडोळी, छैल भंवर री मूमलड़ी ।686।

बिन मारूजी मूमल भटकै, थळी[7] देस रो धरतड़ली ।
दुःखड़ो म्हारै जीवा लाग्यौ, कांमण मूंडै बातड़ली ।687।

---

1. सिसक सिसक कर रोना । 2. वापस आना 3. दुश्मनी 4. गर्म-गर्म
5. करवट 6. खाट की ईस 7. मरुस्थल

सैंजां रो सिणगार न आयो, मांझल बीती रातड़ली ।
फूलवनी रो जोवन भटकै, उडी आंख सूं नींदड़ली ।688।

जिण दिस कांनी बसै भंवरजी, कांमण लेवै पूनड़ली ।
आंख्यां मीच्यां दिखै मुळकती, रमी[1] पीव री यादड़ली ।689।

प्रीतड़ली रा गीत सुण्यां सूं, जीवा लागै आगड़ली ।
बळ-बळ काया राख हुवै है, घुट-घुट मरगी गोरड़ली ।690।

भरैं सियाळै रातां लांबी, इमरत म्हारै चानणली ।
जोवन फाटै है गोरी रो, बिन सायब जी रातड़ली ।691।

उमड्या आंसू दिखै थामती,[2] सूनी दीसै आंखड़ली ।
पीव याद आंसूड़ा बह्यां, किण विद जीसी गोरड़ली ।692।

जीव हिळोळा[3] दिखै खावती, सुणिया मोरां बोलड़ली ।
सावणियै री तीज सायबा, धण जोवै है बाटड़ली ।693।

धणी रुपाळू[4] याद आवतां, दिखै सोच मैं कांमणली ।
रूपल सोनल गूंगी बणगी, छोड्यां पांणी रोटड़ली ।694।

रखडी रो उज्जास[5] सायबो, वसियो दूजी गांवड़ली ।
छैल भंवर बिन चैन पड़ै नीं, घरां गांव मैं गोरड़ली ।695।

मदछकियै[6] रै बिना संदेसै, दिन बीतै नी रातड़ली ।
ठंडी सांसां दिखै छोड़ती, अेकल बैठी कांमणली ।696।

बाळ पणै री प्रीतड़ली मैं, घुळती दीसै मरवणली ।
बिन ढोलै रै जीणो दोरो, जीवा बसगी बातड़ली ।697।

सूजी आंख्यां बोझल पलकां, गूंगी बणगी मूमलड़ी ।
हेताळू[7] बिन हियो नाखयो, कांमण बैठी भूंपड़ली ।698।

---

1. लीन होना 2. रोकना 3. आनन्द की लहर 4. सुन्दर पति
5. उजाला 6. मद से परिपूर्ण पात्र, भरा हुआ 7. पति

सावण वादळ रिम-झिम बरसै, सुगंधा हेला माटड़ली ।
हिवडै खिड़क्यां दै झपटारा, झर-झर रोवै गोरड़ली ।699।

सावण महिणै विरहण देखै, चढ-चढ ऊपर छातड़ली ।
आभौ गळै लागतौ दीसै, बाथां भरतौ धरतड़ली[1] ।700।

भर जोबनियै सावण आयौ, भवर ऊडिकै कांमणली ।
ठंडी वायरो मधरो चालै, जीवां लागै आगड़ली ।701।

भींतां माथै काग कुरूकै, झाला देवै गोरड़ली ।
काग उडाती सुगन मनावै, राजन आसी गांवड़ली ।702।

कागलियै सूं वातां करती, दिखै कांमणी झूंपड़ली ।
आंटीलो भरतार मिला दै, मोत्यां जड़ सूं पांखड़ली ।703।

फूलवनी जी पाळां ऊभा, आंख्यां निरखै डांडड़ली ।
आलीजो घर गांवां आसी, साथै लीयां हारड़ली ।704।

हिचकी मूडै वसी कांमणी, करै मस्करी सायडली ।
कुण न चितारै दूर देस मैं, हंसती पूछै बेनडली ।705।

कानूड़ो लेवण नै आसी, चढियां ऊपर सांढड़ली ।
मुकळावै री आस लगायां, काटै दिन अर रातड़ली ।706।

पहलो सावण पीहर बैठी, जीवा आकड वाकड़ली ।
गांव घरां री रीतड़ली है, कांमण जाणै वातड़ली ।707।

गजवण पात्यां दे-दे हारी, सैण[2] सुणी नी बातड़ली ।
परदेसां मैं मौज करै है, सुवै सोक री गोदड़ली ।708।

केसरिया बालम घर आवौ, सावणियै री तीजड़ली ।
बिना सायवै भटका खावै, विरहण धोरा धरतड़ली ।709।

---

1. बरसात के दिनों मे धरती और आकाश दोनों ही सुन्दर लगते हैं। ये दोनों विरहण को ऐसे लगते हैं, मानो पुरुष और स्त्री दोनों बाथ भर कर मिल रहे हों। 2. पति

झिर-मिर-झिर-मिर मेहौ वरसै, ठंडी चालै पूनड़ली ।
पीव याद जद फोड़ा घालै, डुसका रोवै गोरड़ली ।710।

बांध वाछड़ा मार काछड़ा, चढगी ऊंची खेजड़ली ।
ऊंची चढ पिवजो नै देखै, सूनी दीसै डांडड़ली ।711।

पगल्यां पायल कणां सुणूला, याद करै दिन रातड़ली ।
दूर दिसावर[1] ढोलौ बैठयौ, जीव बसी है गोरड़ली ।712।

धन जायां सू पूठौ आजा, जोबन जायां डोकरड़ी ।
ढोला म्हारी बात सुणौ थै, मत छोड़ौ नीं मरवणली ।713।

कांम काज मै दिनड़ौ काटै, नींद न आवै रातड़ली ।
भूली बिसरी आंख लागजा[2], सुपनौ देखै गोरड़ली ।714।

आळ जजाळ[3] बनजी[4] आवै, मीठी करलै बातड़ली ।
मनड़ै री मनवारां[5] करियां, छेलौ पोढै सैजडली ।715।

सुपनौ टूटयां कांमण देखै, सूनी-सूनी सैंजड़ली ।
मीठा मारू याद आवतां, डुसकां रोवै मूमलड़ी ।716।

दिन मै बैठयां चकवौ-चकवी, दिखै लड़ाता चांचड़ली ।
रातड़ली मै हुवै बिछोवौ, रोवै[6] बैठया खेजड़ली ।717।

चकवी बैनड़ थूं भागण है, कंत सुणै है बातडली ।
चुड़लै रौ सिणगार दिसावर, अेकल रोवूं साथड़ली ।718।

गाय भैंसड़ी धीणै रळगी, ग्यावण दीसै भेडड़ली ।
कुरजड़ली रातूं कुरळावै[7], कांमण समझै बातड़ली ।719।

बाबल बेटौ धन रा लोभी, गाभा लोभण मावड़ली ।
सैंजा लोभण कांमण बिलखै, लाडौ जायां चाकरडी ।720।

---

1. प्रदेश 2. नीद आना 3. स्वप्न 4. पति 5. मनवार 6. चकवो चकवी रात्रि मे कभी भी साथनही रहते हैं। रात भर दोनों इस दु ख के कारण रोते रहते है। 7. दर्द से व्याकुल होकर ध्वनि करना

जूंझार

इण माटी रा पूत निराळा, जलमै कांटा भूरटड़ी ।
ठौड़-ठौड़ पर राज कियौ है, किला वणाया टेकड़ली ।721।

रेकारौ[1] है गाळ बरोबर, घीव पड़्यौ ज्यूं आगड़ली[2] ।
राती आंख्यां उठै पलीता, भोवां रळगी मूंछड़ली ।722।

घोड़लिया असवारां चढिया, ऊंची कांन कनोतड़ली ।
ऊंची डूंगरचां[3] किला जीतै, भालौ लीयां हाथड़ली ।723।

जुद्ध घमसांणा लड़ै सूरमा, दिन देखै नी रातड़ली ।
सूझ बूझ ताकत रै तांणा, वीरां लीनी जीतड़ली ।724।

ऊंट पलाणां कसियां ऊभा, कमर बांधली ढालडली ।
वार चढोड़ा लड़ै सूरमा, दुसमी छोडै कांकड़ली[4] ।725।

डर डाकर सूरां नीं जांणी, वजरां राखी छातड़ली ।
राज काज हीम्मतां रा भाई, हिवड़ै राखी बातड़ली ।726।

सूरां खाण्डौ अळकै पळकै, ज्यूं आभै मैं बीजड़ली ।
ललकारां सूं धरती धूजै, दुसमी भीचै आंखड़ली ।727।

ठौड़-ठौड़ पर घाव दिखै है, सूरा मूडै हांसड़ली ।
रांणी ऊभी लेप लगावै, घस-घस नीमा पत्तड़ली ।728।

पग-पग घोड़ा मरचा पडचा है. ऊंटां टूटी टांगड़ली ।
जूंझारां[5] री खड़ग[6] चालियां बिछगी ल्हासां धरतड़ली ।729।

---

1. तू तड़ाका 2. आग 3. पहाडी 4. राज्य की अन्तिम सीमा
5. परोपकार के लिए युद्ध करके वीरगति पाने वाला, जो बाद में पूजा जाता है। 6. तलवार

कटता माथा दिखै मोकळा, रंण मैदानां खेतड़ली।
किरची-किरची[1]डील[2]विखेरया, खिडी पड़ी है हाडड़ली[3]।730।

रणभैरी कांनां मैं पड़तां, बटड़ा देवै मूंछड़ली।
नाकां सूं फूफारा चालै, राती दीसै आंखड़ली।731।

हरावल[4] मैं सूर ऊभा है, लड़सी सामी छातड़ली।
बंब बोल्यां सू खिडै भोडका[5], खांडै तीखी धारड़ली।732।

रंण बाकड़ला दिखै सामनैं, दुसमी धूजै टांगड़ली।
आयर कायर डरता भाजै, लुकता दीसै झूंपड़ली।733।

बारु ढोल[6] जद सुण्यौ सूरमैं, हाथां थामी बीजड़ली।
भुजा फड़कै मूंछा तणगी, हिण-हिणावै घोड़ड़ली।734।

रण मैदानां बीचां ऊभी, लड़ै सूरमौ बाकड़ली।
तलवारां सू दुसमी सूंतै, सूनी करदै धरतड़ली।735।

दुसमिड़ौ जणै दिखै सामनै, दांतां पीसै घट्टड़ली।
जुद्ध खेतर[7] री खेह उड़यां सू, सूरज ढबजा[8] बादलड़ी।736।

बंब बोलतां टुरया सूरमा, छोड़ पथरना मांचड़ली।
पुरस्यौ थाळ आंगणै छोडयौ, सैजां छोडी गोरड़ली।737।

जिणरौ लूंण खायौ सूरमैं, सूंपी जीवां पूंजड़ली।
मरणौ जीणौ हाथ सांवरै, वीरां मूंडै वातड़ली।738।

वीरां मो'रां दिखै न चिगदौ, तीर खायलै छातड़ली।
मूह मोड़णौ सूर न जांणै, हंसतौ लैलै मोतड़ली।739।

खूना सूं गाभलिया रंगिया, राती दीसै हाथड़ली।
बिन माथै रै लड़ै जुंझारू, रंण मैदानां धरतड़ली।740।

---

1. छोटे-छोटे टुकड़े 2. शरीर 3. हड्डी 4. सबसे आगे 5. सिर
6. युद्ध प्रारम्भ होने से पूर्व बजने वाला ढोल 7. मैदान 8. छिपना

आंण-बांण राखण रै खातिर, थूं समझी नीं मौतड़ली ।
रेतड़ली मैं जलम्यौ बेटौ, राखै लाजा मावड़ली ।741।

जणै किलै रौ फाटक खुलजा, सूरां हाथां बीजड़ली ।
खा-किड़कड़ी पड़ै भाईड़ौ, खि'रै भोडका धरतड़ली ।742।

बाळपणै मैं सुणी बातड़ी, वसगी बीचां हीवड़ली ।
बैरयां सूं जद छिड़ै लड़ाई, करतौ दीसै साचड़ली ।743।

किरकै साथै जीव जीवसी, वीरां बातां बाकड़ली ।
हियौ न्हाखणौ कायर जाणै, कण-कण गूंजै रेतड़ली ।744।

फेरा होतां सुणी बातड़ी, दुसमी आयौ कांकड़ली ।
गोरी धण नै छोड़ जुंझारू, लड़तौ दीसै धाकड़ली ।745।

बडा-बडा जोद्धा नै मारचा, पगां पागड़ै जीतड़ली ।
उमरावां री भीड़ दिखै है, नीची करियां आंखड़ली ।746।

साथिड़ा जद रळ-मिळ चालै, गांव चूकलै रोकड़ली ।
घरां- घरां मैं राज काज है, धूंसौ बाजै गांवड़ली ।747।

अंजळ पांणी जठै लिखोड़ा, वीरां डेरा धरतड़ली ।
आस पड़ोसी सुख सूं रहलै, किला थरपलै टेकड़ली ।748।

मरूधरा री कांकड़ ऊभौ, पातळ देवै सीखड़ली ।
सीस काटै पण झुकै न भाई, बातां राखी हीवड़ली ।749।

धोरा धरती सदा सिखाई, धरम करम री बातड़ली ।
छल-कपट सूरां नीं जाणी, लड़ै लड़ाई साचड़ली ।750।

बिना सिपायां राज रहवै न, राजा जाणी बातड़ली ।
सिंध देस सूं आय सिपाई, वसग्या धोरा धरतड़ली[1] ।751।

---

1. प्रचलित है कि थळी के सामन्तों ने अपने छुट-भाईयों के विद्रोह से आतंकित होकर सिंध के सिंधी सिपाहियों को अपने यहा आमन्त्रित किया। इनकी सहायता से स्थानीय विद्रोहो को कुचला गया। कालान्तर में राजाओं ने भी इस उद्देश्य से अपनी सेना में सम्मलित कर लिया।

काको भतीज रळ-मिळ राखी, बीकाणं री नींवड़ली ।
रातो घाटी आय धमकिया, झण्डो रोप्यो टेकड़ली ।752।

बीकोजी रो धाकां सुणता, दुसमी धूजै टांगड़ली ।
घोड़ै चढियो लड़ै सूरमो, भालो लोयां हाथड़ली ।753।

रायसिंघ री राय बिना सू, मुगल करै नीं बातड़ली ।
बीकाणो भारत पर छायो, बीरा हाथां जीतड़ली ।754।

करमचंद जिसो दिखै न दिखसी, बीकाणं री धरतड़ली ।
सूझ-बूझ रो घणो धणी हो, धरमा राखी बातड़ली ।755।

करणसिंघ री चाली कुवाड़ी, टूटी फूटी नावड़ली ।
औरंगजेब मना में रहगी, बीरां लीनो जीतड़ली ।756।

करणी बेटो भलो जलमियो, धोरलियां री धरतड़ली ।
जय जगलधर बादसचा री, पदवी लीनी धाकड़ली ।757।

पदमसिंघ सो बीर जलमियो, देस जांगळू टीबड़ली ।
भारी खाण्डो जुद्ध मे चालै, बिछती दीसै ल्हासड़ळी ।758।

अनूपसिंघ है कला पारखी, रूद्र बीणा हाथड़ली ।
जुद्ध मैदाना खाण्डो चालै, हंसतो लेलै जीतड़ली ।759।

बीकाणै मै रतनसिंघ जी, राज कियो है धाकड़लो ।
जवारजी नै घरां राख अर, बीरां राखी साखड़ली ।760।

गंगो बाबो धाकड़ तपियो, बीकाणै री धरतड़ली ।
छोटा मोटा याद करै है, हरख भरोड़ी बातड़ली ।761।

करणसिंघ रै हाथ बंदूकां, गोळी चालै साचड़ली ।
विदेसा मैं धावक जमाई, लाजा राखण मावड़ली ।762।

अमरसिंघ अर दुर्गादास

चुगलखोर जद मिळै सामनै, माथौ काटै बीजड़ली।
अमरसिंघ री तेज कटारी, घसी[1] सलावत छातड़ली।763।

अमरसिंघ सरगां मैं पूग्या, नागाणै मैं रातड़ली।
हाडी रांणी केस खोलिया, ले तलवारां हाथड़ली।764।

पळका मारै खिवै बीजळी, हाडी खांडै धारड़ली।
दुसमी माथै पड़ै कड़कती, बिखरै ल्हासां रेतड़ली।765।

दुरगौ घोड़ै चढियौ चालै दिल्ली धूजै धरतड़ली।
वड़ा-वड़ा उमराव हारग्या, बीरां हाथां जीतड़ली।766।

दुरगौ तुरियौ[2] सरपट भाजै, दिन देखै नी रातड़ली।
जोधाणै मैं आय भाइड़ौ, झंडौ रोप्यौ टेकड़ली।767।

घोड़ै-धाड़ै दुरगौ फिरलै, हाथां लीयां बीजड़ली।
औरंगजेब खावै मरोड़ा[3], खाली हाथां मूंठड़ली।768।

घर रखवाळौ[4] दुरगौ म्हारौ, जसवंत कहग्या बातड़ली।
आसकरण रौ पूत जैहड़ौ[5], करग्यौ बातां साचड़ली।769।

दुरगै जिसड़ौ पूत जणी थूं[6], घर-घर गांवां बातड़ली।
अणहोंणी नै होंणी[7] करदै, बेटौ धोरा धरतड़ली।769।

मुगल बादसा मूंडै खायौ, दुरगौ लीनी जीतड़ली।
वीर तणा[8] ही सदा रही है, मरुधरा[9] री लाजडली।770।

---

1. घुसना 2. घोड़ा 3. ऐंठना 4. देखभाल करने वाला 5. जैसा
6. तू 7. न होने जैसी बात कर दिखा देना 8. बल पर 9. रेगिस्तान

खींवौ आभल*

खींवसिंघ मरणौ नीं समझै, फड़क दिखावै हाथड़ली ।
रंण बांकड़ली आभल निरखै, ऊभी ऊंची टीबड़ली ।771।

आभल आंख्यां मिली खींव सूं, सूंपी जीवा पूंजड़ली ।
कांमण ऊभी हेला देवै, मत छोडचा थै साथड़ली ।772।

खींवै हाथ हाथ सू थामचौ, सोगन मूडै वातड़ली ।
मरणौ जीणौ साथ कांमणी, नुई थरपस्यां गांवड़ली ।773।

आभल खींवै वातां सुणतां, झालै जीवां आगड़ली ।
फौजा साथै चढियौ आवै, भालौ थामचां हाथड़ली ।774।

टिड्डी दल ज्यू फौज आवै है, खींवै देखी आंखड़ली ।
जूझारू री भुजा फड़की, हाथां थामी बीजड़ली ।775।

साव अेकलौ खींवौ ऊभौ, झालौ फौजां साथड़ली ।
गाजर मूळी दुसमी काटचा, आखिर लीनी मौतड़ली ।776।

खींवसिंघ कवला रौ पक्कौ, मरतां मूडै हांसड़ली ।
गोदचा मांय सूत्यौ सूरमौ, आभल बैठी आगड़ली ।777।

कंत खींव बिन मिल्यां सूं रहगो, आभल आंसूं आंखड़ली ।
सरगां बीचां ढोलौ मिलसी, जीव बसी है वातड़ली ।778।

आभल खींवौं दोनूं सूत्या, मीठी लेता नींदड़ली ।
प्रीतड़ली रा गीत बस्या है, धोरा धरती गांवड़ली ।779।

---

* खींवसिंह और आभल मे प्रेम होने की बात झाले को पसद नही आयी इस पर वह फौज लेकर खींवसिंह से लड़ने आया । अत मे खींवसिंह मर जाता है आभल उसके साथ सती होती है ।

डूंग जवारौ*

होळी आयां मद छकियौ है, बैठ्यौ ऊपर जाजमड़ी ।
ठुकराणी रौ तानौ सुणतां, स्सैं री फाटी आंखड़ली ।780।

काकौ जेळा पड़्यौ सड़े है, मिनखां राखौ लाजड़ली ।
तलवार नै सूपौ सूरमा, पहरौ चूड़्यां हाथड़ली ।781।

करणौ लोटियौ किसनौ नाइ, चीड़ौ थाम्यौ हाथड़ली ।
डूंगजी जणै घरां आवसी, मीठी लेसां नींदड़ली ।782।

अड़गम-बड़गम गीतां बीचां, सुणी डूगजी बातड़ली ।
भैद जवारौ लियौ फिरंगी, लूट मचाई धाकड़ली ।783।

सेखाणै मैं डूग जवारौ, लाजा राखी धरतड़ली ।
आगरै मैं काट बैड़यां, ली तलवारां हाथड़ली ।784।

काकौ भतिजौ नाहर वणग्या, खाली होगी हाटड़ली ।
बीच बजारां सेर फिरै है, सूनी दीसै डांडड़ली ।785।

डूंग जवारौ रुकै न रुकसी, दुसमी फाटी आंखड़ली ।
गोरा थारी लूट छावणी, आग्या घर री गांवड़ली ।786।

जांगळ देस आय जवारौ, सुख सूं काटी रातड़ली ।
भटका खातौ फिरै फिरंगी, बीकाणै री धरतड़ली ।787।

डूंग जवारौ घणा दतारी, घर घर सुणलै बातड़ली ।
गरीब गुरबौ सुख सूं रहलै, जुलमी लुकजा झूंपड़ली ।788।

---

* शेखावाटी मे डूंगजी जवारजी धाड़वी हुए है जिन्होने अंग्रेजों की नसीराबाद स्थित छावनी को लूट कर तहलका मचा दिया था। इनकी वीरता के गीत आज भी गाये जाते हैं।

कोडमदै*

कोडमदै कोडां सूं चाली, छोड घरां री गांवड़ली ।
सादुलसिंघ डोळै रै साथै, हाथां थाम्या बीजड़ली ।789।

अरडकसिंघ अरड़ातौ आवै, रोकी बीचां डांडड़ली ।
सादुलसिंघ री भुजा फड़की, खांडै पळकी धारडली ।790।

कोडमदै झट पड़दौ खींच्यौ, मिळी आंख सूं आंखड़ली ।
मार अड़क नै पूठौ आवूं, सादुळ कहवै बातड़ली ।791।

बजरां छाती दिखै वीर री, मूंडै बांकी मूंछड़ली ।
घोड़ै अेडी दियां जुंझारू, उडती दीसै खेहड़ली ।792।

हूंकारां सूं धरती धूजै, लड़ै सूरमा धाकड़ली ।
अलटा-पलटा खाता दीसै, ऊपर पड़ियां धरतड़ली ।793।

घोड़ा मरिया पड्या दिखै है, बिखरी दीसै ल्हासड़ली ।
दोनूं जोधा लड़ता दीसै, ऊभा ऊंची टीबड़ली ।794।

खांडै झपटा लाय पलीता, दिखै फाटती चामड़ली ।
खून तुतकिया दिखै छूटता, लाल हुई है धरतड़ली ।795।

ठौड़-ठौड़ पर घाव दिखै है, चाटै सूत्या रेतड़ली ।
सादुल वीर दो-टूक होयौ, अरड़क लीनी मौतड़ली ।796।

अेक हाथ सासुनै भेज्यौ, दूजौ भेज्यौ मावड़ली ।
चिता सजायां कोडम बैठी, सादुळ सूत्या गोदड़ली ।797।

---

* कोडमदे की शादी अरड़कसिंह से तय थी परन्तु सादुलसिंह से प्रेम होने पर शादी सादुल से हुई । अरड़क ने सादुल से लड़ाई लड़ी । सादुल मारा गया । अरड़क भी कुछ समय बाद मारा जाता है । कोडमदे सादुल के साथ सती हो जाती है ।

क्यामखानी*

क्यांमखां रे जलम लेवतां, हरख मनावै रेतडली।
दिली बादसा हेला देवै, पलक बिछायां आंखडली।798।

नागांणै मैं जीत क्यांमखां, पूग्या दिल्ली कांकडली।
दुसमी फौजां दिखै भाजती, खांडै पळक्यां धारडली।799।

ताज, मुहम्मद लड़ै सूरमां, दुसमी धूजै टांगड़ली।
रांणो मोकल डरतो भाज्यौ, छोड मरू री धरतड़ली।800।

फतेपुर मैं राज थरपीयौ, झंडो लीयां हाथड़ली।
फत्तेखां री फतै हुई है, धूसौ बाजै गांवड़ली।801।

फत्तेखां री फौजां साथै, जोधा दीसै धाकड़ली।
बिन माथै रै लड़ै जुझारू, बहुगुण ऊभी टीबड़ली।802।

नांहरखां जी नाहर बणग्या, दिखै तोड़ता दांतड़ली।
पंवारां री हिरड़ै काड दी, लीनी हाथां जीतड़ली।803।

दौलत खां धरमा रा पक्का, रहम बसयौ है हीवड़ली।
जुद्ध मैदानां दिखै धाड़तौ, दुसमी धूजै टांगड़ली।804।

सुन्दर दास जी मुनी तापिया, सेखाणै री धरतड़ली।
दौलत खां जी भरै हाजरी, बाध्यां दोनूं हाथड़ली।805।

अलफ खां जड़ौ बीर जलमियौ, सेखाणै री धरतड़ली।
डरतो राणो अमर भागियौ, सूरां चाल्यां बीजड़ली।806।

---

* उपरोक्त वर्णन कवि जान द्वारा क्याम खां रासो में वर्णित काव्य पर आधारित है।

बांकड़लौ

मरू देस में गवरू ऊभौ, चोड़ी ऊंची छातड़ली ।
रूं भरोड़ौ सीनौ दीसै, भारी मूंछां बांकड़ली ।807।

इसड़ी मूंछां कठै न देखी, जिसड़ी जेसा गांवड़ली ।
गोळ चकरिया गालां माथै, दिखै चेपती हाथड़ली ।808।

पट्टा लकडी खेल रचावै, छुरी कटारी धारड़ली ।
अलटा-पलटा खातौ दीसै, रमतां घालै धाकड़ली ।809।

कावडी रमता दिखै भाइड़ा, चांदड़लै री रातड़ली ।
अेक दुजै री टांग पकड़तौ, पटक दिखावै रेतड़ली ।810।

गांव-गांव सूं गवरू आवै, कुसती होडा होडड़ली ।
जीतोड़ां मैं उछब मोकळौ, धमचक मचजा गांवड़ली ।811।

रीत-पांत रूखालण सारू, गवरू ऊभौ टीबड़ली ।
छोटा-मोटा सुख सूं रहवै, मीठी लेता नींदड़ली ।812।

वातड़ली रा धणा धणी है, हंसता लेलै मौतड़ली ।
मूण्डै बोल्यां फुरै न भाई, धौरा धरती रीतड़ली ।813।

मोटै चाडै लूंण घोळियौ, सौगन लेवै हाथड़ली[1] ।
मरूधरा रा बेटा पक्का, बातां राखै लाजड़ली ।814।

जोग-माय री सौगन खालै, वीरां बातां बांकड़ली ।
जुद्ध मैदानां साचौ करदै, बेटौ मरूधर धरतड़ली ।815।

---

1. एक बड़े बरतन मे नमक घोल कर सब हाथ डालते है और कसम लेते हैं कि अमुक कार्य करते समय पीछे नही हटेंगे ।

भिड़मल इसड़ा दिखै न दिखसी जिसड़ा धोरा धरतड़ली।
जूंझारां नै जलम दियो है, मरूधरां री बेटड़ली।816।

रंण में पूत मरै जामण रो, दिखै न आंसूं आंखड़ली।
काळजियो पत्थरां रो करलो, किरको राखै मावड़ली।817।

जीतण खातर थूं जूझेला, मावड़ देवै सीखड़ली।
धरती मां री लाज बचावण, जीत्यां रहसी वातड़ली।818।

गांव लाजड़ो राखण सारू, मोह कियो नीं गोरड़ली।
हंसती हंसती मौत देखलै, घर-घर गांवां वहवड़ली।819।

हथलेवै मैं मरवण परखो, सेरां बेटां हाथड़ली।
सिंघणी बेटो सेर जणै है, धोरा धरती बींदणली।820।

धोरलिया रै माथै ऊभी हेला देवै मरवणली।
जै सेरणी दूध पीयो है, बैं री थण सूं लाडलड़ी।821।

खग तंणा ही जीव जीवसी, बींद ढूंढलैं चैनड़ली।
वीरां साथै मरणो जीणो, बातां राखी जीवड़ली।822।

बेटो जलम लेवतो सुणलै, आंण-बांण री बातड़ली।
मावड़ सूती गीत सुणावै, दूधां राखी लाजड़ली।823।

ढोलै सूं जद व्यांव हुवै है, अरखै-परखै मरवणली।
सूर कंत विन मरणो चोखो, हिवड़ै वसगी गोरड़ली।824।

व्यांव सूर सूं पक्को होजा, वीर दिसावर चाकरड़ी[1]।
खाण्डै फेरा होता दीसै, गांव घरां री रीतड़ली।825।

वीर पेमजी लड़तो दीसै, बीकाणै री धरतड़ली।
गिरधर जी नागाणै ऊभा, बीजळ लियां हाथड़ली।826।

---

1. मरुधरा के वीर वर्षों तक दूर देश में युद्ध करते थे। जिस स्त्री के साथ मंगनी होती थी उस के साथ वीर की तलवार के साथ शादी कर दी जाती थी।

भेडां

इखरी-बिखरी भेडां चरती, पासै राखै खेतड़ली ।
अेवाड़ियौ गेडो न लीयां, ऊभौ ऊंची टीबड़ली ।827।

अेवड चरतौ दिखै चालतौ, पात बचै नीं घासड़ली ।
पगां मंडोड़ी धरती दीसै, सूनी दीसै रोहिड़ली ।828।

ढळतां सूरज अेवड़ आवै, बैठै ऊपर रेतड़ली ।
भेडां सूती नींदां लेवै, पो'रो देवै कुत्तड़ली ।829।

टीबै माथै ऊभी भेडां, ठंडी खावै पूनड़ली ।
दै हड़बच्यां, चूंगै उरणिया, बोबा चूसै जीभड़ली ।830।

फळसै आगै अेवड़ बैठचौ, दै फटकारौ पूछड़ली ।
ठौड़-ठौड़ पर कादौ-कीचड़, बिखरी दीसै मींगणली ।831।

ऊन कतरियां भेडां मोडी, मो'रां ऊपर चूंखड़ली ।
राती-राती ऊन दिखै है, रंगदै घर मैं साथड़ली ।832।

भेडां मूडौ रुकै न रुकसी, दिन देखै नीं रातड़ली ।
मूडै चरती हेठै हंगती, की नीं छोड़ै घेटड़ली ।833।

धूळ बतूळा उडै गिगन मैं, अेवड़ आवै गांवड़ली ।
भें-भें करती भेडां आवै, बैठै घर री बाखळड़ी ।834।

होणी लरड़ी हियौ न्हाखदै, नीं ऊठै है टांगड़ली ।
कांधै माथै लादयां लावै, पूग उतारै गांवड़ली ।835।

गांदी ताती भेडां दीस्यां, छोडै घर री झूंपड़ली ।
आछी होयां नाचै कूदै, अेवड़ रळजा घेटड़ली ।836।

मैल ऊनड़ी वाटां जमगी, कीचां बैठ्यां घेटड़ली ।
च्यारूं पगड़ा लिया हाथ मे, गोतां धोवै ऊनड़ली ।837।

तीसां मरतौ अेवड़ आवै, पांणी पीवण नाडड़ली ।
होळै-होळै पगल्यां धरतौ, कीचां मांडै छींटड़ली ।838।

रात अंधारी आंधी चालै, अेवड़ भटकै रोहिड़ली ।
खेजड़लै रौ ओटौ लीयां, काटै आखी रातड़ली ।839।

भेडां लारै भेडां चालै, तळ देखै नीं नाडड़ली ।
अेक दुजै रौ लारौ झाल्यौ, पड़तां टूटै टांगड़ली ।840।

चिरमी जैड़ी आंख्यां चमकै, लाय पलीता आगड़ली ।
आपसरी मै माथौ जोड़यां, बैठे ऊपर टीबड़ली ।841।

दिन दोफारां ल्याळी बैठ्यौ, नींदां लेवै घुरकडली ।
आधी रातां करै सिकारां, घांटी दाबै भेडड़ली ।842।

भेडां दुसमी दिखै न्हारियौ, आवै आधी रातड़ली ।
मो'रां माथै लाद घेटडी, लै जा लारै झाड़कड़ी ।843।

हाथ चमकणौ घेटौ बांध्यौ, सूत्यौ ऊंची टीबड़ली ।
ढळती रात नाहर आवतां, झटकौ लागै हाथड़ली ।844।

अेवड़ बीचां पूग न्हारियौ, दांतां घीसै घेटड़ली ।
कुड़कौ कड़कै पगड़ौ फांसै, मूंडै निसरै चीखड़ली ।845।

जे अेवड़ मै रोग फैलजा, मरती दीसै घेटड़ली ।
काळजियौ छूरी सूं छूनै, घालै कांनां छेतड़ली ।846।

बाजरलै रा सोगर पोया, दूधां चूरै रोटड़ली ।
रिंघरोहो रै बीचां बैठ्यौ, चूलै रांधै खीरड़ली ।847।

घाली पाळी देख साथिड़ो, भरदै दूधौ भेडड़ली ।
गवरू ऊभौ दिखै पीवतौ, फेर मूंछ पर हाथड़ली ।848।

ऊंचे टीबै माथै दीसै, दू'तौ ऊभी भेडड़ली।
दूध घालवा दोणौ करियौ, तोड़ आक री पत्तड़ली।849।

अेवड़ बीचां रहतौ-रहतौ, छोडी घर री लाडलड़ी।
कदै-कदासां घर मैं आवै, पूठौ पूगै रोहिड़ली।850।

अेवड़ मैं दिन रात रहवतौ, भूल्यौ घर री रीतड़ली।
भेडां भेळौ रहतौ-रहतौ, सीख्यौ चालां भेडड़ली।851।

कांधै माथै रखी राखली, हाथां लीनी डांगड़ली।
घर कूंचा घर मजलां करतौ, पूगै दूजी गांवड़ली।852।

अलगोजो रोही मैं गूजै, मीठी छोडै तानड़ली।
ऊंचे टीबै बैठ बजावै, गवरू थाम्या हाथड़ली।853।

मींडलिया भैटघां सूं भेंटै, कर-कर ऊंची टांगड़ली।
रेवारी जद दूर निकळजा, अेक देखलै मीतड़ली।854।

अमर बकरा मंडै सामनै, देखै टेडी आंखड़ली।
माथां भेंटघां धाकड़ मारै, खूनां चालै धारड़ली।855।

अगला पगड़ा धरघा किकरियै, चरतौ दीसै छाळकड़ी।
नैना-नैना चरै मिमलिया, कंवळी-कंवळी पानड़ली।856।

सिझ्या पड़चां सूं दूवण बैठे, घर-घर गांवां गोरड़ली।
आधौ-परधौ दूध निकाळै, छोडै मिमलां छाळकड़ी।857।

भेडां बकरघां दूध मोकळौ, बीजां मीठी खीरड़ली।
हाथ कटोरौ मार सबड़का, बैठघौ छांवां खेजड़ली।858।

तपै तावड़ौ लूवां चालै, दुखणी आवै आंखड़ली।
छाळी दूधां फवौ भिजोवै, दिखै चेपती मावड़ली।859।

बकरघां दूधौ घणौ गुणौ है, पीवै डोकर गांवड़ली।
टाबरियां रै सूंडै पचजा, दिखै धापती वेटड़ली।860।

गायां-भैंस्यां

बादळ देख मारै छलांगां, कूदै-नाचै टोगड़ली ।
बीजळ खिवतां देख गावड़ी, दौड़ी पूगै रोहिड़ली ।861।

चौमासै मैं गायां चरलै, जोड़-बीड़ मैं घासड़ली ।
घरां-घरां सूं रिपिया बांध्या, गोरी लेवै रोकड़ली ।862।

डांगर चरता रळ-मिळ जावै, पूगै दूजी गांवड़ली ।
दागां सूं सासरिया सोधै, सींगां बांधै जेवड़ली ।863।

घूघरियां री माळा पहरचां, नाड़ हलावै धैनड़ली ।
बाखळ ऊभा रमतां घालै, दोनूं बाछौ-बाछड़ली ।864।

पगां नैजणी गोडां गूंणियो, दूधो दूवै मावड़ली ।
भरचा कटोरा पीता दीसै, घर-घर टाबर टिंगरड़ली ।865।

उतावळी बैडकड़ी भाजै, गोरी बांधै टांगड़ली ।
गळै टोकरो मोटो बांध्यां, होळै हालै गावड़ली ।866।

सिंधण गायां जणै पावसै, दूधां भरदै चाडड़ली ।
हाथ बालटी दूवण बैठचौ, बोबां चालै धारड़ली ।867।

मधरा-मधरा टोकर बाजै, सिंझ्या पड़ै जद गांवड़ली ।
खुरां ठोकरां खेह उडै है, दौड़ी आवै धैनड़ली ।868।

हेला देतां नेड़ी आवै, नाम लेवतां गावड़ली ।
हाथ चाटती ऊभी दीसै, दै फटकारो पूंछड़ली ।869।

गाय माता दीसै पूजता, घरां-घरां मैं गांवड़ली ।
सुरज-सांड नै दिखै नीरता, पालो नीरो घासड़ली ।870।

ठाणां माथै ऊभी चरलै, पाली सेवण घासड़ली।
चाटलियौ जीभां सूं चाटै, भैंसां ऊभो गांवड़ली।871।

खेतां बड़तां मूंडो मारै, गोधौ गायां बाछड़ली।
राता-माता फिरै जिनावर, माख्यां तिसळै चामड़ली।872।

गाय-भैंस रै दूध मोकळौ, करै बिलोवण मावड़ली।
छाछ-दही सूं चाडा भरिया, घर-घर दीसै गांवड़ली।873।

रोटां-रोटां थर उतरै है, जाडै दूधां भैंसड़ली।
दही बिलोयां घीव मोकळौ, मोळी-मोळी छाछड़ली।874।

दो गोधलिया दिखै सामनै, दड़ुक उछाळै रेतड़ली।
मोटा-ताजा लड़ता दीसै, भेंटचां मारै धाकड़ली।875।

भूगौ दीयां चरती दीसै, जोड़-बीड़ में गावड़ली।
भूली-भटकी खेतां बड़जा, पूगै ठाकर ठाठड़ली।876।

जणै डांगरा ठारी खाजा, इणकै-सिणकै नाकड़ली।
राख लूंणियौ अंग-अंग मसळै, गाभां दपटै गोरड़ली।877।

मांदी-ताती बाखळ बैठी, लाळां न्हाखै टोगड़ली।
खांणौ-पीणौ छोड़ गावड़ी, भींच्यां बैठी दांतड़ली।878।

गाय गांव मै जणै टोगड़ी, घर-घर दीसै हरखड़ली।
झर नाख्यां सूं जापौ पूरौ, धैनड़ चाटै वाछड़ली।879।

नागौरी बळधां रै तांणा, दिखै बीजतौ खेतड़ली।
मोटा-ताजा डीगा लांबा, लाम्बी लटकै पूंछड़ली।880।

जूनी दवा हाथ सूं देवै, मांदी होतां गावड़ली।
गुळ-फिटकड़ी घोळचा बैठचौ, मूडै नावै नाळकड़ी।881।

गांव घरां मैं दिखै मोकळा, गोधा गायां बाछड़ली।
भेडां बकरचां चरती दीसै, ऊभी बीचां रोहिड़ली।882।

ऊंट

चीखल माथै चढघौ महंदरौ, पूगै मेड़ी मूमलड़ी ।
ढळती रातां मूमल सूंपै, तोड काळजौ कोरड़ली ।883।

ऊंट विनां मरुधरा अडोळी, सूनी दीसै टीवड़ली ।
करलै बिन मरवण नीं पूगै, ढोला थारी नरवड़ली ।884।

काबुल सूं जोधाणै पूग्या, जसवंत चढिया सांढड़ली ।
अमरकोट हूमायू पूग्यौ, बेगम साथै टोडड़ली ।885।

हमिदा तुरियौ जीव छोड़दयौ, थळी देस री टीवड़ली ।
ऊंटां तांणां अकबर जलम्यौ, अमर कोट री धरतड़ली ।886।

पांगळ घोरा चढतौ भाजै, लांघ समंदर रेतड़ली ।
जळ कोयळकी केवट टुरियौ, चालै दिन अर रातड़ली ।887।

लूमां-झूमां करै गोरबंद, मेळै टुरगी टोडड़ली ।
मधरी-मधरी दिखै चालती, गैंणां खणकै टांगड़ली ।888।

नखराळी जेसांणै करियौ, पूगै रातां रातड़ली ।
वार चढोड़ौ लड़ै सूरमौ, हाथां लीयां बीजड़ली ।889।

धोरलियां री जहाज कहिजै, भाजै दिन अर रातड़ली ।
भूख-तिरस नै भूल्यां बिसरचां, पूगै दूजी गांवड़ली ।890।

भरै सियाळै ऊंट भूठ मैं, मूंडै न्हाखै भागड़ली ।
माथै सूं मद भरतौ दीसै, गुल्ला काढै जीभड़ली ।891।

मस्त हुयोड़ौ ऊंटौ भाजै, गळियां बीचां गांवड़ली ।
जे टाबरियौ हाथ आयजा, बांह पकड़लै दांतड़ली ।892।

मेळै-ठेळै मदघर[1] ऊभौ, पहरचां गैणी टांगड़ली।
अेळौ-भेळौ हुयौ मानखौ, देखै ऊंटां नाचड़ली।893।

जंगी ऊंट बीकाणै दीसै, खींचै भारी गाडड़ली।
मोटौ-ताजौ डीलां भारी, ऊंची-ऊंची थूंवड़ली[2]।894।

गोमठियौ है धाकड़ करहौ, दिखै फळोदी धरतड़ली।
घणमोलौ गोणीजै भूरौ, रिपिया लेवै रोकड़ली।895।

मेळै माथै ऊंट-दौड़ है, गांव घरां री रीतड़ली।
सरपट भाजै आगै आवै, धोरलियां री टोडड़ली।896।

चिलम धुंवै रा गोट उठै है, नाकां सूंगै सांढड़ली।
नसा-पता लेवै कुळनारू,[3] ऊभी बीचां गांवड़ली।897।

मोकौ देख्यां घात करै है, ऊभौ वीचां रोहिड़ली।
ईडर नीचै दाब ऊंटियौ, मसळ दिखावै मौतड़ली[4]।898।

आगी-पाछी फिरै दौड़ती, जोरां पटकै टांगड़ली।
मेहौ घरां गांव मैं आसी, आगम देखै सांढड़ली।899।

बिन मोरी रै कुरियौ[5] भाजै, टोळै बीचां रोहिड़ली।
हेलौ देतौ दिखै राइकौ, दौड़ी आवै टोडड़ली।900।

रेबारी ऊंटां मैं रहतौ, भूल्यौ घर री बातड़ली।
बीच जंगळ रै गबरू ऊभौ, दूधौ पीवै सांढड़ली।901।

काळ पडधां सूं मरै डांगरा, बिखौ[6] पड़्यौ टोडड़ली।
सूखा चाब्या ठूठीया नै, काळां मारी लातड़ली।902।

सरभ[7] सींव पर चरै मोकळी, हरी-भरी है वेकरड़ी।
चोमासै मैं ऊभौ चरलै, हरिया पत्ता पानड़ली।903।

---

1. ऊंट 2. थूई 3. ऊट साढ चिलम का धुआं सूघ कर नशा कर लेते हैं 4. ऊट जंगल में एकल सवार को देख कर उसे भूमि पर गिराकर अपने पेट से मसलकर मार डालता है 5. ऊंट का वच्चा 6. दुःख 7. ऊंट

ऊंट-जटां नै वटै ढेरियौ, बणती दीसै छाटड़ली ।
सीयाळै मैं बैठचा भाई, कांम करै है धाकड़ली ।1904।

सूकी लकड़चां भारौ बांध्यौ, लादौ लावै सांढड़ली ।
गळी-गळी मैं फिरै बेचतौ, भूख मिटावण आंतड़ली ।1905।

लड़णौ-भिड़णौ ऊंट सवारी, करै मजूरी टोडड़ली ।
पांणी लावै भार उखणलै, हळियौ खीचै खेतड़ली ।1906।

भार पड़चां अरड़ावै ऊंटौ, लारै नाखै मींगणली ।
कामड़ली फटकारचां चालै, होळै धरतौ टांगड़ली ।1907।

रात-बिरातां भटकै ऊटौ, भूल्यौ गांवां डांडड़ली ।
ठोकर खाय पड़ै ओठारू, खायां घालै धरतड़ली ।1908।

बूढापै मैं होंट टेर दै, धोळी दीसै दांतड़ली ।
धीमां-धीमां पगल्यां धरतौ, खींच्या चालै गाडड़ली ।1909।

ओछै होटां चांचौ ऊंटौ, ऊभौ दीसै टोवड़ली ।
गाव घरां मैं बात हुवै है धणी मारसी रोहिड़ली ।1910।

बैत बिना घर कांम हुवै नी, नीं संभळै है खेतड़ली ।
बिना ऊंट रै जीणौ दोरौ, बाळू धोरा धरतड़ली ।1911।

टोडारू बण रमै टाबरिया, रळका देता हाथड़ली ।
ऊंटौ म्हारौ जीव जड़ी है, घर-घर गूंजै बातड़ली ।1912।

ऊंट खोथली भूंडी लागै, तेल चिलकतां चामड़ली ।
ऊंचौ-नीचौ पगड़ौ पड़तां, रगटळ बणजा टोडड़ली ।1913।

टूटचौ ऊंटौ दिखै गांव मैं, धण आंसूड़ा आंखड़ली ।
मरणौ-करणौ हाथ सांवरै, चांदचां पड़गी चामड़ली ।1914।

सिंघ देस सूं आयौ ऊंटौ, रसग्यौ-बसग्यौ रेतड़ली ।
पाबूजी री किरपा होयां, घर-घर दीसै सांढड़ली ।1915।

जीव-जिनावर

सांसर घर में भरचा दिखै है, दूध मोकळौ गांवड़ली ।
बिना जिनावर जीणौ दौरौ, वाळू धोरा धरतड़ली ।1916।

भाख फाटतां कूकड़ वोलै, झाड़ू देवै वींदणली ।
दिनड़ौ निकळचां डोकर बोलै, झट-पट छोडौ मांचड़ली ।1917।

ऊंचौ सिकरी खाय गुळाच्यां, दै झपटारा पांखड़ली ।
भोळौ कबूतर पंजा फांसै, मांस जीमलै चांचड़ली ।1918।

कोचरड़ी रूखां मैं लुकजा, वागल चिपजा खेजड़ली ।
दिन में सूता नींदां लेवै, उधम मचावै रातड़ली ।1919।

कागडोड चिलखां सूं न्यारा, काळी लांवी पांखड़ली ।
तीतर मोडी खेतां वोलै, कवरी-कबरी पांखड़ली ।1920।

गीलै धोरा माथै बिछगी, ममोलियां री चादरड़ी ।
काळी गूंग्यां रळ-मिळ चालै, मांडै लीकां रेतड़ली ।1921।

तितली जिसड़ी रूप लियौ है, सोनल दीसै भींगड़ली ।
गळै कंठलौ पळका मारै, भांत-भांत री पांखड़ली ।1922।

बिछू डंकड़ौ दौरौ मारै, बळतां-झळतां टांगड़ली ।
झाड़ा देता घर-घर दीसै, बैठचा गांवां झूंपड़ली ।1923।

चिड़ी-कागला दिखै मोकळा, बैठचा डाळां खेजड़ली ।
ऊंचौ-ऊंचौ उडै गगन मैं, पंख फैलायां कुरजड़ली ।1924।

सोनचिड़ी सुगनां री रांणी, उड़ती दीसै खेतड़ली ।
काळै-भूरै रंगा रंगीजी, दिखै फुदकती रेतड़ली ।1925।

सिझ्यां पड़चां सूं उडता आवै, पांख पखेरू गांवड़ली ।
ऊंचै डाळां रूंखां बैठचा, रळ-मिळ साथी सायड़ली ।1926।

ढेकूं-ढेकूं करै ढेलड़ी, मोरां नाचै टांगड़ली।
रूंखां हेटै रमता दीसै, दोनूं साथी साथड़ली।927।

सरवर-कूवा दिखै आंतरा, पांणी लावै सांढड़ली।
ऊंट पखालां भरिया लावै, गधिया ढांचा मटकड़ली।928।

जणै सांसरां पीड़ां उठजा, आंसूं वहवै आंखड़ली।
डांम लागियां पीड़ मिटै है, दिखै भाजती टोडड़ली।929।

हरचा आकड़ा वकरयां चरलै, भेडां चरलै पानड़ली।
कैर बांठका पांगळ चरलै, सूनी दीसै रोहिड़ली।930।

पैणौ सांप सांस नै पीवै, जातौ मारै पूंछड़ली।
गांव घरां मैं हाकौ फूटै, चोड़ पिलाश्रौ साथड़ली।931।

आधी रातां जरख फिरै है, कट-कट बाजै टांगड़ली[1]।
डरता-डरता टाबर सोजा, आडी ढकलै मावड़ली।932।

बोड-बिलावौ बोल्यां बोलै, थर-थर धूजै टांगड़ली।
भूत-पलीत समझ भाईड़ौ, भाज पूगजा भूंपड़ली।933।

लांबी पांखां गोड़ावन री, उडै गिगन मैं धाकड़ली।
देस-विदेसां धाक जमाई, मरुधर धोरा धरतड़ली।934।

तिरती आडां दिखै तळावां, ज्यूं पांणी मैं नावड़ली।
ऊंडी भीलां आय पखेरू, करै किळोळां धाकड़ली।934।

मेह भड़ी लाग्यां सूं भाई, रिड़कै ऊभी भैंसड़ली।
नाडी बीचां तिरती-तिरती, भिड़कै भाई पाडड़ली।935।

हिरण वाखोट रमतां घालै, साथै ऊभी मावड़ली।
नील गाय रोही मैं ऊभी, चरती दीसै घासड़ली।936।

---

1. गधे जितनी जरख रात्रि में जंगल से गांव में आती है। इसके पैरों की हड्डियां कट-कट की जोरदार आवाज करती हैं। गांववालों का विश्वास है कि रात्रि में डाकण इसकी सवारी करती है।

धरमा-करमा

दया धरम जीवां मै वसिया, भगवन वसिया हीवड़ली ।
भजन-वांणी मिंदर मैं गूंजे, गांवां गूंजै गीतड़ली ।937।

गोळ थम्वा ऊंचा वण्या है, मिंदर वण्या है टेकड़ली ।
मिनख लुगाई टाबर टोळी, दिखै जोड़ता हाथड़ली ।938।

जात-पांत आडी नीं आवै, मालिक वसिया हीवडली ।
देवि-देवता पीर-पैगम्वर, ध्यावै सगळी गांवड़ली ।939।

साधू आयां उछव छायजा, ऊभा जोड़ै हाथड़ली ।
भगवन म्हारै घरां पधारौ, रसै रै मूंडै वातड़ली ।940।

फिर-मिर फिर-मिर कुत्तडी ब्याई, टाबर मूंडै बोलड़ली ।
घर-घर आटौ दिखै मागता, सीरौ जोमै कुत्तड़ली ।941।

होळी दियाळी ईद माथै, घर-घर दीसै हरखड़ली ।
गळबाथड़ली घाल मिळै है, अेक दुजै री हाथड़ली ।942।

रंग-रोगन सू रंगी मूरती, करी थरपना टीबड़ली ।
मां भवानी जीवड़ै बसगी, मरूधरा री धरतड़ली ।943।

पीपाजी रो वांणी सुणलै, हियै वसा थूं वातड़ली ।
मिनख जमारौ नाटककारी, मालिक देखै आंखड़ली ।944।

दिन निकळयां सूं भजन करौ थै, सुणौ टाबरां वातड़ली ।
वुढा-वडेरा देता दीसै, गांव घरां मै सीखड़ली ।945।

भजन सुण्यां सूं सुख पावैली, जोवा रहसी चैनड़ली ।
साधू-सता सदा सिखाई, धरम करम री वातड़ली ।946।

मसीत-मिंदर दोनूं वण्या है, मरुधरा री टीबड़ली ।
पंडत-मौलवी सुख सूं रहवै, बैठ्या ठंडी छांवड़ली ।1947।

इरला-बिरला आक दिखै है, धोळी फूलां पांखड़ली ।
सिवजी आं मैं वासौ लीनौ, ध्यावै-धोकै साथड़ली[1] ।1948।

जीवण माता लाज राखदी, सेखाणै री धरतड़ली ।
औरंगजेब री फौज हारी, जद खोली मां आंखड़ली ।1949।

दादी सती रौ मिंदर दीसै, सेखाणै री टीबड़ली ।
भाई साथै सती हुई है, रळ-मिळ दोनूं बैनड़ली ।1950।

लालगिरीजी अलख जगाई, वीकाणै री धरतड़ली ।
राजाजी नै परचौ दीनौ, नींदां बीचां रातड़ली ।1951।

देवि-देवतां छाया आयां, केस बिखरै गोरड़ली ।
झाग न्हाखती ऊमै-झूमै, मूण्डै चिपजा दांतड़ली ।1952।

देवि-देवता ठाव-ठिकाणै, करै आरती साथड़ली ।
जद आफतड़ी आन पड़ै है, देव रुखाळै गांवड़ली ।1953।

दान-पुन्न करणै री रीतां, धोरलियां री धरतड़ली ।
कन्यादान बिन जीणौ आधौ, समझै बाबल मावड़ली ।1954।

खाटू स्यामजी आय बिराज्या, बाळू धोरा टीबड़ली ।
अेकादस नैं मेळौ लागै, भगत दिखै है धाकड़ली ।1955।

बिना गुरु रै ज्ञान मिलै नीं, घर-घर गांवां बातड़ली ।
पंडित बैठ्या वेद पढावै, सुणै गांव मैं साथड़ली ।1956।

धरम-करम नै पल्लै राखै, जाया जलम्या रेतड़ली ।
साच बोलणौ हिवड़ै बसग्यौ, कूड़ दिखै नीं आंखड़ली ।1957।

---

1. मरुदेश में ऐसे आक दुर्लभ होते हैं जिन पर चमेली के फूलो की तरह बिल्कुल सफेद फूल आते है। इसमें शिव भगवान का वास होता है। आक की जड़ को खोदने पर सांप निकलता है ऐसी गांव के लोगों की मान्यता है। सभी लोक इसकी पूजा करते है।

रामसा पीर

रामदेवजी जलम लेवतां, मुळकी धोरा धरतड़ली ।
जद भगवन अवतार पधारया, फूलां वरसी पांखड़ली ।1958।

सात दिनां रा हुया रामसा, परचौ दीनौ मावड़ली ।
दूध उफणतौ हेटै उतरचौ, जामण देखी आंखड़ली ।1959।

लीलौ घोड़ौ उडै गगन मैं, अजमल ऊभा छातड़ली ।
दरजी टांगां थर-थर धूजै, ऊभौ जोड़ै हाथड़ली ।1960।

राम-पीरजी दड़ी रमै है, पूगी राखस झूंपड़ली ।
भैरव मारचौ गांव बचायौ, रसैं रै मूंडै हांसड़ली ।1961।

सारथियै री मौत हुयां सूं, घर मैं रोवै मावड़ली ।
हिंदुवां सूरज हेलौ देतां, खोलै साथी आंखड़ली ।1962।

लाखोजी री बाळध आयी, राम पीर री गांवड़ली ।
मिसरी नै बां लूंण कह्यौ तौ, लूंण बणगी साकरड़ली ।1963।

पांच पीरजी आय बिराज्या, रूणैचै री टीबड़ली ।
देख पांवणा भगवन कहवै, जीमौ संतां रोटड़ली ।1964।

सीपिया तौ पड़चा मक्कै मैं, किणविद जीमां रोटड़ली ।
आप-आप री सीप्यां सांभौ, भगवन राखै जाजमड़ी ।1965।

पांच पीर मन ही मन मुळकै, जीवां जाणी बातड़ली ।
सांवरियै रौ परचौ देख्यां, जोड़ी दोनूं हाथड़ली ।1966।

दूध कटोरौ पीता दीसै, भगवन ऊभा रोहिड़लो ।
हरजी भाटी देख रामसा, टेक्यौ माथौ धरतड़ली ।1967।

रणछोड़ री रूप देख कर, जोगी जोड़ी हाथड़ली।
पांणी री अरदास करी तौ, भरती दीसै नाडड़ली।968।

माथौ कटिया पड़्या दलाजी, चोर लूटली रोकड़ली।
भगवन जीवनदान दियौ तौ, सेठां खोली आंखड़ली।969।

बायता सेठ दिसावर जाय, भगवन देतां सीखड़ली।
जद पांणी मैं डूंगौ डूबै, धणी तार दै नावड़ली।970।

विरमदेव अर रांणी रोवै, बाछी मरगी गावड़ली।
गुम-सुम भावज वणी दिखै है, छोडयां पांणी रोटड़ली।971।

झाड़ी माथै दिखै सूकती, गांव गोर मैं चामड़ली।
चुटियै सूं जद छुई रामसा, मिळी गाय सूं बाछड़ली।972।

नेतलदे सूं नीं टूरीजै, लूली दीसै टांगड़ली।
भगवन साथै ब्यांव हुयां सूं, ठम-ठम चालै बींदणली।973।

मिनी मरोड़ी धरी थाळ मैं, करै मसकरी साथड़ली।
धणी रूणेचै हाथ लाग्यां, चढती दीसै छातड़ली।974।

नेतलदे भगवन सूं पूछै, कांई जणसी बहूवड़ली।
पेट मांयनै हेलौ सुणियौ, थाळ बाजसी टीबड़ली।975।

हड़बू देख्या रामदेवजी, ओरण बीचां गांवड़ली।
गळबायड़ली घाल मिळै है, दोनूं भाई रोहिड़ली।976।

रतन कटोरौ चुटियौ सूंप्यौ, भगवन कहता बातड़ली।
भाई म्हारा घरां पधारौ, हूं पूगूंला रातड़ली।977।

हड़बू कहवै सुणौ साथिड़ां, बाबौ बैठ्या रोहिड़ली।
रतन कटोरौ सामै धरियां, रसै री फाटी आंखड़ली।978।

गांव मानखौ पूग समाधी, खोद न्हाख दी माटड़ली।
रूणेचै रा धणी दिखै नीं, धोरलियां री धरतड़ली।979।

सुगना*

रामै पीर रै ब्यांव माथै, सुगना जोवै बाटड़ली ।
सासरियै मैं बैठी रोवै, डुसका खाती बैनड़ली ।980।

जेळ मांयनै रतनो बैठचौ, खूंटै बंधगी सांढड़ली ।
सुगना घर मैं बात सुणी तौ, कळपी आखी रातड़ली ।981।

लीलै रौ असवार देखलै, सुगना बीती बातड़ली ।
घोड़ै चढिया भालौ लीयां, बड़ग्या पूगळ कांकड़ली ।982।

पूगळवासी थर-थर धूजै, फाटी दीसै आंखड़ली ।
भगवन वांनै माफ करै है, सुगना बैठी गाडड़ली ।983।

सामैं बेटी मरचौ पड़चौ है, छातौ कूटै मावड़ली ।
बिन बाळकियै जीणौ दोरौ, सुगना जाणै बातड़ली ।984।

ब्यांव रचाय'र भगवन आया, घरां बधावै मावड़ली ।
सुगना घर मैं बैठी रोवै, पकड़ काळजौ हाथड़ली ।985।

भगवन आंख्यां ओजै-खोजै, कित्त गइ म्हारी बैनड़ली ।
केस बिखेरचां सूनी आंख्यां, बैन करै है बातड़ली ।986।

जामणजाई बात बताओ, सोगन थानै बैनड़ली ।
बाको फाटचौ बोल निसरग्या, कुंवर देखली मौतड़ली ।987।

भगवन हेला दिया कुंवर नैं, फेरै माथै हाथड़ली ।
हसतौ-हसतौ कुंवर उठै है, चढजा मामै गोदड़ली ।988।

---

* रामदेवजी की शादी पर उनकी बहिन सुगना को सुसरालवाले इसलिए नहीं भेज रहे थे कि रामदेवजी नीची जाति के लोगों के साथ उठते-बैठते थे। पूगल के परिहारों पर आक्रमण कर के बहिन को घर लाते हैं। बहिन का पुत्र मरने पर पुनः जिन्दा करते हैं।

पीर-ओलिया

सूफी बाबौ करै इबादत, नागाणै री धरतड़ली ।
च्यारूंमेरां हुसी-खुसी है, कुफ़र चुरावै आंखड़ली ।1001।

भूत-पलीतां आग लागजा, बाबा थारी कांकड़ली ।
डरता-डरता पूठा भाजै, छोड मिनख री हाथड़ली ।1002।

मोठ-बाजरी बण्यौं खीचड़ौ, साथै मोळी छाछड़ली ।
बाबौ कहवै फौज जिमाऔ, गाभौ ढकदौ हांडड़ली ।1003।

बैठ्या फौजी दिखै जीमता, नीं खूटै है खीचड़ली ।
चमतकार पीरां री देख्यां, टेकी फौजां गोडड़ली ।1004।

पोटली मैं कीड़ी आयगी, बाबै देखी आंखड़ली ।
पूठा छोडण टुरग्या बापजी, जीव घरां नै गांवड़ली ।1005।

उरस हुयां सूं हेलौ होवै, सुणलौ भायां बातड़ली ।
मांस खावणौ नीं पोसावै, दरगा बाबै धरतड़ली[1] ।1006।

बाबै जीवां रहम मोकळौ, नीं मारण दै गावड़ली ।
पांणी लीयां खून धोयदै, बांधै सींगां पाटड़ली[2] ।1007।

सूफी बाबौ सजदौ कीनौ, जुग बीत्या दिन रातड़ली ।
माथै ऊपर इण्डा राखदै, आळौ समझ्या चिड़कड़ली ।1008।

बाबै री जद महर[3] हुवै तौ, बरसै रहमत[4] गांवड़ली ।
टाबर-टोळी रमता दीसै, हरखै-कोडै[5] रेतड़ली ।1009।

---

1. नागौर में सूफी बाबे के उर्स के अवसर पर आवाज होती है कि मांस खाकर दरगाह पर न आयें 2. पट्टी 3. दया 4. कृपा 5. खुशी-खुशी

वावै रै हेलै रै माथै, भाजी आवै धेनड़ली।
सूफी वावौ लाड लडावै, वाछी चाटै हाथड़ली ।1010।

वावौ करता दिखै इमामत, खाजाजी री धरतड़ली।
अरसै आजम झुकतौ दीसै, रहमत वरसै धाकड़ली ।1011।

सूफी वावौ वसियत करग्या, दरुद दिरामा रोटड़ली।
आसै-पासै मांस दिखै नीं, हिरदै राख्या वातड़ली ।1012।

वावौ कहवै सुणलौ भाई, सवर वड़ी है सायड़ली।
विना सबूरी जीणौ आधौ, नीं पावेलौ चैनड़ली ।1012।

भूखै पेट अेक ही दुःख है, वाकी सव है हरखड़ली।
पेट भरया सूं अेक इ सुख है, दुखड़ा गिणलै आंगळड़ी ।1013।

वहाऊदीन इम्तान लेवां, भेज्यौ सोनौ चांदड़ली।
ताळ तलावां दियौ फेंकाय, भरी रेत सू गाडड़ली ।1014।

सेख आंगणै गाड़ी पूगी, रसै री देखै आंखड़ली।
चम-चम करतौ सोनौ चमकै, मरूधरा री रेतड़ली ।1014।

करामात पीरां री देख्यां, सेख टेक दी गोडड़ली।
मन ही मन वावै नै ध्यावै, कर-कर ऊंची हाथड़ली ।1015।

अहमदक्षनी जी वैठ्या दिखै, करै इवादत धाकड़ली।
अल्ला-अल्ला करता-करता, मूंदयां वैठ्या आंखड़ली ।1016।

मस्त मोलाजी लो लगाई, जाळां ठंडी छांवड़ली।
इसा पीर विरला ही दिखसी, धोरलियां री धरतड़ली ।1017।

सांझ पड़यां सूं आय विराजै, फळसै आगै डोकरड़ी।
माल मलीदा रसै ठुकराया, जीमै रूखी रोटड़ली ।1018।

वावै रै दरवार पूगकर, करै इवादत साथड़ली।
जिका कांम वरसां नीं होया, होजा हाथौ हाथड़ली ।1019

हिंददेस रा धणी खड़्या है, मरूधरा री कांकड़ली ।
खाजाजी री रहमत बरसै, वाळू धोरा धरतड़ली ।1020।

नरहड़ गांवां दिखै आवती, लियां भूतणी साथड़ली ।
रहम-करम बावै री बरसयां, आछी होजा गोरड़ली ।1021

पीरां आळी जाळ पूगियां, मन्नत पूरी साथड़ली ।
भूत-पलीत दीसै भाजता, गांव सांचोर धरतड़ली ।1022।

रिड़मलसर गांवां री धरती, सोनल रूपल रेतड़ली ।
मिरजावली बाबै री महर, बरसै है दिन रातड़ली ।1023।

सेख हुस्सैन करै इबादत, पीलू रूंखा छांवड़ली ।
सेखाणै री धरती बैठ्या, तसवी फेरै धाकड़ली ।1024।।

मोहम्मद खां देवै हाजरी, ऊभा जोड़ै हाथड़ली ।
जणै सेखजी महर हुई तौ, राज थरपलै धरतड़ली ।1025।

तारकीन बाबै री चिल्लो, दिखै झूंझुनूं टीबड़ली ।
खानू पीर री दरगा दीसै, गिगना ऊंची टेकड़ली ।1026।

तन्ना पीरजी धाकड़ तपिया, जोधाणै री धरतड़ली ।
हिन्दू-मुसलिम दोनूं आवै, दरगा बावै गांवड़ली ।1027।

खाटू गांवां हुवै इबादत, दरवेसां री टीबड़ली ।
सेमाली रै ऊंचै टीलै, दरगा दीसै धाकड़ली ।1028।

नागाणो खाटू अर नरहड़, दरवेसां री धरतड़ली ।
पीर पैगम्बर बसया दिखै है, कण-कण धोरा रेतड़ली ।1029।

हिंदू-मुसलिम हिरदै बसगी, दरवेसां री बातड़ली ।
जणै बापजी गांवां आवै, पगल्यां लागै साथड़ली ।1030।

साचै मन सूं बावो ध्यावै, मन्नत पूरी साथड़ली ।
गाजा बाजा चादर लीयां, पूगै दरगा धरतड़ली ।1031।

गोगाजी

बाछल जामण पूत जलमियौ, ददरेवा[1] में हरखड़ली ।
झेंबर[2] ऊभा हरख मनावै, थाळ बाजियां छातड़ली ।।1032।

पालणियै में सूत्यौ गोगौ, साथै बैठी सांपणली ।
दादोजी जद मारण ढूकै, भगवन रोकै हाथड़ली ।।1033।

गोगौ पाबू चोपड़ रमता, दिखै फेंकता फोडड़ली ।
हारयौ पाबू दिखै सूंपतौ, भाई घर री बेटड़ली ।।1034।

बूडोजी राजी नीं होवै, ब्यांव रचावण धीयड़ली[3] ।
गोगोजी नै रीस आयगी, भेजी पद्मा सांपणली ।।1045।

कोलूमंड बागां में कांमण, तोड़ै फूलां पांखड़ली ।
केलमदे नै संपणी डसलै[4], ध्यावै गोगो साथड़ली ।।1036।

गोगोजी रौ ब्यांव मंडै है, गोरख सुणलै बातड़ली ।
उडण खटोलै उडै गुरूजी, आय बिराजै टीबड़ली ।।1037।

केलमदे गोगोजी व्यावां, हरख[5] छायग्यौ गांवड़ली ।
जोडां[6] भायां बात सुणी तौ, भींचो मूंडै दांतड़ली ।।1038।

अरजन सरजन लड़ता दीसै, हाथा थाम्यां बीजड़ली ।
गोगोजी घोड़ै पर चढिया, लड़ै सूरमा धाकड़ली ।।1039।

भगवन खण्डी दिखै चालतौ, फोजां टेकी गोडड़ली ।
अरजन सरजन दिखै हारता, तुरकां घूजी टांगड़ली[7] ।।1040।

---

1. गोगोजी के रहने का स्थान इसे आजकल चूरू कहते हैं। इसे गोग-मढ़ी भी कहा जाता था। 2. गोगाजी के पिता 3. बेटी 4. काटना 5. खुशी 6. जाति विशेष का नाम 7. अरजन सरजन की सहायतार्थ आने वाले मुसलमान जाति विशेष के लोग।

गोगोजी सरगां सूं आवै, सुरियल मिलबा रातड़ली ।
सिणगारां सूं सजी गवरजा, ऊभी दीसै छातड़ली ।1041।

बिना धणी रै धण सिणगारां, सासू देवै तानड़ली ।
जामण थारो जायो आवै, मिलबा म्हा सूं रातड़ली ।1042।

रात पड़्या गोगोजो आवै, जामण देखै आंखड़ली ।
मावड़ ताना दिया पूत नै, गोगै छोड़ी सैजड़ली ।1043।

पगां सिराणै पण्डत-मोलवी, बैठ्या गोगै मेड़कली[1] ।
भाईचारो दिखै न दिखसी, जिसड़ो गोगै गांवड़ली ।1044।

झण्डै माथै सांप मंड्यो है, लाम्बो चोड़ो धाकड़ली ।
बाळू धरती फिरै पताका, मिंदरां गोगै छातड़ली ।1045।

हिन्दु-मुसलिम दोनूं आवै, गोगामेड़ी धरतड़ली ।
दरगा मिंदरा पूग साथिड़ा, दिखै जोड़ता हाथड़ली ।1046।

डेरूं हाथां धाकड़ बाजै, हियो न्हाखदयो सापणली ।
अेरू काटा लिटता दीसै, बीच मिनख री टांगड़ली ।1048।

जाहर पीर है नाम गोगो, दूर दिसावर बातड़ली ।
छोटा-मोटा स्सै ध्यावै है, हिन्ददेस री धरतड़ली ।1049।

गोगामेड़ो मेळै माथै, दिखै मानखो धाकड़ली ।
पेट हाथ सूं दिखै खिसकता, सूत्या ऊपर रेतड़ली ।1050।

ठौड़-ठौड़ पर दिखै मूरत्यां, भाटा माथै सांपणली ।
गांव-गाव मै थान दिखै है, खेजड़लै री छांवडली ।1051।

सांप डसोड़ा जद आवै है, बाजै भांझर ढोलकड़ी ।
भगत नाचता दिखै गांव मै, जहर उतारै हाथड़ली ।1052।

---

1. हिन्दू मुस्लिम दोनों ही गोगाजी की समाधि पर सिर और पांव की तरफ साथ-साथ बैठते हैं। दोनो धर्मों का यह सगम मरुधरा की धरती पर दिखाई देता है।

पाबूजी*

पाबूजी अवतार लियो जद, हरख छायग्यो धरतड़ली ।
मारवाड़ राठौड़ा भाई, धरमा राखी साखड़ली ।1053।

धांधल अपसरा व्यांव राच्यौ, मनरी करता बातड़ली ।
पाबू जिसड़ौ पूत जलमियौ, मरूधरा री धरतड़ली ।1054।

लक्ष्मण रा अवतार पाबूजी, मारवाड़ में बातड़ली ।
सिंघणी सूती दूधौ पावै, धांधल देखी आंखड़ली ।1055।

धांधल मौत हुयां सूं भाई, बाप दिखै नीं मावड़ली ।
साव अेकलौ पाबू रहग्यौ, धाय संभाळै साथड़ली ।1056।

जींदराव जद घोड़ी मांगै, नटजा देवल सायड़ली ।
घोड़ी म्हारै जीव जड़ी है, घर री राखै लाजड़ली ।1057।

पाबू घोड़ी ऊभा मांगै, देवल सूंपै रासड़ली ।
केसर काळवी हिण-हिणावै, ऊंची कांन कनोतड़ली ।1058।

खीची नै जद ठाह पड़ची तौ, भींची मूंडै दांतड़ली ।
डरतौ-डरतौ चुपकै बैठयौ, मोकौ देखै आंखड़ली ।1059।

डोडवांणा पूग पाबूजी, लीनो हाथां जीतड़ली ।
डोडै नै वां बांध नाखदयो, मिजाज तोड़यो भावजड़ी ।1060।

अन्नै बाधलै मौत देखली, पाबू मारयां बीजड़ली ।
भील भाइड़ा वैर चूकल्यो, जालाणै री धरतड़ली ।1061।

---

* पाबूजी की माता सिंघनीं का रूप बना कर दूध पिला रही थी धांधल ने छुप के देख लिया । इस के पश्चात पाबूजी की मां संसार को छोड़ कर इन्द्रलोक को चली गई क्योंकि अप्सरा ने शादी के समय शर्त रखी थी कि उसके कार्य छुप कर भी कोई न देखे । पाबूजी को लक्ष्मण का

राव देवड़ो दुःख देवै है, पाबू सोनल बैनड़ली ।
चाबक रा फटकारा लाग्यां, लीला जमगी चामड़ली ।1062।

वार चढोड़ो पाबू दीसै, धूळ वातूळा आंधड़ली ।
राव देवड़ो डरतो धूजै, हिलती दीसै टांगड़ली ।1063।

ऊभा पाबू माफ करै है, दिखै छोड़ता कांकड़ली ।
जाता-जाता गैणो सूंप्यौ, पहरी सोनल बैनड़ली ।1064।

दोदै सूमरै सांढ टोळौ, हरमल देखै आंखड़ली ।
पाबू घेर देवै दायजे, सूंपै गोगै हाथड़ली ।1065।

ऊंट जिनावर लायो पाबू, मारवाड़ री धरतलड़ी ।
राइका आज मंगल कांम पर, जमो दिरावै गांवड़ली ।1066।

देवल माथै बिखौ पड़यौ जद, ऊभी जोवै वाटड़ली ।
पाबू नै अरदास करै है, भगवन राखो लाजड़ली ।1067।

देवल चारणी जद पुकारै, घोड़ी तोड़ै जेवड़ली ।
पाबूजी सैनी मैं समझै, हाथां थामी बीजड़ली ।1068।

आसै-पासै बात हुवै है, खीची घेरी गावड़ली ।
सेजां माथै सोढी छोडी, जीणा कसली घोड़ड़ली ।1069।

खीची भाग्यौ गाय छोडतौ, पाबू लीनी जीतड़ली ।
घाव खायां पड़चा पाबूजी, छेकड़ लीनी मौतड़ली ।1070।

ऊंच नीच जातां नीं दीसै, पाबू थारी धरतड़ली ।
नीची जातां ऊंची होगी, भगवन थाम्यां हाथड़ली ।1071।

घर-घर गांवां जमो देवतां, बाजै माटा धाकड़ली ।
भोपा थोरी दिखै बाचता, पड़ पाबूजी गांवड़ली ।1072।

अवतार मानते हैं । देवल चारणी की गायें छुड़ाते समय जींदराव खीची से युद्ध करते हुवे अधिक घाव लगने से वीरगति को प्राप्त हुए। सिंध प्रदेश से सर्वप्रथम ऊंट को पाबूजी लाये तथा अपनी भतीजी के दहेज में दिया था ।

तेजोजी

गूजरी री मोसौ[1] सुणचा सू, समझी तेजल बातड़ली ।
किण गांवां मैं ब्यांव हुयौ है, साच[2] बताऔ मावड़ली ।1073।

रतने बेटी बींदण थांरी, कहती दीसै भावजड़ी ।
बारै बरस सासरै बैठी, पहलां लावौ बैनड़ली[3] ।1074।

जामण जायी राधा लेवण, रुण-झुण जोड़ी गाडडली ।
रात दिनां नैं भूल्यी तेजल, पूग्यौ बैनड़ गांवड़ली ।1075।

घरां आंगणैं धीवड़ ऊभी, मावड़ मूंडै हांसड़ली ।
भाई तणा बैन घर आयो, गांव घरां मैं हरखड़ली ।1076।

बिन सुगना तेजोजी टुरग्या, काठी कसियां घोड़ड़ली ।
गेलै[4] बीचां आग लागगी, तेजल देखी आंखड़ली ।1077।

बळतौ[5] बासग नाग देखियौ, झट-पट खींची पूंछड़ली ।
काळौ[6] मूंडै दिखै बोलतौ, जुलम कियौ थूं धरतड़ली ।1078।

बिना नागण रै जिणौ दोरौ, नीं आवेली नींदड़ली ।
डसणौ म्हारौ धरम करम है, सुणलै तेजल बातड़ली ।1079।

सासरियै सूं पूठौ[7] आतौ, रुक सूं थारी बांबड़ली ।
चांद सूरज री सौगन खाय, तेजल टुरग्यौ गांवड़ली ।1080।

भोडल बागां वासौ लीनौ, बैठचा ठंडी छांवड़ली ।
सांझ पड़चा पनघट पर पूछै, रतनौ जी री झूंपड़ली ।1081।

---

1. ताना 2. सच-सच 3. भाभी ने कहा बारह वर्षों से बहिन ससुराल में बैठी है पहले उसको लाओ फिर स्त्री को लेने जाना 4. रास्ता 5. जलता हुवा 6. काला सांप 7. वापस

सासरे मैं पूग तेजोजी, बैठ्या ऊपर जाजमड़ी ।
साळौ जी रे साथै बैठ्या, हस-हस करता वातड़ली ।।1082।

सासूजी रे मन नीं भाई, तेजल आंणौ गांवड़ली ।
नाक चढायां दिखै घूमती, तीखी करती वातड़ली ।।1083।

रतनै दूजी वहवड़ दीसै, भोडल नीं है मावड़ली ।
थाळ मांय नै बाकळ पुरस्या, तेजल खीची हाथड़ली ।।1084।

हीरां गूजरी हाथ जोड़चा, कहती दीसै बातड़ली ।
रोतां-रोतां मूंडै बोली, मींणा टोरी गावड़ली ।।1085।

मीणा रे माझी नै मारचां, रसै री फाटी आंखड़ली ।
हाथ जोड़ता मींणा ऊभ्या, मांगै घुनियो गावड़ली ।।1086।

हीरां मन नीं वातां भाई, ऊभी देवै तानड़ली ।
तेजोजी काणधा नै लावण, हाथां थामी बीजड़ली ।।1087।

कांणधो केरड़ो लाय तेजल, सूंपै हीरां हाथड़ली ।
ठौड़-ठौड़ पर घाव दिखै है, लथ-पथ खूना चामड़ली ।।1088।

बांबी बासग नाग पूगसां, तेजल मूंडै वोलड़ली[1] ।
कोल करोड़ा पूरा करसां, घरमा रहसी साखड़ली ।।1089।

वासग नाग डसै तेजोजी, मूंडौ खोल्यां जीभड़ली ।
घर-घर थारी पूजा होसी, नाग राज कह बातड़ली ।।1090।

सरगां जाता भगवन कह्‌ग्या, सुण नाईका वातड़ली ।
मां-बाप नै पगां लागणी, फेरी टाबर हाथड़ली ।।1091।

तेजोजी भगता नै देग्या, धरम करम री सीखड़ली ।
घर-घर मैं तेजोजी गावै, खेत बोवतां गांवड़ली ।।1092।

---

1. तेजोजी की मृत्यु के समय उन्होंने सांप को दिये वचन के अनुसार उस की बांबी के पास ले चलने को कहा। सांप को डसने हेतु अपनी जीभ निकाल कर दी ताकि शुद्ध स्थान पर डस सके क्योंकि सारा शरीर घावों से भरा था।

जांभोजी*

स्मसान सेवी डरतौ सुणलै, जाम्भोजी री बातड़ली ।
वाळक मूंडै ज्ञान सुणचां सूं, ऊभौ जोड़ै हाथड़ली ।1093।

जम्भोजी बकरचां नै कहवै, पांणी पीवौ नाडड़ली ।
बकरा सगळा बैठचा दीसै, दूदै देखी आंखड़ली ।1094।

मेड़तियै रो राज मांगतौ, दूदै जोड़ी हाथड़ली ।
लकड़ी री तलवार देवता, भगवन सूपी जीतड़ली ।1095।

काळ पड़चां सूं मरै मानखौ, भगवन राखै लाजड़ली ।
घरां गांव मैं हरख दिखै है, चरलै डांगर घासड़ली ।1096।

हासिम-कासिम कैद पड़चा है, संतां सुणली बातड़ली ।
बादस्या नै भेज्यौ संदेसौ, चेला आग्या गांवड़ली ।1097।

रूंख खेजड़ौ हिवड़ै बसियौ, माथा कटिया धाकड़ली ।
जौधाणै रौ राजा हारचौ, नाम गांव है खेजड़ली ।1098।

पीपासर मैं जलम लेवता, भगवन कहवै बातड़ली ।
रूंख जिनावर धरम वचाणौ, दी बिसनोई सीखड़ली ।1099।

धरम-करम री नीव राखदी, गांव मुकामा धरतड़ली ।
घोर तपस्या रंग दिखावै, घर-घर पूगी बातड़ली ।1101।

खुरासान अर लंका पूग कर, हवन करै है धाकड़ली ।
सम्भराथल जाम्भोजी बैठचां, भजन करै दिन रातड़ली ।1102।

---

*बचपन मे जांभोजी बहुत कम बोलते एवं भोजन करते थे । स्मशान सेवी तांत्रिक को इलाज के लिए बुलाया गया । उसने मां बाप को कहा यह सिद्ध पुरुष है । अतः इन्हें अधिक न छेड़ें ।

जसनाथजी

बंबलू गांव कतरियासर है, सिद्धां धरमा धरतड़ली ।
रामू सारण सीख सुणै है, धरम छतीसां आकड़ली ।।102।

नारेल सूपै लूणकरणजी, घड़सो खोटी रोकड़ली ।
हर-हर खोटा कहता दीसै, भगवन बैठचा टीवड़ली[1] ।।103।

रोजी पूग्यी सती बुलावण, चूड़ी खेड़ा गांवड़ली ।
कतरियासर भगवन न दीसै, रोजी फाटी आंखड़ली ।।104।

देवपाल जसनाथ जगावै, मंत्र पढै है धाकड़ली ।
भगवन प्रकट होता दीसै, सती करै है बातड़ली ।।105।

दो समाध्यां खोदण खातिर, भगवन दीनी सीखड़ली ।
सगळा नै बां कांम सूंपिया, बैठचा ऊपर धरतड़ली ।।106।

पांच महंत अर कुल गूरूजी, बैठै ऊपर जाजमड़ी ।
अगनि जागरण होतौ दीसै, भजना गूंजै गीतड़ली ।1107।

चोथौ पद थै गावौ भाई, कांनां सुणलै बातड़ली ।
जय हौ-जय हौ करता नाचै, खीरा उछळै टांगड़ली ।1108।

मूंडै मै खीरा नै लेवै, होट बळै नीं जीभड़ली ।
खीरा ठंडा होता दीसै, रसें री देखै आंखड़ली ।1109।

भेळा खीरा की नीं बोलै, खिडियां बाळै चामड़ली ।
आसै पासै चुगता-चुगता फेंकै, पूठा आगडली ।।110।

---

1. बीकानेर के राजकुमार लूणकरण ने नारियल एवं घड़सी ने आधे खोटे और आधे खरे सिक्के भेंट किये । उसी समय कह दिया 'हर हर आधे खोटे आधे खरे' जसनाथजी की आशिष से छोटे होते हुए भी लूणकरणजी को बीकानेर का राज्य मिला ।

जैन

आदिनाथ रा भगत दिखै है, जैन धरम री बातड़ली।
मूण्डै आगै पाटी बांधै, होट दिखै नीं दांतड़ली ।।1111।

भरी जवानी साधू बणजा, मोह करै नीं मावड़ली।
पूठा मुड़ घर गांव न देखै, करै तपस्या धाकड़ली ।।1112।

गांवां बीचां साधू दीसै, भगतां मूंडै हांसड़ली।
भगवन म्हारै घरां पधारो, जोड़्यां ऊभा हाथड़ली ।।1113।

धोळा-धख गाभा नै पहरै, चमकै मूंडौ धाकड़ली।
जिणरै घर पर किरपा होजा, वाछां खिलजा साथड़ली ।।1114।

पगां उभाणा दिखै जावता, पूगै दूजी गांवड़ली।
जीव बचावण खातिर भाई, भूल्या पीड़ा कांटड़ली ।।1115।

सूरज रहतां जीमण जीमै, धरम करम री बातड़ली।
छांण-छांण कर पांणी पीवै, जीमै रूखी रोटड़ली ।।1116।

जीव जिनावर धकौ न देवै, मरै न कोड़ी रेतड़ली[1]।
अहिंसा री ओ रूप साथिड़ा, दिखै न दूजी धरतड़ली ।।1117।

भगवन हेलो होतो सुणलै, करै संथारो[2] डोकरड़ी।
सरग मांय नै जाय बिराजै, बात वसी है जीवड़ली ।।1118।

जैन धरम रा साधू जिसड़ा, विरला दिखसी धरतड़ली।
आती जाती सांसां बीचां[3], देखै भगवन आंखड़ली ।।1119।

---

1. छोटे से छोटे जीव को भी बचाकर चलते है। 2. मृत्यु तक न खाते हैं और न पीते हैं। 3. श्वांस प्रेक्षा ध्यान के माध्यम से धीरे-धीरे अभ्यास करते हुए भगवान के दर्शन करते हैं।

मीरां*

कुड़की गावां जलमी मीरां, मेड़तियै री घरतड़ली।
प्रेम-गोपिका आय बिराजी, मरूधरा री टीबड़ली ।।120।

ऊंचै टीलै गाय आयजा, दूधां चालै धारड़ली।
चारभुजा री मूरत निकळी, खोदयां धरती माटड़ली ।।121।

विसरो प्यालो मीरां पी'गी, हस-हस करती बातड़ली ।
भगवन री किरपा रै तांणा, सांप बणै है हारड़ली ।।122।

मीरां बाई भजन गावती, टुरगी घोरा घरतड़ली ।
मेड़तियै मे आय बिराजी, छोड़ सासरो साथड़ली ।।123।

हाथ तंदूरो दिखै बाजतो, मूंडै मधरो गीतड़ली ।
भजन वाणी सूं गांव गूंज्या, हरख छायग्यो टीबड़ली ।।124।

जणै मेड़तो मीरां छोड़ै, दिखै उदासी गांवड़ली।
मिनख लुगाई टाबर टोळी, आंसू चालै धारड़ली ।।125।

पुसकर बीचां टुरी साथणो, सांवरियै री गांवड़ली ।
ठौड़-ठौड़ पर भगत खड़्या है, फूल बिछायां डाडड़ली ।।126।

च्यार-पण्डत अरदास करै है, जोड़यां दोनूं हाथड़ली ।
मीरां बाई घरां पधारो, नीं तो लेस्यां मौतड़ली ।।127।

सांवरियै रै आगै रोवै, मत छोड़ो थे हाथड़ली ।
तेज चांदणो जोरां चमक्यो, सरगां पूगी साथड़ली ।।128।

---

* प्रेम गोपिका के पति ने रासलीला मे जाने से मना करने पर गोपिका ने आत्महत्या करली। श्री कृष्ण ने आशीर्वाद दिया कि अगले जन्म मे मैं तेरे हृदय में निवास करूंगा। मीरा बाई वही प्रेम गोपिका है। जो अंत में श्री कृष्ण में लीन हो जाती है।

करणी माता

हिंगलाज मां री मिंदर दीसै, दूर दिसावर धरतड़ली ।
मुसलिम भाई कहता दीसै, हज नानी री बातड़ली ।।129।

आवड़ माता आय बिराज्या, थळी देस री टेकड़ली ।
तेमड़ टीलै बसी भवानी, धरमा राखी नीवड़ली ।।130।

करणी बिन किरणा नीं निसरै, देस जांगळू धरतड़ली ।
बिन माताजी राज रहवै न, बीकै जाणी बातड़ली ।।131।

जोगमाय री रूप देख कर, तुरकां धूजी टांगड़ली ।
सेखौ भाटी पूगळ लाई, बेटो ब्यावां रातडली[1] ।।132।

जैसाणै री राव जैतसी, ऊभौ जोवै वाटड़ली ।
अदीठ आछौ होतौ दीसै, करणी फेरयां हाथड़ली ।।133।

लड़णौ भिड़णौ छोड़ौ रावळ, हेत बसावौ हीवड़ली ।
जैसाणै बीकाणै कांकड़, रेखा खींची मावड़ली ।।134।

बेटौ डूब्यौ बीच तलाबा, कोलायत री झीलड़ली
करणी माता हेलौ देतां, लाखण खोली आंखड़ली ।।135।

काळू सूजो डाकू मारया, लाई मां घर गावड़ली ।
दसरथ भगता हुई थरपना, देसनोक री धरतड़ली ।।136।

गंगासिंघ जी जुद्ध मैदाना, ध्यावै मावड़ जीवड़ली ।
करणी माता दरसन देतां, लेली हाथां जीतड़ली ।।137।

---

1. पूगल की रानी ने करणी मां से अपने पति को सिंध के नवाब की जेल से छुड़ाने की प्रार्थना की । मां के कहने से वह अपनी पुत्री की शादी बीकोजी से करती है । मां भाटी को स्वतंत्र करा कर कन्यादान हेतु पूगल लाती है इस तरह राठोड़ और भाटियों में संबंध स्थापित होते हैं ।

रहणो-सहणो

सोनै जिसड़ा धोरा चमकै, मखमल जैड़ी रेतड़ली ।
बुढा-वडेरा रळ-मिळ बैठे, भली विचारै बातड़ली ।।1138।

भाई चारो बस्यो मनां मै, थळी देस री धरतड़ली ।
अेक दुजै रै दुःख दरदा मै, भाजै आधी रातड़ली ।।1139।

घर-घर दीसै हेत मोकळो, हिळ-मिळ रहवै साथड़ली ।
जात-पांत नै भूली बिसरी, बैठी गावै गीतड़ली ।।1140।

गांवां रीता घणी सांतरी, चालै अेकल डोरड़ली ।
घरां गांव नै बाध्यां चालै, हस-हस करता बातड़ली ।।1141।

आब हवा रै तणा दिखै है, गबरू ऊभो टीवड़ली ।
बाजरियै रा सौगर जीमै, चूरघां घीव साकरड़ली ।।1142।

खांणो पीणो रहणो सहणो, अेकल सुणलै बोलड़ली ।
काका बाबा कहता दीसै, घर-घर टाबर टिंगरड़ली ।।1143।

वडै-वडेरां मान घणो है. निजरां नीची आंखड़ली ।
मूण्डै बोलै पगां लागणो, गांव घरां री रीतड़ली ।।1144।

साफ-सुथरी धोळी ऊजळी, दूधां न्हायी रेतड़ली ।
पीळो लहरो ओढघां ऊभी, धोरलियां री टीबड़ली ।।1145।

तीजतिवारां मेळां-ठेळां, राग रंग अर गीतड़ली ।
धोरलियां रो जीव जीवसो, हरखै कोडै गांवड़ली ।।1146।

दिन उग्यां सूं करै कांमनै, नीं थाकै है गोरड़ली ।
हंसतो मूंडो चम-चम चमकै घरां-घरां मै साथड़ली ।।1147।

जणै वायरो[1] मधरौ चालै, गैळ छायजा आंखड़ली।
जिवड़ै मैं ठंडकड़ी पावै, सूत्यौ लेवै नींदड़ली ।।128।

छोटै-बड़ै री कांण[2] राखी, सुणलै टावर बातड़ली।
घरां-घरां मैं सीखां देवै, दादो दादी मावड़ली ।।149।

कढी खीच रौ जीमण जीमै, घीव सबड़कै हाथड़ली।
पांणी पीयां करै खंखारा, हाथ फेरतौ मूंछड़ली ।।1150।

मोठ आंगळियां दिया फिरोळा, बाजर चुगलै रावड़ली[3]।
खद-बद खद-बद सिजै खीचड़ी, ताती उछळै छांटड़ली[4] ।।1151।

झांझरकै[5] उठ आटौ पीसै, घर-घर गांवां गोरड़ली।
घटी घमड़का देती फीरै, भरती दीसै बाटड़ली ।।1152।

पोढौ ढाळयां दही बिलौवै, ऊंधी करियां गोडड़ली।
ऊधौ सूंधौ फिरै झेरणौ, चूंटी उतरै धाकडली ।।1153।

बीज मतीरा छड़ती दीसै, मूसळ लीयां भावजड़ी।
गाभै दूधौ छांण कांमणी, चूलै रांधै खीरड़ली ।।1154।

वडा-बडेरा बैठयां दीसै, मूण्डौ ढाकै बींदणली।
हाथ पगरखी थाम्यां चालै, होळै-होळै बहुवड़ली ।।1155।

कुंभ्यां लीयां साग बणावै, चूलै बैठी साथडली।
घीवां रैं छमकारै भूजे, कुड़छी लीयां गोरड़ली ।।1156।

रातडली मैं वैठयां छोरयां, मधरी गावै गीतड़ली।
काकी भावज आन मिल्यां सूं, गीत सुणीजै धाकड़ली ।।1157।

कुचमादी टाबरियां दीस्यां, धुड़क्यां देवै मावड़ली।
सळिया सिचला टाबर बैठै, रड़कै कोनी आंखड़ली ।।1158।

---

1. हवा का झोंका 2. इज्जत 3. रावड़ी–बजरी में बहुत छोटा सफेद पत्थर 4. अनाज में इतनी ताकत होती थी कि दूर तक गर्म छींटे उछलते थे 5. ब्रह्म मूहूर्त।

साथीड़ा रै साथै जावै, न्हावण धोवण नाडड़ली।
गंठा मारचां पांणी उछळै, कूदै झाल्यां नाकड़ली ।1159।

चम-चम करता मूंडा चमकै, राती दीसै चामड़ली।
दूध घीव री नदियां बहवै, बैठचा सबड़ै रावड़ली ।1160।

झूंपड़ली जतना सूं वणगी, लेसौ देवै गोरड़ली।
धोळौ रातौ पोळौ मांरचां, चमकै-दमकै भींतड़ली ।1161।

मरणै परणै ऊक चूक मै, पंच वैठजा जाजमड़ी।
पंचां बीचां पड़चौ फेसलौ, ऊभौ जोड़ै हाथड़ली ।1162।

पंच फेसलौ साचौ निकळै, रूसैं रै मूंडै हांसड़ली।
दूधौ पांणी न्यारौ-न्यारौ, गांवां वात्यां धाकड़ली ।1163।

टाबरियां री टोळचा दीसै, हाका हाकी टीबड़ली।
फाटचा कुड़ता पगां उभांणा, रमता दीसै गांवड़ली ।1164।

गांव ठाकरां री ठकराई, वैठै ऊपर जाजमड़ी।
छोटा-मोटा मांन देवता, ऊभा जोड़ै हाथड़ली ।1165।

राजा रांणी वातां चालै, घूंणी माथै गांवड़ली।
सगळा वैठचा दे हूंकारा, मधरी लागै रातड़ली ।1166।

आठूं पोर लूटै लावड़ा, करै हथायां चौथड़ली।
अेक-दुजै री मूण्डौ देख्यां, झटकै समझै वातड़ली ।1167।

अंडी-वेंडी आवी-खावी, हुवै हथायां धाकड़ली।
अेरौ-गैरी नथ्थू खैरौ, करतौ दीसै वातड़ली ।1168।

होकौ पीतां वीच हथायां, दिखै फोरतौ हाथड़ली।
व्यांव सगाई औसर मौसर, वात्यां चालै चौथड़ली ।1169।

विन हथायां जीव नीं लागै, मिनख लुगायां गांवड़ली।
चौथड़ली पर वात करचां सूं, पच जावै है रोटड़ली ।1170।

अमल ऊगतां उपज हयायां, बैठचा दीसै चौथड़ली ।
ऊंच नीच नै भूल्यौ बिसरचौ, जी री करलै बातड़ली ।।1171।

लकड़यां भारौ माथै धरियौ, पगां बांधली बूहिड़ली[1] ।
तपै तावड़ो लूवां चालै, भाज्यौ[2] आवै गांवड़ली ।।1172।

खींप जटड़ी[3] हाथ ढेरियौ, वटतो दीसै जेवड़ली[4] ।
पालौ नीरौ लावण सारू, वणतौ दीसै छाटड़ली[5] ।।1173।

घरां-घरां सूं ऊन लेवती, चरखौ कातै डोकड़ली ।
भरी दुफारी पूणी लीयां, वेजी वणदै गोरड़ली ।।1174।

लकड़यां भारौ दिखै बांधतो, लियां खीप री जेवड़ली ।
लादो लीयां फिरै सहर मैं, मो'री खीच्यां साढड़ली ।।1175।

तूंवां बीजां साथ बाजरी, आटौ पीसै भावजड़ी ।
हाथ थपैला देती सेकै, जाडी-जाडी रोटड़ली ।।1176।

लकड़ी छांणी धुखता दीसै, बळती दीसै थेपड़ली ।
फूंक भूंगळी जोरां मारै, जगती दीसै आगड़ली ।।1177।

बुढा-बडेरां धाक मारियां, सोपौ पड़जा गांवडली ।
मिनख लुगाई डरता भाजै, वड़ता दीसै झूंपड़ली ।।1178।

कैर लाग्या कैरिया भाई, इण सूं पहलै बाटड़ली ।
गांव घरां मैं साग बणावै, जीमै बैठचा रोटड़ली ।।1179।

काचा कैर अटावण ढूकै, लूंण घोळदचौ हांडडली ।
खाटौ-खारौ बणियौ अचार, जीमै घर मै गोरड़ली ।।1180।

ठौड़-ठौड़ पर पीता दीसै, होकौ बीड़ी चीलमड़ी ।
गोट धुवै रा उठता दीसै, घर-घर गांवां झूंपड़ली ।।1181।

---

1. बूई 2. दौड़ता हुआ 3. बकरी व ऊट के बाल 4. रस्सी 5. बकरी के बालों से बना हुआ एक प्रकार का बड़ा थैला ।

जद टाबरिया भूखा दीसै, जामण[1] लेवै गोदड़ली ।
बुरगाटौ ओढणियै मारचां, हांचल[2] देवै मावड़ली ।।1182।

घाघरियै रा कोछा मारचा, करी इंढूणी लूगड़ली[3] ।
माथै ऊपर धरचौ खारियौ, छाणां चुगलै डोकरड़ी ।।1183।

ईस तिड़कगी मूंज टूटगी, तागा होगी दांवणली[4] ।
मांचा भोळा हुया पड़चा है, घर-घर दीसै गांवड़ली ।।1184।

आटा-बाटा मैल जमी है, केसां पड़गी जूंवड़ली ।
कोलायत री मेट[5] लेवती, माथौ धोवै गोरड़ली ।।1185।

दोईतौ नानांणै आयौ, वैठै नांनी गोदड़ली ।
रातौ-मातौ[6] होतौ दीसै, जीम्यां घीव साकरड़ली ।।1186।

झीटीयै री बात कहवती, नांनी बैठी मांचड़ली ।
टाबर सुणता-सुणता सोज्या, मीठी लेता नींदड़ली ।।1187।

सी कोट्ट सूं सहर बसै है, गिगना छायां बादळड़ी ।
घड़ी-घडी मैं किला बणावै, मिटजा चाल्यां पूनड़ली ।।1188।

खवासजी केसां नैं काटै, बैठचा छीयां खेजड़ली ।
माथै बीचां सड़क बणावै, लांबी राखै चोटड़ली[7] ।।1189।

राखी रै तिवारा माथै, हरख छायजा गांवड़ली ।
भाई हाथां राखी बांधै, हंसती-हंसती बेनडली ।।1190।

रूंख रोइड़ौ ऊभौ दीसै, सोनल फूलां पांखड़ली ।
आता जाता स्से देखै है, ठंडी करता आंखड़ली ।।1191।

तिलां मांयसूं तेल निकाळै, तेलण वेचै हाटड़ली ।
गांव घरां मैं घांणी चालै, खळ खावै है भैंसड़ली ।।1192।

---

1. मा 2. स्तन 3. ओढ़णी 4. दावण 5. मुलतानी माटी 6. मोटा ताजा 7. नाई बाल काटने पश्चात सिर के बीचों-बीच उस्तरे से सड़कनुमा स्थान बना देता है तथा लंबी चोटी रखता है ।

वावळियां सूं गूंद निकळै, करलै भेळौ हांडड़ली।
कुमट गूंद है स्सै सूं मूंगौ, बिकै फळोदी गांवड़ली ।।193।

आक बड़ां रै बीचा जलम्यौ, बेटौ बेगम टीबड़ली।
अकबर मूण्डै नाम निसरियौ, धोरा गूंजी घरतड़ली ।।194।

जालाणी जाळां सूं भरियौ, पग-पग दीसै छावड़ली।
आता जाता नीचै बैठै, ठंडी लेवै पूनड़ली ।।195।

हरी-भरी जाळां रै माथै, पीलू दीसै धाकड़ली।
वुढा-वडेरा टाबर टोळी, तोड़ै भरलै जेवड़ली ।।196।

पाका पीलू पड़्या डागळै, सूक्यां बणजा कोकड़ली[2]।
भूखा धाया सगळा चूसै, जालाणै री घरतड़ली ।।197।

गूंदचां माथै घणा गूंदिया, खायां चिप-चिप दांतड़ली।
ऊंखळी में दीसै कूटतो, चूलै सेकै साथड़ली ।।198।

तिलवाड़ै मै मेळौ लागै, सांसर दीसै धाकड़ली।
मल्लीनाथ जी देता दोसै, मीठौ पांणी नाडड़ली[3] ।।199।

गंगनहर धोरा मे बहवै, मिटती दीसै टीबड़ली।
मरूधरा लहरावै खेती, गंगानगर री घरतड़ली ।।200।

आधी रातां घर सू चाल्यौ, जावै दूजी गांवड़ली।
चोर-चकरां वचै भाईडौ, कमर बांधियां रोकड़ली ।।201।

जांगळ देस जंगळ मै बसियौ, दूर-दूर है गांवड़ली।
ऊंचा धोरा दिखै लांघतौ, चढिया ऊपर सांढड़ली ।।202।

कैर आकड़ा झाड़यां सूकी, झपटा लाग्यां लूवड़ली।
लूंख भरोड़ी डाळयां हालै, हरी भरी है खेजड़ली ।।203।

---

1. सिंध में लोक कहते हैं कि अकबर बादशाह का नाम आक और बड़ के बीच में जन्म लेने के कारण रखा गया था। 2. कोकड़ी-पीलुओं को सुका कर जालोर के लोक कोकड़ो बनाकर दूर दिसावर तक गाल रख कर चूसते हैं। 3. मेले के समय थोड़ी गहराई पर ही मीठा पानी निकल जाता है। मेले पश्चात् इसी स्थान से खारा पानी निकलता है।

घाटो मारयां गवरू दीसै, ढकियां गमछै नाकड़ली ।
ऊंटां चढिया धाड़ा मारै, लूंटै सोनो चांदड़ली ।।204।

घरम निभाता टुरै धाड़वी, देवी ध्यावै जीवड़ली ।
हाथ जोड़ता माथो टेकै, सुगन देखलै आंखड़ली ।।205।

लूंठां नै अे दिखै लूंटता, ऊभा भरलै जेवड़ली ।
निरबळियां नै दिसै बांटता, मूठयां भर-भर रोकड़ली ।।206।

ऊंटां चढिया दौड़ां दौड़ै, सरपट भाजै टोडड़ली ।
अेडी मारयां स्सें सू आगै, पगां पागड़ै जीतड़ली । 1207।

दूर गांव संदेसो देवण, पलाण कसियो सांढड़ली ।
ऊंटै चढियो दै फटकारो, पूगै रातां रातड़ली ।।208।

साथळ थापी देतो ऊभो, कोछा मारया घोतड़ली ।
मछयां बुकिया सामै दीसै, मालो ऊच्यां हाथड़ली ।।209।

अेड़ो करार दिखै न दिखसी, जिसड़ो घोरा धरतड़ली ।
ऊंटै नै ईडर सूं ऊंचै, फोरै मूण्डो हाथड़ली[1] ।।210।

ढोलै सूं जद ब्यांव रचावै, अरखै परखै मरवणली ।
सूर कंत बिना मरणो चोखो, किणी चाटलै गोरड़ली ।।211।

गोळ झूपड़ा हिलै न हिलसी, जोरां चाल्यां आंधड़ली ।
बगलां मांया पून निकळजा, झूंपो[2] ऊभो टीबड़ली 1212।

सिखरां सूरज तपै तावड़ो, पीपळ गहरी छावड़ली ।
दोफारां मैं बैठयां दीसै, चिड़ी गुरसली कागलड़ी ।।213।

रेतड़ली मैं जलम्या भाई, मरसी बीचां रेतड़ली ।
बिना रेत रै दिखै भटकती, जीव आत्मा धरतड़ली ।।214।

---

1. पुराने जमाने के लोगों में इतनी ताकत थी कि ऊट को नीचे से हथेली पर उठाकर उसका मुह दूसरी तरफ फेर देते थे 2. झूंपड़ा—मरू प्रदेश में गोल झूंपड़े अधिक तथा झूंपड़ी की संख्या कम होती है क्योकि अधिक आंधियाँ चलने से झूंपड़िया उडने का खतरा रहता है तथा झूंपड़े आस पास से हवा निकल जाने से सुरक्षित रहते है ।

उमस गांव मैं जद छा जावै, हिलै डूलै नीं पानड़ली ।
मांची लीयां दिखै ढाळतौ, खेजड़लै री छांवड़ली ।।1215।

धोरा धरती जायौ जलम्यौ, कोछा मारचा धोतड़ली ।
चौसंगी नै लियां हाथ मैं, कांम करै है धाकड़ली ।।1216।

आकड़लै रा धुनिया उडता, दिखै गगन मैं धाकड़ली ।
धोळा-धख है फूलां हळका, तिरता दीसै पूनड़ली ।।1217।

मूंडौ नाक सिरख सूं ढकियौ, सवडक लेवै नीदड़ली ।
खरराटा नाकां सूं चालै, ऊनी होजा गूदड़ली ।।1218।

ठंड पड़्यां सू खिलै जवानी, घर-घर गवरू गांवड़ली ।
खांणौ पीणौ अंग-चग लागै, चिकणी चिलकै चामड़ली ।।1219।

ताव-तप जणै चढचौ दिखै है, टूणौ करदै मावड़ली ।
माथै ऊपर मिरच उवारै, धरै कुण्डाळै रोटड़ली ।।1220।

मसांण जगावै है जतीजो, मंतर पढता ल्हासडली ।
वसीकरण सुरमै रै खातर, बैठचा आधी रातडली[1] ।।1221।

भूत भूतिया वाकळ मांगै, सूपौ म्हारै हाथड़ली ।
नीं सूप्यां सू थानै खास्यां, सुणो जतीजी वातड़ली ।।1222।

आप-आप रा बाकळ सांभौ, देतौ दीसै हाथड़ली ।
मंतर छोडौ काजळ पाड़ौ, भूत दिखावै अेडड़ली ।।1223।

जणै भूतणी बड़ै सोखता, सूकै काया चामड़ली ।
सोच फिकर[2] मैं घुळतौ-घुळतौ, आखिर लेवै मौतड़ली ।।1224।

जणै भूतणी बड़ै पोखता, मूण्डै दीसै हांसड़ली ।
दूध घीव री नदियां वहवै, रिपिया दीसै जेवड़ली ।।1225।

---

1. ऐसी मान्यता थी कि वशीकरण सुरमे के बलबूते पर किसी स्त्री-पुरुष को वश में किया जाता था इसे आधी रात के समय श्मशानों में प्राप्त किया जाता था । 2. चिन्ता

औसर मौसर करतां-करतां, घर री विकजा लोटड़ली ।
खेत डांगरां बो'री लै जा, घर मै खाली पोटड़ली ।।1226।

मोथा बीचां हुवै लड़ायां, भूलै गांवां रीतड़ली।
होडा-होडी चढै कचेड़्यां, खाली करलै जेबड़ली ।।1227।

न्यातड़ बीचां नाक राखबा, खरचै सगळी पूंजड़ली ।
मूल ब्याज नै देतां-देतां, घर रहवै नीं टापड़ली ।।1228।

ऊंधा-ऊंधा कांम करै है, भूण्डी घालै रीतड़ली ।
अेक-दुजै री देखा-देखी, करतो दीसै साथड़ली ।।1229।

तू-तू मैं-मैं होतां-होतां, हाथां लेलै डांगड़ली ।
अेक दुजै री माथौ फोड़ै, खूना चालै धारड़ली ।।1230।

भाईड़ा मै हुयां लड़ाई, घर-घर खिचजा भींतड़ली ।
मरणै-परणै अेक आंगणै, भूलै बिसरै बातड़ली[1] ।।1231।

वेदां पोथ्यां लिखी पड़ी है, मरूदेस री गाथड़ली[2] ।
काळीबंगा खोद्यां मिलिया, गैणां गाभा ठोकड़ली ।।1232।

मावड़ भासा अंगै चंगै है, रसी बसी है रेतड़ली ।
बोली म्हान धणो सुहावै, मीठी लागै बातड़ली ।।1233।

नैणसी इतिहास लिख्यों है, पढै मानखौ धाकड़ली ।
जूनी[3] पोथी कहती दीसै, बातां मरूधर धरतड़ली ।।1234।

अबुल फजल अर फैजी भाई, खाण्डी थाम्यौ हाथड़ली ।
कलम लियां इतिहास लिखै है, बैठ्या खेमै रातड़ली ।।1235।

पीथळ पाती पढी साथिड़ै, राणै तणगी मूंछड़ली ।
बिन भायां रै कदै न रहतो, आण-बाण री बातड़ली ।।1236।

---

1. गांव के लोक लड़ाई होने पर एक दूसरे से नही बोलते थे परन्तु शादी तथा मरणे के अवसर पर पुनः एक साथ हो जाते थे । 2. गाथा 3. पुरानी

सुखां भरोड़ी

रात सुहांणी तारा चिलकै, इमरत न्हाखै चानणली ।
धोरलियां रै माथै गूंजै, मधरी-मधरी बांसड़ली ।।1237।

धोरा धरती साफ सूथरी, कीच दिखै नीं आंखड़ली ।
ओबर-गोबर रसै कीं सूक्यौ, सूकी दीसै बाखळड़ी ।।1238।

तावड़ियै मैं माछर मरजा, माखी मरजा लूवड़ली ।
सोवण संख बजावण ढूकै, मीठी लेती नींदड़ली ।।1239।

चानणली रातां मैं रमलै, गवरू ऊंची टीबड़ली ।
ईलौ-गिलौ दीसै सूकतौ, गरम पसीनो खाखड़ली ।।1240।

लू-लपटां सूं मिटै बिमारी, रोग दिखै नीं गांवड़ली ।
हसी-खुसी टाबरियां रमलै, घर-घर जामण गोदड़ली ।।1241।

थोड़ा गाभा सुख सूं रहलै, टाबर डोकर गोरड़ली ।
धोरलियै रै माथै सूत्यौ, ठंडी लेवै पूनड़ली । 1242।

रात पड़चां सूं ठंडी होजा, वाळू धोरा धरतड़ली ।
माचा ढाळचां बैठ्या दीसै, मघरी करता वातड़ली ।।1243।

गूंद गिरी रा लाडू बांधै, सी मैं जीमै मेथड़ली ।
सांसरियां नै तेल देवतां, कांम करै दिन रातड़ली ।।1244।

इसौ सुख तनै मिलै न मिलसी, जिसड़ौ धोरा धरतड़ली ।
तनड़ै-मनड़ै रमै रामजी, सुख सूं लेवै नींदड़ली ।।1245।

जेठ असाढां धोरै माथै, सूत्यौ ऊपर मांचड़ली ।
झांझरकै मैं ठयारी लाग्यां, ओढै साथी धोतड़ली ।।1246।

चढी खुमारी

मनवारां सूं अमल ऊगजा, फिरची घरियां जीभड़ली ।
क'रै खंखारा हूंकारां सूं, धोरा धूजै धरतड़ली ।।1247।

होळी-दियाळी ब्यांव अेडै, प्याला भरदै बोतलड़ी ।
देसी ठर्‌री सगळा पीवै, ठाकर दारू दाखड़ली ।।1248।

सगा-परसंगी भाई बन्धू, जद मिळ बैठै जाजमड़ी ।
दारू रं मनवारां प्याला, पूगं होटां जीभड़ली ।।1249।

जणं डुमण्यां मधरो गावै, दारू प्याला हायड़ली ।
होडा-होडी रिपिया बरसै, खाली होजा जेबड़ली ।।1250।

भरी जवानी दारू पीवै, राता डोरा आंखड़ली ।
मदमस्ती मैं दिखै चालतौ, गवरू ऊंचो टीबड़ली ।।1251।

बंब बोलतां जुद्ध करवानै, हाथां थामै बीजडली ।
दारु पीतां दूणी ताकत, दुसमो धूजै टांगड़ली ।।1252।

मरछकियोडी दिखै जुंभारू, रण मैदाना खेतड़ली ।
च्यारू मेरां लड़तौ-लड़तौ, लेलै साथी जोतड़ली ।।1253।

लाल कसूबौ दारू दीसै, गटकै ऊभौ बोतलडी ।
राता डोळा जगता दीसै, पलकां उठतां आंखड़ली ।।1254।

भाई चारौ दारू पीवां, बैठ्या दीसै भूंपड़ली ।
अेक दुजै सू मिल्यां बिना सूं, नीं बीते है रातड़ली ।।1255।

ब्यांव तिंवारा अमल गळै है, घर-घर धोरा धरतडली ।
हथेळी मैं दीसै लेवतौ, सबड़ै ऊभौ गांवड़ली ।।1256।

रमतां

बुढा वडेरा टाबर टोळी, रमता दीसै टीवड़ली ।
विना रम्यां सूं जीणौ दोरौ, ज्यूं जीणौ बिन रोटड़ली ।।1257।

टाबरिया घरकुलिया रमलै, गवरू कुसतौ गांवड़ली ।
मोटचारां री रम्मत ताम है बूढा चौपड़ जाजमड़ी ।।1258।

आंधल घोट रम्मत मांयनै, पाटी बांधै आंखड़ली ।
आंधौ वणियौ चक्कर खावै, टंटोळ पकड़ै हाथड़ली । 1259।

मीयां घोड़ी रम्मत टाबरां, घरै हाथ झुक भींतड़ली ।
घोड़ी वणणौ पड़सी थाई, जमी नागियां टांगड़ली ।।1260।

ठिया दड़ी री रम्मत मांयनै, दूम्बा रागी डांगड़ली ।
आमी सामी दड़ी फेंकता, पड़ता बोचै हाथड़ली ।।1261।

सात ठीकरचां बीच कुण्डाळै, चिणदी ऊंची टेकड़ली ।
दड़ी मारियां थिड़ै ठीकरचां, चिणनी लेवै जीतड़ली ।।1262।

लीन मूक मूं बाजी जीतै, ऊभी मायी टीवड़ली ।
जणै चूक मूंडै मूं होजा, हुब्बी मावै हाथड़ली ।।1263।

लगू-डिगू मीड़, बंट आवै, रमलै नीचे मेजड़ली ।
चौमड़ली री रमनां बीचां, ऊंची रामै टांगड़ली ।।[illegible]

लूणां घाटी रम्मत मांय नै, [illegible] मेरा डांडड़ली ।
इयरघां-दिवरघा [illegible] [illegible], ऊवै घारै टीवड़ली ।।[illegible]

गिल्ली डंडा रमता दीसै, [illegible] टाबर [illegible] ।
ऊंचै गिगन: गिल्ली [illegible] [illegible] [illegible] ।।[illegible]

दवा-दारू

जिण तलवारां भोड काटिया, खून नागियो घारड़ली ।
आधो माथो दु:खतो मिटजा, देख्यां मूंडो आंखड़ली ।।1267।

पेट आफरो चढतो दीसै, सिणियो सोधै गोरड़ली ।
सिणियै जड़नै मूंडै चाब्यां, वाय सुरे है धाकड़ली । 1268।

टाबरिया नै टटचां लाग्यां, उकळै हांडी रेतड़ली ।
नितरचो ठंडो पांणी लीनो, बैठी पावै मावड़ली ।।1269।

जणै ताव तप दोरी चढजा, गाभां दपटै दादड़ली ।
हिरण मुताळो देतां-देतां, टाबर मूंडै हांसड़ली ।।1270।

निड़ी खेतियो घास मोकळो, दै ऊकाळी साथड़ली ।
म्यादी ताव दिखै उतरतो, हंसतो दीसै बैटड़ली ।।1271।

ओ'री माता जणै धमकजा, घासो देवै मावड़ली ।
ममोलियां री दियां उकाळी, रमलै टाबर टिगरड़ली ।1272।

रातींदो आंख्यां पर फिरजा, हाथ दिखै नी भींतड़ली ।
गवार पत्ता घीव में जीम्यां, देखै भाळै आंखड़ली ।।1273।

जद भाईड़ो ठ्यारी खावै, धांसै आखी रातड़ली ।
हळदी गांठियो पुळपुळ पाव्यां, किरचो चूसै जीभड़ली ।1274।

रोईड़ै रो लकड़ी लीनी, बूर जगावै आगड़ली ।
जणै खाजड़ी अबखी चालै, तेल निकाळै डोकरडी ।1275।

जेठ असाढां हुवै अळायां, मो'रां माथै बैटड़ली ।
मुलतानी माटी नै मसळै, लिया हाथ मैं मावड़ली ।1276।

जोगी

देवनाथ जोधाणै आया, पकड़ी काळी सांपणली ।
समसांणा रौ राज देवतां, राजा राखी वातड़ली ।1286।

कंनफटियौ जोगी घर आयौ, देतौ फेरी गांवड़ली ।
बैठे राजा बैठे परजा, धमचक घालै धाकड़ली ।1287।

ओघड़ जोगी दिखै गांव मैं, हिंगळा नेला मावड़ली ।
कांन फाड़णी बंद कियौ है, जटा दिखै नीं चोटड़ली ।1288।

जणै अघोरी जोगी आवै, डरै मानखौ गांवड़ली ।
समसांणां सूं आयौ जोगी, सीध्यां राखै हाथड़ली 1289।

रावळ जोगी भगवां गाभा, राखै भण्डौ भोळकड़ी ।
घरां-घरां सूं भिकछा मांगै, सींगी वाजै धाकड़ली ।1290।

बिल खोदता दिखै साथिड़ा, ऊभा बीचां रोहिड़ली ।
सांप पूंछ नै पकड़ खीचलै, दाबै मूंडौ डांगड़ली ।1291।

मूंडौ खोल फौड़ै कोथळी, जहर नाखलै बाटकड़ी ।
पूंछ पकड़चा दीसै लावतौ, ढकै मांयनै छाबड़ली ।1292।

सांप सलेटा छाबड़ बैठचा, कांधै लीनी कांमड़ली ।
ठौड़-ठौड़ पर खेल दिखावै, रिपिया लेवै रोकडली ।1293।

काल बेलिया बींण बजावै, देखै टाबर टिगरडली ।
मद-मस्ती लहरावै काळौ, मधरी बाज्यां पूंगड़ली ।1294।

ब्यांव तिंवारां मिनख लुगाई, नाच दिखावै धाकड़ली ।
मधरी-मधरी तानां छोडै, मीठी गावै गीतड़ली ।1295।

कला

रंग-रेजो छापलिया मारै, बिकै चोवटै[1] हाटड़ली ।
रंग लाग्यां सूं चमकै दूणी, लाल'र पीळी चूंदड़ली ।1296।

बीकांणै री सदर जेळ में, बुणै गलीचा जाजमड़ी[2] ।
रेसम धागा रंग-रंगीला, कोरै फूलां पांखड़ली ।1297।

गाभां माथै मंडै मांडणा, बाढाणै री धरतड़ली ।
रंग रंगीला बूंटा मांड्या, छपती दीसै चूंदड़ली ।1298।

चित्रकला है घणी सांतरी, मांड्या घोड़ा सांढड़ली ।
घेर घाघरो देती नाचै, भींतां माथै गोरड़ली ।1399।

ढोला मारू मंड्या खाल पर, चिड़कल मांडी भींतड़ली ।
महल मांय नै मंडी कांमणी, घूंघट कांढ्यां चूंदड़ली ।1300।

मोर चग मनड़ै नै भावै, जैसाणै री धरतड़ली ।
दातां बीचां आन तारियो, मधरो छोडै तानड़ली ।1301।

मांड राग रागां मैं मीठो, कण-कण गूंजै टीबड़ली ।
जणै गोरड़ी गावण ढूकै, सरमा मरजा कोयलड़ी ।1302।

भीणमाल मंडोरा पाली, बणी मूरत्यां टेकड़ली ।
रंणकपुर मिंदरा मैं दीसै, चतर कारिगर हाथड़ली ।1303।

गीत संगीत गरंथ मोकळा, बीकाणै री धरतड़ली ।
बड़ा-बड़ा विद्यवान आय कर, जूनी पढलै पोथड़ली[3] ।1304।

---

1. गांव के मध्य का वह खुला मैदान जिसके चारों ओर दुकानें होती है। 2. बीकानेर की जेल में बने गलीचे इग्लैंड, फ्रांस आदि स्थानों बिकते है। 3. पोथी, किताब।

झींणी जाळयां दिखै झरोखा, ऊभी झांकै गोरड़ली।
फूलां वेलां रंग-रंगिली, मंडी दिखै है धाकड़ली ।।1305।

कारिगरां री घड़ी मूरती, दिखै जीवती गोरड़ली।
आता-जाता ऊभा देखै, पलकां थाम्यां आंखड़ली ।।1306।

नवलगढ़ री ऊंची हवेल्यां, मोटी चवड़ी भीतड़ली।
गिगन छूवती ऊंची दीसै, देख्यां पडजा पागड़ली ।।1307।

टांकी हथोड़ी द टंणकारा, घड़ै सिलावट भाटड़ली।
मकराणै री चोक्यां लीयां, जड़ै कारिगर हाथड़ली ।।1308।

ऊंडी नाडी माटी खोदै, घड़तौ दीसै मटकड़ली।
कूजा घड़िया घड़्या मोकळा, विकता दीसै हाटड़ली ।।1309।

सुथारां री चाल्यौ वसोलौ, बिखरयां छोडा धरतड़ली।
घर दरवाजा ओगळ-भोगळ, बणतो दीसै मांचड़ली ।।1310।

लोह लोहार दिखै हाथ मैं, फूंकै बैठचौ आंगड़ली।
जंगी हथोड़ो जोरां चालै, बणती दीसै गाडड़ली ।।1311।

सोनारां री टक-टक चालै, चमकै सोनौ चांदड़ली।
धीमी-धीमी पड़ै हथोड़ी, वणती दीसै हारड़ली ।।1312।

ठ्ठठारां री ठण-ठण बाजै, घड़ै टोपिया देगचड़ी।
दिन ऊग्या सू बाजण ढूकै, बरतन-भाण्डा हाटड़ली ।।1313।

इसड़ा किला दिखै नीं दिखसी, जिसड़ा जेसा धरतड़ली।
बिन पांणी बिन गारै चुणदै, गिगना ऊंची भीतड़ली ।।1314।

ऊंट खाल पर कांम हुवै है, बीकाणै री धरतड़ली।
सोनल-रूपल झींणी झींणी, कोरी फूलां पांखड़ली ।।1315।

मरूधरा रै घर-घर दीसै, कला कार री हाथड़ली।
दूर दिसावर नाम कमायौ, बेटौ बाळू रेतड़ली ।।1316।

सेठां

सेठां बेटां अकल घणी है, धीरज राखै हीवड़ली ।
दूर देस सूं आय फिरंगी, सीख्यौ सेठा बातड़ली ।।1317।

मरूदेस सूं टुरया सेठजी, पूगै दूजी गांवड़ली ।
बिन दिसावर फळै नीं फूलै, सेठां जाणी बातड़ली ।।1318।

कांम-काज खोजण नै चाल्या, साथै खाली लोटड़ली ।
पूठा मुड़तां हाथ दरब है, हीरा मोती जेबड़ली ।।1319।

सोनौ चांदी दिखै मोकळौ, हे'ली बणगी धाकड़ली ।
जाळी झरोखा पग-पग दिखै, मकराणै री भाटडली ।।1320।

गरीब गुरबौ आस लगायां, जोवै सेठां बाटड़ली ।
दिसावर सूं आया सेठजी, बांटै गमछा धोतड़ली ।।1321।

धरम-करम मै सैं सूं आगै, भगवन बसिया जीवड़ली ।
ठौड़-ठौड़ पर मिंदर बणावै, कुवा खुदावै नाडड़ली ।।1322।

दानी अेड़ा दिखै न दिखसी, जिसड़ा धोरा धरतड़ली ।
धणी लुगाई रळ-मिळ राखै, पोसाळां री नीवड़ली ।।1323।

दांणै री दो दांणौ करलै, समझ दिखै है धाकड़ली ।
व्यापारां मै धाक जमाई, बेटौ मरूधर धरतड़ली ।।1324।

गांव मोह छोडयां नीं छूटै, रग-रग बसगी रेतड़ली ।
दिसावर मै बैठया सेठजी, जीव बसै है टीबड़ली ।।1325।

ऊंच-नीच मनड़ै नीं भावै, काज बस्यौ है जीवड़ली ।
छोटा-मोटा कांम करण मै, नीं राखै है लाजड़ली ।।1326।

जैसाण

जैसाणै मैं दरब मोकळौ, गळियां गादी जाजमड़ी ।
अमलां री मनवारां गूंजै, घरां-घरां री चौथड़ली ।।1327।

जैसाणै रै हाबूर गांव, भाटां छायी छींटड़ली ।
दूध चाडियै जावण देवै, दही जमै है धाकड़ली[1] ।1328।

काजू बिदाम भाटा बणग्या, जेसा गावां कठोड़ी ।
जद भाईड़ौ तोड़ देखलै, गिरी जमी है रेतड़ली ।1329।

गांव डाबलै भाटा बणग्या, रूंख बांठका खेजड़ली ।
सैलांणी इण आय गांव मैं, परखै लैलै हाथड़ली ।1330।

जेसांणै रै बडै बाग मैं[2] आम्बा भरलै छाबड़ली ।
झील किनारै रूंखां माथै मीठी बोलै कोयलड़ी ।1331।

सुहागिया है नाम बावड़ी, ठंडो पांणी धाकड़ली ।
कपूरड़ी बेरै सूं निसरै, जळ नीरोगी धरतड़ली ।1332।

बोरा भर-भर पनड़ी लावै, दिखै बेचता हाटड़ली ।
जेसाणै री धरती वसगी, घर-घर खसबौ पत्तड़ली ।1333।

पत्यां माथै पांणी छिड़कै, सूकै ऊपर छातड़ली ।
पुनम-चांद री किरण पड़्यां सूं, महक भरै है पूनड़ली[3] ।1334।

कूवै बीचां खोद बणावै, वैठण सारू ओरड़ली ।
बारै साथै उतर साथिड़ा, सुख सूं लेवै नीदड़ली ।1335।

1, जैसलमेर जिले मे हाबूर गांव मे ऐसा पत्थर है जिसे दूध मे डालने पर दही जम जाता है। 2. जैसलमेर से 8 कि. मीटर दूर है। 3. सिंध से पनड़ो की पत्तियां लाकर छत पर चांदनी रात मे सुकाते थे जैसलमेर की हवा से पत्तियो मे चौगनी खुशबू हो जाती थी।

सेखाण

रघुनाथगढ रा भाटा भाइ, चम-चम चमकै धाकड़ली ।
पणी[1] वणाती दिखै लुगायां, मधरो गाती गीतड़ली ।।1336।

गणेस चौथ नै लाडू बांटै, गुरू बांधलै पागड़ली ।
गुरवाणी चूंदड़ नै ओढै, गांव घरां री रीतड़ली ।।1337।

झगर-मगर झेरणियां चालै, भाक फाटियां गांवड़ली ।
मधरी-मधरी पून बीच मैं, घणी सुहावै तानड़ली ।।1338।

सेखाणै मैं रम्मत चालता, सांग रचावै धाकड़ली ।
अमरसिंघ, जगदेव कंकाळी, सगळी देखै गांवड़ली ।।1339।

ग्यारूमेरां भीड़ दिखै है, पाटो ढाळ्यो टीवड़ली ।
घरां-घरां सूं आय लुगायां, देखै बैठ्यां छातड़ली ।।1340।

ढुल्लो मीठो गातो दीसै, ऊंची खीचै तानड़ली ।
आठ कोसां रै आंतरै सूं, सुणलै भाई बोलड़ली ।।1341।

झुभा जाट रै नामा माथै, सहर वस्यो है धाकड़ली ।
आज झूंझुनू नाम बोलिजै, मूण्डै साथी साथड़ली ।।1342।

दया धरम रग-रग मैं वसिया, हिवड़ै भगवन बातड़ली ।
जिव जिनावर सुख सूं रहवै, सेखाणै री गांवड़ली ।।1343।

धरम-करम री वात हुवै है, घर-घर धोरा धरतड़ली ।
सतनारायण कथा सुणो थे, कहती दीसै डोकरड़ी ।।1344।

---

1. दीवार पर लिपाई करने के लिए चूने को अत्यन्त बारीक पीस कर उसमें सिप राज नामक चिकने पत्थर की बुरकी छिड़क कर फिर घुटाई करदी जाती है।

सिखां

जूनी बातां सुणै गांवरा, बैठचा ऊपर टीबड़ली ।
रात पड़चां सूं भैळै बैठचा, दै हूंकारा धाकड़ली* ।।1345।

पांच पंचांरी कह्यौ करणौ, मूंडै बोली साचड़ली ।
परिहार तनै बात बताई, टकौ राख दै हाथड़ली ।।1346।

घणै टाबरां दुःखड़ौ पासी, रोतां कटसी रातड़ली ।
थोड़ै टाबरां सुख सूं रहसी, हिवड़ै राखी बातड़ली ।।1347।

पढणौ लिखणौ मत भूली थूं, हिरदै राखी बातड़ली ।
ठगोरां सूं कदै नीं ठगसी, रोकड़ रहसी आंटड़ली ।।1348।

रूंख बाढणौ पाप लागसी, मिट जावेली छांवड़ली ।
काळ-दूकाळ आय घेरसी, नी बरसेली बादळड़ी ।।1349।

जीव मारियां हत्या होसी, सूनी होसी रोहिड़ली ।
विना सांसरां जीणौ आधौ, नीं लाटीजै खेतड़ली ।।1350।

अचरौ-कचरौ पासै राखी, धूवौं दिखै न आंखड़ली ।
साचौ जीणौ इणनै कहवै, सूणती जा थूं साथड़ली ।।1351।

नितरचौ छाण्यौ पांणी पी'ली सीखां देवै मावड़ली ।
कीड़ा सूं छुटकारौ पा'सी, पचजावेली रोटड़ली ।।1352।

नसापता नै नाकै राखी, ऊमर कटसी धाकड़ली ।
मांदो तातौ कदै न दिखसी, मूण्डै रहसी हांसड़ली ।।1353।

---

* गर्मी के मौसम में रात्रि के समय गांव के लोक इकट्ठे होकर ऊंचे टीले पर बैठते हैं। एक व्यक्ति कहानी सुनाता है दूसरे हूंकारा दे के उसका साथ देते है।

लड़णौ भिड़णौ नाकै राखी, सुख सूं लेसी नींदड़ली ।
कोट कचैड़ यां चढतां-चढतां, घिस जावेली मोजड़ली ।।1354।

भूण्डी रीतां तोड़ नाखदी, दूधां भरसी चाडड़ली ।
घर आंगणियै सुख सूं रहसी, हस-हस करसी बातड़ली ।।1355।

घाई घुती करयां सूं भाई, रोग लागसो जीवड़ली[1] ।
सोच फिकर मैं घुळतौ-घुळतौ, आखिर लेसी मौतड़ली ।।1356।

ओछै मिनखां हेत न राखी, साख मिटेली साथड़ली ।
छोटी-छोटी बातां माथै, लड़तौ दीसै गांवड़ली ।।1357।

भाइलां रौ भेद न कहणौ, हसतौ लेली मौतड़ली ।
बिन साथी रै जीणौ दोरौ, सुणलै साथी बातड़ली ।।1358।

घरां लुगाई भेद न देणौ, बात बसाली हीवड़ली ।
घर मालिक बिन घर नीं चालै, गांव घरां री रीतड़ली ।।1359।

जमी बांटियां जीव बटेला, छोटी होसी खेतड़ली ।
बंटतौ-बंटतौ दु:खड़ी पासी, अेकल बैठयौ झूंपड़ली ।।1359।

आपा-धापी कदै न करनी, धरमां राखी बातड़ली ।
मिनख जमारौ मुड़ नीं आवै, मत मीचो थूं आंखड़ली ।।1360।

भाई चारै भगवन मिलसी, कर देखी थूं बातड़ली ।
मिनख मिल्यां सूं मिळै आतमा, मालिक बसिया जीवड़लो ।।1361।

धीरज राख्यां वीर बणेलौ, सगळा सुणसी बातड़ली ।
रीस करयां सूं बळतां झळतां, काळी पड़सी चामड़ली ।।1362।

मिनख जमारौ दियौ सांवरै, भजन करी दिन रातड़ली ।
सरगां बीचां जाय बसेलौ, सुण साथीड़ा बातड़ली ।।1363।

---

1. एक दूसरे की बुराई करने से मनुष्य भूत खड़ा कर लेता हैं। भूत रूपी रोग से पीड़ित होकर चिन्ता में घुल-घुल के मृत्यु को प्राप्त होता हैं।

मरुधरा

चांदड़ले री रात चांदणी, तारां छायी रातड़ली ।
धोरलियां रा गांव भलेरा, रळ-मिळ बैठे साथड़ली ।1364।

रग-रग मे माटी कण बसियो, हिवड़ै माता धरतड़ली ।
बीकाणै गांवां मैं बसगी, मरूधरा री साथड़ली ।1365।

सूर तणा ही सदा रही है, इण धरती री लाजड़ली ।
जोधाणै री धरती माथै, हेला दैवै साथड़ली ।1366।

मरूधरा रो माथौ ऊंचौ दिल्ली पूगी बातड़ली ।
नागाणौ पूठौ नी देख्यो, रांणी हाडी साथड़ली ।1367।

चोगाना रै बीचा ऊभौ, किलौ दिखै है टेकड़ली ।
जालाणै रै गेलै बीचां, नाम पूछलै साथड़ली ।1368।

बाळू रेतां रगां-रंगीजी, रूपल गोरी सोनड़ली ।
जैसाणै री गळी-गळी मैं, मूमल बैठी साथड़ली ।1369।

घरां-घरां मै हरखकोड है, मूडै दीसै हांसड़ली ।
बाढाणै रै गांव बसी है, गीत गावती साथड़ली ।1370।

धोरां धरती मूंडै बोलै, मोती निपजै धाकड़ली ।
सैखाणै रै खेतां बीचां, हंसती नाचै साथड़ली ।1371।

मरूधरा सूरां री धरती, जलमै जोधा मावड़ली ।
धरती मा री लाज राखदी, कहती दीसै साथड़ली ।1372।

मरूधरा री लाज राखबा, ऊभी टीलै बैटड़ली ।
करणी माता साथ पदमनी, मरवण मूमल साथड़ली ।1373।

परिशिष्ट

झिणलै

चिलकणिया टाबरिया दीसै, हाथां लीयां पाटड़ली ।
गांवां री पोसाळां सिखलै, क-कौ कोटकौ बारखड़ी[1] ।।374।।

पोसाळां में ढबल मचावां, गुरु खींचलै चोटड़ली ।
चिबला-चिबला टाबर बैठै, पड़ती दीस्या ठूमकड़ी ।।375।।

पढणो दोरो लिखणो दोरो, कठां जूनी पोपड़ली ।
उणणां-गुणणां हिवड़ै उपजै, ढेड़ा दावा पूटड़ली ।।376।।

गुरु देव री मुहारणी में, ऊंचा-पूंचा दूचड़ली ।
पढणो-लिखणो कोठै करियो, हियै उतारी बातड़ली ।।377।।

बिना पटोड़ा दिखै गांव में, अकल बसी है होवड़ली ।
हाथ आंगळयां गिणतां-गिणतां, करलै लेखा जोखड़ली ।।378।।

अ-मूं अड़वो दीसै खेत में, डरती भाजै लूंकड़ली ।
आ-मूं आळो बण्यो भींत पर, कूंच्या राखै मावड़ली ।।379।।

इ-मूं इढांणी माथै राखी, पांणी लावै गोरड़ली ।
ई-मूं ईसां मांचा टूटी, तागा होगी मूजड़ली ।।380।।

उ-मूं उखळी कूटै बाजरी, मूसळ लीयां भावजड़ी ।
ऊ-मूं ऊंटो बैठ्यो दीसै, ठंडी छीयां रोजड़ली ।।381।।

ए-मूं एरो दिखै रगड़तो, माटै माथै गोरड़ली ।
ऐ-मूं ऐवड़ चरतो चालै, साथै जोड़्या घेरड़ली ।।[illegible]।।

---

1. गांवों की पाठशालाओं में पुराने समय में क-को कोटको [illegible] के साथ स्थानीय रोजमर्रा काम में आने वाली वस्तुओं [illegible] ओर बर पढ़ाया जाता था। इसी संदर्भ में [illegible]

[illegible]

ओ-गूं ओरण घास मोकळो, चरतो दीसै टोगड़ली ।
ओ-रू ओसया ढलतो दिसै, थामी हायां डांगड़ली ।।1383।

अं-अः बोल्यां सूं भाई, भिण्यो मानसो गांवड़ली ।
बिना भिण्यां गूं जीणो आधो, हिवड़ै रायो बातड़ली ।।1384।

क-को कोटको कड़-कड़ बोलै, पापड़ तोड़्यां हाथड़ली ।
ख-खो खाजड़ो माथै चालै, जूवां काढै मावड़ली ।।1385।

ग-गो गोरो गावड़ी भाई, मार सबड़का खोरड़ली ।
घ-घो घघूडो उडै गिगन मैं, भेळी चिलरां कागड़ली ।।1386।

च-चो चीपियो रोटी सेकै, जीमै घीव साकरड़ली ।
छ-छो छीको ऊंचो टांगियो, मांय राबड़ी रोटड़ली ।।1387।

ज-जो जळेब्या बैठो जीमै, मेळां-ठेळां गोरड़ली ।
झ-झो झेरणो दही बिलोवै, बणती दीसै छाछड़ली ।।1388।

ट-टो टण-मण टोकरो भाई, गण-मण चालै गाडड़ली ।
ठ-ठो ठंठारो घड़तो दीसै, ताम्बा-पीतळ देगचड़ी ।।1389।

ड-डो डम्मरू हाथां बाजै, मूडै बाजै बांसड़ली ।
ढ-ढो ढकणी दीसै ढाकतो, चूलै सीज्यां खीचड़ली ।।1390।

त-तो ताकड़ो बैठ्यो तोलै, घर-घर गांवां हाटड़ली ।
थ-थो थाळो पुरस्यां बैठो, जीमै घर मैं गोरड़ली ।।1391।

द-दो दीवटो जगतो दीसै, हुयो चांदणो झूंपड़ली ।
ध-धो धणी रै लारै चालै, घूंघट काढ्यां बहुवड़ली ।।1392।

न-नो नाकनै झाल्यां ऊभो, घर-घर सासू गांवड़ली ।
प-पो पपैयो मीठो बोलै, बादळ छायां रातड़ली ।।1393।

एव सुणते-सुणाते वर्णमाला तथा दस तक के अंको का ज्ञान हो जायेगा। यह कार्य, व्यक्ति घर का कार्य करते, खेत बोते, शादी त्योहार एवं उत्सव के समय गाते-गाते कर सकता है। स्थानीय धुनों में उक्त छदों

मस्करी

साहब बण्यो फिरै टाबरियो, मूंडै डेडी मम्मड़ली ।
ऊंटियो जद मारी लातड़ी, नाम आयग्यो मावड़ली ।।1405।

जे चंचळाई घणी दिखावै, सग्यां बांधदै मांचड़ली ।
गोधै पूंछ बांधी जेवड़ी, मारै ऊम्यां डांगड़ली ।।1406।

गोधो ठडतो दियै भाजतो, अटकै दूजी माचड़ली ।
हाथ अकुंण्यां लूसां उतरी, फूटी दोनूं गोडड़ली ।।1497।

जणै जेवडी टूटै मांचै, सोरी लीनीं सांसड़ली ।
ऊंधो पंडियो आंख्यां फाड़ै, आ हुई कांइ बातड़ली ।।1408।

चौथड़ली पर बैठ्यो भाई, गप्पां मारै धाकड़ली ।
रात खेत मैं भूत देखियो, मार भगायो डांगड़ली ।।1409।

दूजे दिन साथीड़ा नाचै, भूत बणोड़ा खेतड़ली ।
भूत देखियां धोती भरदी, जोरा हालै टांगड़ली ।।1410।

सैतर-बैतर हुयो डोकरो, टाबर खींचै धोतड़ली ।
मोको मिलियां लांग मारतो, मूंछा फेरै हाथड़ली ।।1411।

धोळा डोभा काळै रंगरो, गध-लेडै सी नाकड़सी ।
टिरतो राफा धोळै दांतां, डाकी आयो साथड़ली ।।1412।

जद खवासजी गांवां आवै, टाबर लुकजा झूंपड़ली ।
इरला-बिरला बाहर रहजा, चढ बैठै है खेजड़ली ।।1413।

बिना धार रै फिरै उस्तरो, माथो दाव्यो गोडडली ।
टोपसी नै दोसै रगड़तो, खोर उडावण टाटड़ली ।।1414।

सरदार अली परिहार

जनम : 2 सितम्बर, 1939; बीकानेर

शिक्षा : बी.ए. (कला, संगीत) और एम.ए. (इतिहास, शारीरिक शिक्षा)

— केवलिया धाम लोनावला, पूना; योग साधना आश्रम, जयपुर और जैन विश्वविद्यालय, लाडनू से योग शिक्षा प्रशिक्षण

— अरावली संस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर से पर्वतारोहण प्रशिक्षण

प्रकाशन : खेल-खेल में शिक्षण (हिन्दी) और पढ़वा चाली (राजस्थानी)

— हिन्दी और राजस्थानी के छोटे-बड़े अखबारों और पत्रिकाओं में निरन्तर प्रकाशित

विशेष : राष्ट्रीय स्तरीय खिलाड़ी और अन्तराष्ट्रीय प्रशिक्षक (फुटबाल)

— शिक्षा मंत्री और शिक्षा निदेशकों द्वारा विशेष कार्यों हेतु प्रशंसा पत्र

फिलहाल : शिक्षा विभाग में शारीरिक शिक्षा अधिकारी

सम्पर्क सूत्र : बीदासर बारी के बाहर, बीकानेर (राज.)